**गरीबा**

**की**

**तिजोरी**

बंशीधर नाहरवाल





प्रकाशक:

BFC Publications Private Limited

CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar,

Lucknow – 226010

ISBN:

कॉपीराइट (©) – **बंशीधर नाहरवाल** (2021)

सभी अधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है, न पुनरूत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सहित किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में, किसी भी रूप में प्रेषित या पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनाधिकृत कार्य करता है, क्षति के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्‌भाव में प्रस्तुत की गई है। सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई है। कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।



**भूमिका**

बीसवीं शताब्दी में पूरे विश्व के इतिहास में महान परिवर्तन हुए हैं। इसके पूर्वार्द्ध में हुए दो विश्व युद्धों की विभत्सता को पूरी दुनिया ने देखा तथा अधिकांश देश जो ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन थे, वे उस उपनिवेशवाद से मुक्त हुए और वहां पर स्वतंत्र शासन ब्यवस्थाएं आरम्भ हुई। 1885 में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई और प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणालियां स्वीकार की जाने लगी। व्दित्तीय विश्वयुद्ध के बाद देशों में अधिक से अधिक स्वायत्तता की भावना आने लगी और समग्र विकास के रास्ते तलाशे जाने लगे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने भी बङी भारी चुनौतियां थी। विविध धर्मों, संस्कृतियों, भाषा व भौगोलिक परिस्थितियों वाले इस देश में सभी का सर्वांगीण विकास कोई आसान काम नहीं है जहां लोगों की संकीर्ण मानसिकता हरदम सामने आती हो। यही कारण है कि व्दित्तीय विश्वयुद्ध में भीषण तबाही को झेलने वाला जापान तथा विशाल जनसंख्या वाला पङोसी देश चीन हमसे कहीं आगे निकल गया है और दूसरी और हम हैं कि विकासशील देश होने का लेवल अभी तक लगाये हुए हैं। चालीस प्रतिशत जनता सदा ही गरीबी रेखा के नीचे गुजारा करती है और दस प्रतिशत जनता तो भुखमरी की शिकार है जिसे महानगरों की स्लम बस्तियों व आदिवासी इलाकों में देखा जा सकता है। लाखों लोग जिनमें औरतें व नाबालिग बच्चे ज्यादा हैं, नगरों, महानगरों की सङकों, चौराहों, बस अड्डों व रेलवे स्टेशनों आदि जगहों पर भीख मांगते देखे जा सकते हैं। वैसे इसे विश्व का सबसे अधिक तेजी से विकास करने वाला देश माना जा रहा है पर जिन आंकङों के आधार पर यह दावा किया जाता है वह चंद घरानों की बढती पूंजी के आधार पर ही है। विश्व का सबसे बङा प्रजातांत्रिक देश व सर्वोत्कृष्ट संविधान होने के बावजूद लोगों का समान रूप से आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक विकास नहीं हो पा रहा है, एक चिंतनिय विषय है और इसका मूल कारण तो एक ही है कि सरकारों में जो लोग बैठे होते हैं वे एक विशेष प्रकार की विचारधारा से ग्रेषित होते हैं। इसके अलावा संविधान व्दारा समान अवसर प्रदान करने के बावजूद भी लोग उनका फायदा नहीं उठा पा रहे हैं तो कुछ लोग जानबूझकर अपने कर्मों से बर्बाद हो रहे हैं। कुछ लोग रूढियों व अंधविश्वासों में इतने जकङे हुए हैं कि उनमें कुछ नया करने की सोच ही नहीं बन पा रही है। इन्हीं सब पहलुओं को दिखाने की कौशिश की है इस पुस्तक में।

निर्धनता मानव जीवन में एक अभिशाप है जिससे उसका पारिवारिक जीवन नारकीय हो जाता है। चूंकि भारतीय समाज का एक निश्चित व बहुसंख्यक वर्ग सदियों से गरीब रहा है और उसे ऊपर उठने का कोई अवसर सामाजिक व शासकीय ब्यवस्था व्दारा प्रदान नही किया गया है, पूरी तरह से उस वर्ग को दोषी नहीं मान सकते। आजादी के बाद प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार तो प्राप्त हो गये हैं पर इस समाज के पास ना तो शिक्षा थी जिसके कारण कोई सरकारी नौकरी मिल जाती। इस के अलावा ना कोई जमीन जायदाद और ना ही ब्यापारिक अनुभव। इसके विपरीत ब्राह्मण समाज के पास शिक्षा थी सो जो भी सरकारी सेवा का पद सृजित हुआ, नौकरी मिल गयी। क्षत्रिय के पास जमीन थी पर विलासितापूर्ण जीने की आदतों के कारण अपनी जमीनें भी गंवा बैठे, लेकिन सामाजिक प्रतिष्ठा सदैव उनके साथ रही है। जमीन चली गयी तो पुलिस फौज में भर्ती हो गये। वैश्य समाज पहले से ही ब्यापार में लगा हुआ था, समाज शिक्षित भी था, अत जिसने सरकारी नौकरी करनी चाही, उसे भी तुरंत मिल गयी। शूद्र समाज में जो अन्य पिछङा वर्ग था, वह भी शिक्षित तो नहीं था पर खेती के काम में लगा था और आजादी के बाद काश्तकारी नियमों के तहत जमीन के हकदार भी बन गये। रह गया केवल अति पिछङा वर्ग जिसके पुश्तैनी धंधे में न तो बरकत थी और ना ही आगे उन्नति के अवसर।

बात करें आदिवासी समाज की तो कहना पङेगा कि वास्तविक आदिवासी समाज देश की मुख्य धारा से कभी जुङा ही नही रहा। इस समाज का किसी धर्म से भी कोई मतलब नहीं रहा और भारत के हिंदुओं ने भी इन्हें हिंदु नहीं माना। इनके उत्थान के लिए जो भी कुछ हुआ है उसका श्रेय जाता है ईसाई मिशनिरियों को। ईसाई मिशनरियों ने अवश्य इनकी सामाजिक स्थिति का फायदा उठाया और उन पर ईसायत का लेबल लगाया पर उनके लिए शिक्षा की ब्यवस्था भी की। क्या मतलब था उन्हें धर्म से। वास्तव में उनका कोई धर्म था भी नहीं। हिंदुस्तान में रहते हुए भी उन्हें कभी हिंदु नहीं माना गया। लेकिन जब ईसाई मिशनिरियां इस क्षेत्र में काफी आगे बढ गयी और बङी संख्या में उन्हें ईसाई बना दिया गया तब जाकर यहां के हिंदुवादियों की आंख खुली। पहली बार 1960 की जनगणनां में कुछ बचे खुचे आदिवासियों की गणना हिंदुओं के रूप में हुई। पश्चिमी राजस्थान में भील मीणा लोग असली आदिवासी थे। पूर्वी राजस्थान में तो आदिवासी इलाका है भी नहीं पर चूंकि भील मीणा जाति आदिवासी की सूचि में शामिल थी, उसी तर्ज पर अलवर, भरतपुर, जयपुर के मीणा लोगों नें भी अपने आप को आदिवासी की सूचि में शामिल करा लिया और आदिवासी वर्ग के लिए निर्धारित आरक्षण का भरपूर फायदा उठाया, जबकि इनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति वहां की गुर्जर जाति से कम नहीं है। अधिकतर लोगों के पास कृषि भूमि है। राजनीति का खेल है। आखिरकार आते तो हैं शूद्र वर्ग में ही।

गरीबी का स्तर हर समाज, ब्यक्ति, व समय के हिसाब से अलग अलग होता है। यदि एक गांव, समाज या बस्ती में सभी लोगों के पास खाने को समय से भोजन मिल जाता है, जरूरत के अनुसार पहिनने को कपङे, रहने को मकान है तथा जमीन जायदाद में ज्यादा अंतर नहीं है तो वहां गरीबी अमीरी का मापदंड लागू नहीं होता है। परंतु यदि वहां के किसी परिवार के पास अधिक धन आ जाये, किसी परिवार का कोई ब्यक्ति शहर जाकर कोई ब्यवसाय कर ले अथवा किसी को अच्छी सी नौकरी मिल जाय, शहर या गांव में बङा सा मकान बना ले, घर में मोटर साइकिल या कार आ जाय तो उस परिवार को अमीरी की परिभाषा में ले लिया जायेगा तथा बाकी के परिवार अपने आप ही गरीब महसूस करेंगे। वहीं यदि किसी परिवार में कोई प्राकृतिक विपदा आ जाय, परिवार के कमाऊ सदस्य के साथ कोई दुर्घटना हो जाय, किसी परिवार के सदस्य कुब्यसनों में पङ जायं, कोर्ट कचहरी के मामलों में उलझ जायें जिसके कारण परिवार को भूखों मरने की नौबत आ जाय तो वह परिवार निर्धन हो ही जायेगा। इसलिए गरीबी व अमीरी एक तुलनात्मक विचार भी है। कोई ब्यक्ति तृष्णा रहित जीवन ब्यतीत करता हुआ अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता हुआ व अपनी समस्त जिम्मेदारियों का निर्वाह करता हुआ चैन की नींद सोता है तो उसे गरीब नहीं मानूंगा। पर जो अपने परिवार के लिए दो वक्त के खाने की ब्यवस्था भी नहीं कर पाये, पहनने के लिए ढंग के कपङे भी ना हों, बच्चे कुपोषण के शिकार हों तथा उनकी पढाई लिखाई की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा हो तो वही वास्तव में निर्धन कहलाएगा और इस पुस्तक का सम्बंध ऐसे ही लोगों से है।

मानव शरीर को चुस्त व तंदरुस्त रखने के लिए संतुलित भोजन, गर्मी व सर्दी में तन की सुरक्षा के लिए कपङे तथा रहने को पर्याप्त मकान (यह नहीं कि एक ही कमरे में पूरा परिवार सोये और खाना-पीना भी वहीं पर बनाए खाए) हो तथा परिवार के पास नियमित रोजगार हो तो ऐसे ब्यक्ति के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

धन अर्जन की कोई सीमा नही है और जरुरत से ज्यादा धन अर्जन भी इंसान को सुख चैन की गारंटी नही दे सकता है। यदि ऐसा होता तो देश के पूंजीपति गरीबो से उनकी जिंदगी खरीद लेते और कभी न मरते और सुख चैन से जीते। फिर भी उनके विषय में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे लोग अधिक या उल्टा सीधा खाने के कारण मरते हैं। चिंता उस इंसान की है जिसके बच्चे गलियों में, सङकों पर नंगे भूखे घूमते फिरते हैं या भीख मांगते है, उनकी पढाई लिखाई की कोई ब्यवस्था नही है, निर्धन होने के कारण परिवार की औरतों की इज्जत के साथ खिलवाङ होता है, हर तरफ से दुत्कार मिलती है और एक किल्लत भरी जिंदगी जीने को मजबूर हैं जिसे देख कर पशु को भी शर्म आती होगी क्योंकि पशु का कोई तो देखभाल करने वाला होता है। बच्चे देश का भविष्य हैं और जो बच्चा आज भीख मांग रहा है वह अपने माँ-बाप पर ही भार नहीं है बल्कि देश पर भी भार है जिसे 50-60 साल तक देश को झेलना है और भविष्य मे वह भी और भार बढायेगा और ज्यादा भिखारी बच्चे पैदा करके। सरस्वती, लक्ष्मी व दुर्गा पूजक इस देश में कितने ही अज्ञानी, भिखारी, कायर व कमजोर लोग रहते हैं जो एक चिंता का विषय है और इस पर देश के प्रबुद्ध समाज व लोकतांत्रिक सरकार को चिंतन व प्रयास करने की आवश्यकता है। हम चाहे कितनी ही प्रगति कर लें, देश के अमीरों के पास कितनी ही धन-सम्पत्ति आ जाय, राष्ट्रीय आय में कितनी ही बढोतरी हो जाय परंतु यह देश तब तक विकसित देश नहीं कहला सकेगा जब तक कि यहां पर उपलब्ध उत्पादन के समस्त साधनों जिनमें श्रमिक साधन प्रमुख है, का पूर्ण उपयोग नहीं हो जाता है और यह गरीबी रेखा मिट नहीं जाती है। अर्थशास्त्र का यह एक मानक नियम है। यह देश अर्से से विकासशील है और विकासशील ही रहेगा अगर इस श्रमशक्ति को काम देकर बेरोजगारी के कारण बढ रही गरीबी व भुखमरी की रेखा को खत्म नहीं किया गया।

सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि वह प्रत्येक नागरिक के विकास की ओर ध्यान दे और सभी को समान अवसर उपलब्ध कराये। पर चूंकि देश विभिन्न प्रकार की विसंगतियों से घिरा हुआ है, सरकार व सरकारी तंत्र में बैठे लोग भी इससे अछूते नहीं रह सकते। ऐसी दशा में आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछङे हुए प्रत्येक नागरिक को जागरूक होकर संविधान व्दवारा प्रदत्त अधिकारों को प्राप्त कर अपना विकास स्वयं करना होगा। विकास में बाधक धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वासों के व्दारा बनाई हुई मानसिक गुलामी से मुक्त होना होगा, अपनी सोच को बदलना ही होगा। लोगों में स्वाभिमान की भावना पैदा कर उनका चरित्र निर्माण करना होगा।

आज जो राजनीति में व सरकारी सेवाओं में पिछङे वर्ग के लोग बैठे हैं अथवा जिन लोगों ने अपने बलबूते पर औद्योगिक प्रतिष्ठान स्थापित कर लिए हैं, वे कोई रईस घरानों से नहीं आये हैं बल्कि निम्नतर स्तर से अपने बलबूते पर इतनी ऊपर उठे हैं। इसलिए उनके पदचिन्हों पर चलना होगा। बचपन आठ-दश साल की ऊम्र तक का होता है, उसके बाद तो तपस्या का समय होता है। कोई बच्चा जितना ही तपेगा, मौज मस्ती से दूर रह कर अपने लक्ष्य की तरफ अग्रसर रहेगा, एक दिन अवश्य मन चाहा पङाव प्राप्त करेगा।

साहुकार का कर्ज एक ऐसा दानव है विशेष कर भारतीय ग्रामीण अंचल में जिसने कभी किसी गरीब को उबरने नहीं दिया। जैसा कि मैने ऊपर बताया है, अधिकतर कर्ज सामाजिक संस्कारों को पूरा करने के लिए ही लिया जाता है, रोज-मर्रा के खाने के लिए नहीं। साहुकार से लिया हुआ कर्ज पीढी-दर-पीढी चलता रहता है। राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे के अनुसार भारत में 2012 में ग्रामीण क्षेत्र में 31 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 22 प्रतिशत परिवार कर्जदार थे तथा औसत कर्ज की राशि ग्रामीण क्षेत्र में 32522 रुपये तथा शहरी क्षेत्र में 84625 रुपये प्रति परिवार थी जो वर्ष 2002 के मुकाबले क्रमश 27 प्रतिशत व 18 प्रतिशत अधिक है। ज्यादातर कर्ज सूदखोर लोगों से ही लिया जाता है पर आजकल कर्ज की सुविधा के कारण बैंकों से भी कर्ज मिल जाता है। बहुत से निजी बैंक भी अस्तित्व में आ गये हैं जो साहुकारों द्वारा ही चलाए जा रहे हैं और बङे ही लुभावने तरीके से कर्ज देने को तैयार रहते हैं पर कर्ज ना चुका पाने की दशा में इन बैंको का दबाव बढ जाता है और चुकता होने का कोई रास्ता न मिलने पर आत्म हत्या जैसे भी कदम उठा लिए जाते हैं जैसा कि आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्, मध्यप्रदेश तथा कर्नाटक जैसे राज्यों में किसान लोग काफी संख्या में आत्महत्या कर रहे हैं।

आज अग्रणी समाज के बच्चे भी माँ-बाप की दौलत व हैसियत की आङ में पथभ्रष्ट हो बर्बाद हो रहे हैं। रियल स्टेट का धंधा जोरों पर है जिसके कारण किसानों की जमीन ऊचे दामों पर बिक रही हैं। जिस किसान ने कभी दस-बीस हजार या लाख रुपये एक साथ नहीं देखें हों, उसके पास यदि करोङों रुपये एक साथ आ जायें तो उसका तो दिमाग ही चकरा जायेगा। ऐसे किसानों के बच्चे जो अधिकतर अशिक्षित भी हैं, दिग्भ्रमित हो रहे हैं, महंगी गाङियां, मोबाइल के साथ नशाखोरी व अन्य अपराधों में लिप्त हो रहे हैं। अय्यासी की जिंदगी जीने वाली एक कौम को बर्बाद होते हुए देखा है। ये रहीस घरानों व अप्रत्याशित रूप से धन पा जाने वाले लोगों को भी सतर्क रहना होगा। गरीबी जीवन में बहुत बङा अभिशाप है, इसे पास नहीं आने दे, यही मेरी सभी के लिए कामना है। इस पुस्तक में मैने कुछ चरित्रों का काल्पनिक चित्रण किया है जो पुस्तक की विषयवस्तु से मेल खाते हैं, अत: पाठकगण इसे अन्यथा न लें।

सब्बे सत्ता सुखी होंतु, सब्बे होंतु च खेमिनो।

सब्बे भद्राणी पस्सत्तु, मां किंचित दुखभाग भा।।

भवतु सब्ब मंगलम्

(भगवान बुद्ध का संदेश पाली भाषा में)

अर्थात सभी प्राणी सुखी हों, सभी स्वस्थ हों, सभी का कल्याण हो तथा कोई भी दुख का भागी न बने। सबका मंगल हो।



प्रथम भाग

अरे बे..ए..टा ग....री....बा!

“आया बापू, क्या बात है, आप इतना घबरा क्यों गहे हैं, माँ तो बैठी हैं आपके पास” चिंतित स्वर में गरीबा बोला।

धनिया पास में ही माथा पकङे बैठी है और बीच बीच में कुछ कहती रहती है। बहु भी पीछे पीछे दौङी आई, दोनो आशंकित से बापू को निहार रहे हैं।

“देख ना बेटा, मैं पास ही हूं फिर भी तुझे याद कर रहे हैं, सांस भी उखङी हुई है, ठीक से कुछ बता भी नहीं पा रहे हैं” धनिया ने शंकायुक्त स्वर मे कहा।

“बे....टा........कु..छ जी... घब....रा ......रहा......है, तू मेरे ... पाआआस ही बैऐऐठ ना” टूटते स्वर में दुखिया कुछ कहने की कौशिस करने लगा।

बापू, घबराओ नही, देखो, हम सब आपके पास हैं, आपकी बहु भी यहीं है, आप क्यों चिंता करते हो,

“मै..ने तुझे जिं अंद गी में कोईई सुअख नहीं दी ईया, तेरा बचपन मे...री गरी...बी की आ..ग में सु…हा हा हो.. गया, मुझे.. मुआफ कर दे गरीईबा, तु...झे ना...म भी ऐ...सा ही दी...या”।

फिर बहु की तरफ निगाह कर आशीर्वाद की मुद्रा में थोङा हाथ ऊपर उठता है, आंखों में थोङी आद्रता झलक पङती है, कुछ कहना भी चाह रहे हैं पर जुबान साथ छोङ रही है।

“नहीं बापू,! आपने तो मेरा बहुत ख्याल रखा है, मैं बङा हो गया हूं और आपने बङे चाव से मेरी शादी भी कराई थी, आपका पोता भी तो चार साल का हो रहा है, और देखो, यह आपकी पोती जो एक साल की है, कैसे उठती पङती है, चलने की कौशिश कर रही है। यह सब आप ही का तो आशीर्वाद है। आप धीरज रखो, थोङा आराम से लेटे रहो, हम सब यहीं हैं आपके पास” सांत्वना देते हुए बोला गरीबा।

“क्यों, साहुकार के यहां न…हीं जा…येगा का…म पर”?

“मैं उसके पास जा कर आया हूं, कह कर आया हूं कि आपकी तबियत थोङी ठीक नहीं है, सो थोङी देर से जाऊंगा”

“यह सा…हु का…र है तो बहु…त मी…ठा, पर खू…न चू…सने में ब…हु…त ते..ज है, हो सके.. तो इस..के चं…गुल से बा…हर नि..कल ने की कौ…शिश क…र.. ना, अपने बे…टे को इ…स से मुक्त जरू…र क..रा..ना” अपने दिल की पीङा ब्यक्त करते हुए कहने लगा दुखिया।

“हां बापू! इस साहुकार के चंगुल में अपने बेटे को नहीं आने दूंगा” दिलाशा देते हुए बोला गरीबा।

“अरे मे...रा पो...ता है क...हां”?

“यहीं पङोस के के बच्चों के साथ खेल रहा है। आपने जो कायदा लाकर दिया था न, उसी में अ अनार, आ आम, इ इमली..... जोर जोर से बोल रहा था”।

इसी बीच बहु दौङ कर बेटे को लेकर आयी और दादा के पास कर दिया। दुखिया ने एक कातर सी दृष्टि डाल पोते को जकङ लिया, पता नहीं उसकी भुजा में इतनी जान कहां से आ गयी।

“क्या ना..म है,अपने से..ठ के पो..ते का”?

“बापू, शायद सूरज नाम है उसका”, गरीबा ने बताया।

“तो फि…र इस… का ना…म भी सूरज ही रख दे, यह क्या का…लिया, का…लिया कह.. ते रह… ते हो, बा…द में यही ना…म पङ जा…येगा और... फिर... का…लू हो जा…येगा”।

“ठीक है बापू, आज से इसका नाम सूरज ही होगा, जब स्कूल में दाखिला दिलाऊगा तो इसका नाम सूरज ही लिखवाऊंगा”।

छोटी सी बच्ची जो एक साल की है, जो बहु की गोदी सिमटी हुई है, के सिर पर हाथ फेरा और पर एक मंद सी मुस्कान दौङ गयी उसके होठों पर।

“अच्छा बे…टा.... खु…श र.. हो”...... कहते कहते दुखिया की जुबान लङखङा गयी, आगे कोई आवाज नहीं निकल रही, आंखें पथरा गयी और देखते ही देखते शरीर निढाल होगया, दुख की पोटली यहीं रह गयी, वह आजाद हो गया।

बापू, बापू कहते हुए गरीबा माथा पकङकर वहीं बुत बन गया।

धनिया ने एक जोर की दहाङ मार दी और बहु भी चीख पङी, दोनों नारियों का क्रंदन सुन पास पङोस की औरतें इकट्ठी हो गयी, लोग भी आ गये, गरीबा को उठाकर दूर बिठाया, औरतों ने सास बहु दोनों को सम्भाला। एक पङोसिन दोनों बच्चों को एक तरफ लेकर बैठी। एक आदमी दौङकर फूस का एक पुलिंदा लेकर आया और लोगों ने मिलकर दुखिया के पार्थिव शरीर को उस पर लिटा दिया और शवदाह की तैयारी आरम्भ कर दी। कुछ जवान लङके चले गये जंगल की ओर लकङियां लाने। चार भौतिक तत्त्वों का पुतला अब ठंडा पङ चुका है,अर्थात अग्नि व वायु तत्त्व निकल चुके हैं, अब केवल मिट्टी व जल तत्त्व बचे हैं जो चिता की अग्नि में जलकर अपने अपने महा तत्त्व में जाकर समा जायेंगे अर्थात जल भाप बन कर मिट्टी से अलग हो जायेगा और मिट्टी राख के रूप में परिवर्तित हो कर पुन. मिट्टी में ही मिल जायेगी. एक ब्यष्टि के तत्त्व अलग अलग होकर समष्टि में समा जायेंगे, और यदि संतों की भाषा में कहें तो एक आत्मा परमात्मा में विलीन हो जायेगी।

दुखिया चल दिया चार जनों के कंधों पर सवार होकर, पीछे से धनिया छाती पीटती रह गयी। लङकी बिदा हो गयी, मा-बाप, नाती रिश्तेदार रोते रह गये, कहत कबीर सुनो हे बालकि, सभी सासरे जायं, इस सासरे का पंथ निराला, आवागमन मिट जाय। तीन चार घंटों में ही दुखिया का अस्तित्त्व इस संसार से समाप्त हो गया, रह गया तो केवल एक नाम “दुखिया” जो कुछ समय तक लोगों के जहन में रहेगा और धीरे धीरे विस्मृत हो जायेगा।

शमसान घाट से वापिस आकर लोगों ने परिवार को कुछ सान्त्वना दी, कुछ देर बैठे और एक एक कर चल दिये। निकट सम्बंधी पङोसी वहां बने रहे,अपने घरों से लाकर कुछ चाय पानी पिलाया, व शाम को कुछ खाना भी खिलाया। शाम को सेठ किरोङीमल भी आए, बोले “बेटा गरीबा! देख, दुखीराम (आश्चर्य, आज सेठ ने भी आदर से नाम लिया) ने तो बहुत अच्छी तरह से निभाई, हमने कभी भी किसी चीज के भरोसे नही रहने दिया, जो भी मांगा, हमने दिया। आदमी खरा था (दूर बैठे लोगों ने कानाफूसी की, हां जहां लगवाया, वहीं अंगूठा लगा दिया), सो अब तुझे निभाना है, हम तो सदा ही तुम्हारे परिवार के साथ रहे हैं, किसी बात की चिंता मत करना, कल समय लगे तो दुकान पर आ जाना”।

“हां सेठ बाबा!अब आप ही का सहारा है, हम जैसे भी हैं, आपकी सेवा में हैं” कहते हुए गरीबा की आंखें नम हो गयी। कैसे कह दे कि हमारा ही खून चूसकर असमय ही हमें मौत के मुंह में धकेलते रहते हो और स्वयं ऐश करते हो।

सांत्वना देकर सेठ चले गये।

खाना पीना खाकर फिर पङोसी लोग गरीबा के घर एकत्रित हुए। “गरीबा बेटा!अब दुखिया के बाकी संस्कार भी करने हैं, उसकी अर्थियों को गंगाजी पहुंचाना है” पङोसी लादू ताऊ ने समझाते हुए कहा।

“पर ताऊजी मेरे पास तो कुछ भी नही है, कैसे करूंगा यह सब”।

“कैसे भी कर बेटा! बाप तेरा था, सो करना तो पङेगा ही, अब नही तो कुछ समय बाद पहुंचाना है। अस्थियों को गंगा मे प्रवाहित किए बिना कैसे मिलेगी मुक्ति दुखिया को, उसकी आत्मा यहीं भटकती रहेगी” एक बुजुर्ग के नाते समझाने लगे लादु ताऊ।

सोच रहा है, यह कैसा जाल है, शरीर नष्ट होगया, कुछ भी बचा नही, पर यह आत्मा यहीं भटक रही है। पर जो पशु पक्षी मरते हैं या गली के कुत्ते बिल्लियां भी तो मर जाती हैं, उनकी आत्मा भी तो यहीं भटकती रहती होगी, और फिर यह भी कहते हैं कि जीव के मरने पर आत्मा अपना चोला बदल लेती है अर्थात दूसरे जीव में प्रवेश कर जाती है, इस पर भी उसे यहीं पर भटकते रहने का चक्कर समझ में नहीं आता है। पर वह क्या जाने आत्मा परमात्मा की माया, वह इन की तरह से ज्ञानी थोङे ही है। होती होगी आत्मा, सभी तो मान रहे हैं।

“ठीक है ताऊ जी, करूंगा जैसा आप कह रहे हो” गरीबा ने मान लिया।

दूसरे दिन पहुंचा सेठ की दुकान पर।

“परनाम बाबा”।

“अरे आ रे गरीबा”! देखकर सेठ के चेहरे पर मुस्कान दौङ गयी। “बता क्या बात है”?

“सेठ बाबा, कुछ पैसे चाहिएं, बापू के आगे के कुछ संस्कार भी तो करने हैं”।

“ठीक है गरीबा! हम तो तुम्हारे परिवार की पीढियों से हर मुश्किल में सहायता करते आये हैं। पर एक बात है, अब तक तो खाता दुखिया के नाम से चलता था, पर अब वह तो रहा नही, सो खाता तुम्हारे नाम से खोलना होगा, जो कुछ भी लेन देन होगा वह सब तुम्हारे नाम से ही तो होगा और दुखिया के नाम जो रकम बाकी है, वह सब तुम्हारे खाते में ही डालनी होगी, उसके वारिस तुम ही तो हो”।

“हां सेठ बाबा! मैं सब चुकाऊंगा बापू की देनदारी” गरीबा ने मजबूर स्वीकृति दे दी।

सेठ ने पहले से ही सब तैयारी कर रखी थी, बही का एक पन्ना आगे कर दिया, “ले बेटा, कर दे दस्तखत, और यह देख, तेरे बापू का खाता बंद कर दिया है”।

गरीबा कुछ चार पांच साल स्कूल गया था सो कुछ अंकों की गिनती व लिखना पढना सीख गया था। बही में लिखी रकम देखकर उसका माथा चकरा गया, उसने कभी, बही खाता देखा नहीं था, पर दस्तखत के सिवाय कर ही क्या सकता था, सो कर दिए और नई रकम पर भी दस्तखत कर सेठ को धन्यवाद दे घर आ गया।

गरीबा का चार साल का बेटा एक कोयले का टुकङा लेकर घर की कच्ची दीवार पर कुछ लकीरें खीचने लगा। इस पर गरीबा की माँ एक आह भर कर बोली “अरे कालिया! हमारे तो पहले से ही काले कागद हो रहे है, तू और कितने कागद काले करवाएगा, दीवार पर मत लिख कुछ”.

काले कागद होने का मतलब होता है बणिए की बही में काली स्याही में दर्ज की गई कर्ज की रकम, क्योंकि अनपढ व गरीब घरों में कोई कागज का टुकङा तो होता ही नही था, केवल एक ही कागज से पाला पङता था, सेठ के बही खाते में काली स्याही में दर्ज की गयी कर्ज की राशि और कर्जदार का लगा हुआ अंगूठा।

दाह क्रिया के तीसरे दिन दुखिया की चिता से कुछ अस्थियां एकत्रित कर लायी गयी, उन्हें विशेष तरीके से संशोधित कर एक थैली में रखा गया और गंगाजी जाने की तैयारी हुई, गरीबा को तो जाना ही था, साथ में बहन बहनोई, एक चचेरे भाई को भी साथ लेना पङा, पर खर्च तो गरीबा की जेब से ही होना है। राजस्थान, हरयाणा, पंजाब, दिल्ली उ.प्र., म.प्र.आदि क्षेत्रों के लोग अधिकतर गंगा में ही अपने प्रियजनों की अस्थियां प्रवाहित करते हैं, कुछ लोग यमुना, नर्मदा आदि नदियों में भी सुविधानुसार प्रवाहित कर देते हैं। गंगा यमुना के घाटों पर तो दाह संस्कार की क्रिया सदियों से चली आ रही है, अधजली लाशों को इन नदियों में ही प्रवाहित कर देते है, तर्क देते हैं कि नदी में रहने वाले जीव इसे खाकर अपना पेट भर लेंगे और दूसरी और नेता लोग नदियों में ब्याप्त गंदगी का रोना रोकर सरकार को कोषते रहते हैं, सफाई के नाम पर हर साल करोङों रुपया इन नदियों में बह जाता है। अस्थियों के साथ कुछ फूल पत्ते भी होते हैं, धूप बत्ती भी होती है, और यह सभी नदी में ही पङता है तो फिर सोचिए कि नदी जल गंदा कैसे नहीं होगा...।नदियों के किनारे किये जाने वाले धार्मिक अनुष्ठान भी एक तरह से इनके जल को दूषित ही करते हैं, पर मामला आस्था का है तो दोष कैसे दिया जाय।

गरीबा ने बापू को गंगा जी में पहुंचा तो दिया, पर अभी और भी क्रियाक्रम व संस्कार बाकी हैं, शुद्धिकरण के लिए हवन करना है, बिरादरी भोज भी करना है। समाज क्या कहेगा, बाप वृद्धावस्था पाकर मरा है, बच्चों की शादी भी कर गया है तो उसके नाम पर कुछ तो दानपुण्य होना ही चाहिए।

हां, दान पुण्य, पर जिसके पास कुछ भी नही है वह भी दान-पुण्य करे, पर करे कहां से?

कहां से करे, कर्जा ले, भीख मांगे, परिवार के जरूरी खर्चे छोङ दे, पर यह तो करना ही पङेगा रे गरीबा, आगे क्या नरक में जाना है?

गरीबा ने सेठ की बही में एक और अंगूठा लगाया, बाप की मौत का जश्न मनाया, ब्राह्मण को दक्षिणा दी, बिरादरी ने भोज का आनंद लिया, अंत में गरीबा के सिर पर समाज की पगङी बांध दी गयी, ‘जय हो गंगा मैया’ के जयकारे के साथ। आज से गरीबा ही इस परिवार का मुखिया है, बिरादरी से सम्बंधित मसलों पर उस को ही पूछा जायेगा।इतना सब कुछ करके गरीबा को आखिर एक पदवी तो मिल ही गयी। पर कोई पूछेगा कि उसके घर में चूल्हा जला या नहीं, बीबी, बच्चे के ईलाज के लिए पैसे हैं या नहीं? कोई नहीं पूछने वाला।



द्वितीय भाग

“बापू ! आज लक्ष्मी भैया के घर सत्संग हो रहा है, जरा देख आता हूं कैसा हो रहा है यह सत्संग” प्रवीण ने अपने पिताजी से कहा।

“क्या देखेगा वहां, वही कबीर आदि की बाणी तो गायेंगे पर पीना पिलाना जरूर करेंगे, ठीक है देख आ, पर जल्दी ही आ जाना” बापू ने समझाते हुए कहा।

“ठीक है बापू! जल्दी ही आ जाउंगा”।

रास्ते में गरीबा का घर भी पङता है, जहां दरवाजे के बाहर ही वह गुमसुम सा बैठा है।

“क्या बात है भैया! बङे उदास से बैठे हो”? पूछा प्रवीण ने।

“कुछ नहीं भाई, बस यही सोच विचार आ रहे हैं कि कैसे इस परिवार की गाङी को खींच पाऊंगा”।

“ठीक है भैया! सोच विचार से ही तो रास्ता निकलता है, जहां चाह, वहां राह। पर चलो, आज लक्ष्मी भैया के घर छठी की रात का सत्संग है, थोङी देर सुनकर आते हैं”।

“भाई! मेरा मन नही है, कल सेठ के यहां काम पर जाना है। बङा ही चिंचङ है, सर पर ही खङा रहता है, जरा भी सुस्ताने नही देता है। ऊपर से मीठी मीठी बातें भी बनाता रहता है, अहसानों की गठरी धरे रहता है सदा मेरे सिर पर”

“हां भई! सो तो है, पर चल, थोङी देर चलकर देखते हैं, ज्यादा देर मुझे भी नहीं बैठना है। आपका भी मन थोङा बदल जायेगा” आत्मीयता से कहा प्रवीण ने।

दोनो चल देते हैं लक्ष्मी के घर की ओर।

हारमोनियम, एकतारा, ढोलक, झांज-मंजीरे सब तैयार हैं। सत्संग होने वाला है। आज का सत्संग लक्ष्मी भैया के घर पर है, वह तहसील आफिस में कलर्क है और उसे तीन लङकियों के बाद पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है। मांगेराम भैया भी तहसील में चपरासी है और लक्ष्मी भैया का पङोसी है। लादु ताऊ दिहाङी मजदूर है, तीन दिन से बुखार की वजह से काम पर नहीं जा पा रहा है पर सत्संग के लिए अपना आसन जमाए बैठा है। काशीराम ताऊ एक जूते बनाने वाला कारीगर है और कबीर की वाणियों पर काफी पकङ है। वे ही इस सत्संग पार्टी का नेतृत्व करेंगे। उन्हें दो दिन पहले ही खबर कर दी गयी थी और उनके कहने पर उसकी पार्टी के अन्य लोगों जैसे मेहरू वाल्मीकि, हजारी प्रजापत आदि को भी खबर कर दी गय़ी थी और वे सभी लोग आ गये हैं। तेजराम यादव, जो लक्ष्मी भैया का सहकर्मी है, भी साथ में बैठा है और सत्संग में भाग ले रहा है। रबर चढाया हुआ मटका उसके सामने है और उसी पर वह धमाधम करता है। उसके और दोस्त भी एक अलग गुट बनाकर पास ही में बैठे हैं। मोहल्ले के लोग लुगाई भी सत्संग सुनने के लिए आकर बैठ गये हैं।

प्रवीण कुमार, जो कालेज में पढता है एक तरफ आकर बैठा है। समय तो नही है इसके पास इस तरह से नष्ट करने को, पर सत्संग का नजारा देखने का मन कर गया तो आकर बैठ गया कुछ समय के लिए। गरीबा भी पास ही बैठ गया, दोनों में कुछ अंतरंगता का भाव पनप रहा है।

काशीराम ताऊ आगये हैं और सत्संग का कार्यक्रम आरम्भ हो रहा है। मांगे भैया ने ढोलक पर कब्जा कर लिया है और लादू चाचा ने मंजीरे अपनी अंगुलियों में फंसा लिए हैं। काशी ताऊ ने इकतारे पर अंगुलियां फेरी तो उसके तार झनझना उठे और इसी के साथ ही मांगे ने ढोलक पर थाप लगा दी और तेजराम ने भी अपने रबर चढे मटके को गोद में ले लिया है। काशी ताऊ ने नाक में कुछ हुंहुंकार भरते हुए शुरु किया-

पहलम कौन मनाइये और किसका लीजै नाम,

मात-पिता गुरु आपणै, लो अलख पुरुष का नाम।

मात-पिता मिल जायेंगे लख चौरासी मांय

गुरु सेवा और बंदगी फेर मिलण की नाय ।

और फिर एक गुरु महिमा गाते हैं-

सेवा मोरी मानो, पूजा मोरी मानो

गुरुजी गणेशा, खोलो ना भरम का ताला जी।

अन्न तो चढाऊं देवा, पर अन्न ना अछूता

चींटी ने अन्न बिटाला जी।

जल तो चढाऊं देवा पर जल ना अछूता,

मछली ने जल को बिटाला जी।

शीश तो चढाऊं देवा पर शीश ना अछूता,

रक्त ने शीश बिटाला जी।......

भजन समाप्त और इसी के साथ सभी बोल पङते हैं, सत् साहेब। मान रहे हैं कि वे भ्रम में पङे हैं और गणेश जी से प्रार्थना कर रहे हैं कि वे उनके इस भ्रम को तोङें पर क्या वे स्वयं भी इस ओर तत्पर हैं, सोचने वाली बात है। सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हैं, अन्न, जल, यहां तक शीश भी, पर मान रहे हैं कि ये भी एकदम शुद्ध नहीं, चींटी, मछली आदि ने बिटाला अर्थात जूंठा कर रखा हैं। खुद तो अन्न जल को तरस रहें हैं और गणेश जी को लालच दे रहे हैं।

इसके उपरांत काशी ताऊ इकतारा मेहरू चाचा की ओर बढा देते हैं। वे भी अब एकतारा पर अंगुली फिराते हुए शुरु करते हैं-

गुरु गोविंद दोनो खङे, काके लागूं पाय,

बलिहारी गुरु आपणै जिन गोविंद दियो मिलाय।

और अब गाना आरम्भ होता है-

उठ मिल ले सुहागण सुरतां नार,

गुरुजी आये पाहुणा।

कित तो देवां गुरु ने बैठणा,

और काहे सुं पखारां उनका पाँव, गुरु जी ....

चंदन चौकी गुरु का बैठणा,

और दूधां सुं पखारां उणका पाँव, गुरु जी...

चावल परोसां गुरु ने ऊजळा,

और हरा मूंगा की दाल, गुरु जी......

सभी फिर से बोल पङते हैं, सत् साहेब। इसके साथ ही गुरू वंदना का दौर समाप्त होता है और सभी थोङा सुस्ताने लगते हैं। काशी ताऊ बोल उठे, “हां, तो लक्ष्मी बेटा, कुछ चाय पानी का इंतजाम तो होगा ही”?

“हां, क्यों नहीं ताऊजी” और कुछ ही देर में पकोङों की एक थाली सामने आ जाती है। चुपके से एक बोतल भी काशी ताऊ के बगल में रख दी जाती है। एक काँच का गिलास व एक पानी का जग भी रख दिया गया। काशी ताऊ ने धीरे से गिलास में दारू डाली, मांगे भैया ने उसमें पानी डाला और फिर लादू ताऊ की ओर, जो इस पार्टी में सबसे बुजुर्ग हैं, बढा दिया। लादू ताऊ गिलास को हथेली की ओट में करते हुए, अंगुलि से एक बूंद धरती पर टपका कर एक ही सांस में गटक गये, कुछ आँखें चिमचिमाई और फिर एक पकौङा मुंह में डालते हुए काम्पलीमेंट दे दिया कि लखमी चीज तो बढिया लाया है। बाकी लोगों ने भी हांमी भरी कि क्यों नही, बोतल तो असली तोङ की ही लगती है।

मांगे भैया ने गिलास को नाम मात्र से खंगाला, काशी ताऊ ने फिर एक पैग गिलास में डाला, मांगे भैया ने पानी मिलाया और काशी ताऊ को दिया। इसके बाद मेहरू चाचा, हजारी चाचा, तेजराम भैया आदि सभी को बारी बारी से दिया गया। यहां पर हरिवंशराय बच्चन की मधुशाला की उन पंक्तियों “मंदिर मस्जिद बैर कराते, मेल कराती मधुशाला” की सार्थकता सिद्ध हो रही है। कैसे विभिन्न जातियों के लोग एक ही गिलास से दारू गटके जा रहे हैं और साथ मे हुक्के का भी कश ले रहे हैं। एक बोतल लक्ष्मी भैया ने अपनी मित्र-मंडली को सौंप दी थी जो एक तरफ बैठे उसका लुत्फ उठा रहे हैं। इतनी ही देर में चाय भी आ गयी, डिस्पोजेबल कपों में। सत्संग के लोगों को तो इसकी जरुरत नहीं थी पर बाकी बैठे लोगों ने चाय पी और पकौङे भी खाये।

इसके बाद आरम्भ होता है असली सत्संग। चलता है दादू, रैदास, मीरा, कबीर की बाणियों और साखियों का दौर। आध्यात्मिकता व दार्शनिकता का ऐसा स्तर, आत्मा-परमात्मा व सगुण-निर्गुण से भी ऊपर की बातें जो होती हैं, उन्हे सुनकर ऐसा लगता है कि उन विश्वविद्यालयों में डाक्ट्रेट की डिग्रियां लेकर आध्यात्म व दर्शन की शिक्षा देने वाले व इन विषयों पर पोथियां लिखने वाले विद्वान इन लोगों के सामने कुछ भी नहीं हैं। “ना तारागण आकाश थे गुनि तब का करो बखाणा” या फिर “ऊपर चढो तलै मत उतरो, जहां तक दौङ तुम्हारी, निर्गुण, सरगुण नीचे रह गया, सुरतां पचि पचि हारी” तक की चर्चायें यहां हो रही हैं। हर एक वाणी के बाद उसका विश्लेषण भी किया जाता है। यह शरीर नश्वर है एक चरखे की तरह, मेहरू चाचा ने कबीर की यह वाणी गाई -

तकलो बळ खा गयो री, सुरति कातन वाळी।

चरखो मेरो रंग-रंगीलो, पीढो लाल गुलाल,

कातन वाली प्रेम सुंदरी, मुङ-तुङ डालै तार,

सुरति कातन वाली....तकलो बळ....

सासु मर जाय, ससुरो मर जाय, ब्याहतो भी मर जाय,

वो कारीगर मत ना मरियो, चरखो जिन दियो बणाय।

सुरति कातन वाली. तकलो बळ...

ईं चरखा की गैल तजूं मैं बहुतज लई कमाय,

अब या चरखो पड्यो पुरानो, ठोकूं तो हिल हिल जाय,

सुरति कातन वाली। तकलो बल...

ईं चरखा में मैं मैं बोले, और मैं मैं तजी ना जाय,

मैं मैं तज गया दास कबीरा, आवागमन मिट जाय,

सुरति कातन वाली। तकलो बळ खा गयो री।

यह शरीर नाशवान है एक चरखे की तरह, चलता रहता है, आयु बढने पर चरमराता रहता है, और आखिर तक मैं मैं ही करता रहता है। ये सास, ससुर, पति-पत्नि के रिश्ते भी नश्वर हैं, केवल वह कारीगर अर्थात सबको बनाने वाला ईश्वर ही अमर है। कितनी रहस्यमयी साखी है कबीर की जो मेहरू चाचा ने गायी है और वह स्वयं भी जानता है इसके गूढ रहस्य को। उसका शरीर भी तो उसी पुराने चर्खे की तरह चरमरा रहा है पर उसमें दारू डाल कर और अधिक जला रहा है।

इसी क्रम में एक और वाणि काशी ताउ ने सुनादी-

बटेउ आयो लेबा ने,

म्हा नै अब कै बचा ले मेरी माय, बटेउ आयो लेबा नै.....

बोली बेटी सुणिये माई, मेरे मन की बात,

इसी बटेउ नै न्यू समझादे, अब के तो कर दे मेरी टाळ,

बटेउ आयो.....

बोली सास हे सुनो पाहुणा, म्हारे मन की बात,

म्हारी लाडो भोळी भाळी, अब के तो करदो इसकी टाळ, बटेउ आयो....

कहे पाहुणा सुनो सास जी म्हारे मन की बात,

आगे का सै हुकुम जरूरी, अब कै ना होवै इसकी टाळ, बटेऊ आयो...

चाची, ताई, बुआ भतीजी रळ मिल कियो सिंगार,

सासरिये तुझे जाणा बेबे, झटपट हो ले तैयार,

बटेऊ आयो.......

चाचा, ताऊ, भाई, भतीजां सिर पर फेरो हाथ,

पांच भईयों की बहन लाडली, पर कोई ना चालै तेरे साथ, बटेऊ आयो.....

कहत कबीर सुनो हे बालकी, सभी सासरे जायं,

इसी सासरे का पंथ निराला, आवागमन मिट जाय,

बटेऊ आयो लेबा नै।

प्रबुध्द पाठक समझ रहे होंगे कि यह किसी लङकी के ससुराल जाने की बात नही है, बल्कि बटेऊ के रूप में यमदूत है और बालिका रूप में एक आत्मा है जिसके अब जाने का वक्त आ गया है, अर्थात मृत्यु का समय आ गया है, इसमें कोई टालमटोल अब नहीं हो सकती है। सारे रिश्ते नातों का मोह अब छोङना है, आवागमन अब खत्म हो जाना है। जैसे ससुराल जाती लङकी को घर की सभी औरतें तैयार करती हैं, उसका सामान बांधती हैं और चाचा, ताऊ, भाई आदि सिर पुचकार कर विदा करते हैं, उसी तरह मृत ब्यक्ति की बिदाई सभी मिलकर करते हैं, रो-धोकर ही सही। इतनी गहरी सोच यहां इस सतसंग के लोगों मे है पर शायद इनकी यह भी सोच बनी हो कि जब एक दिन जाना ही है तो फिर क्यों हाथ-पैर पीटना।

चूंकि यह एक घरेलू सत्संग है इसलिए यहां ज्यादा बहस नहीं हो रही है पर जब यही सत्संग बङे स्तर पर होता है और कई सत्संग पार्टियां उसमें भाग लेती हैं तो नजारा कुछ और ही होता है। हर पार्टी एक दूसरी से ऊपर की वाणी गाती है और उसे नीचा दिखाने की कौशिश होती है। बीच बीच में आम श्रोताओं के मनोरंजन के लिए कुछ हेली(सहेली) व गुजरी भी गायी जाती हैं जिनका विषय कृष्ण व गोपिकाओं की रासलीला होता है। एक गुजरी गाने की बानगी यहां देखिए:-

गुजरी पाणी नै चालती और लीन्ही रेशम डोर,

माथै इंड्ही मोम की, मेरे स्याळुङो सुरताज,

सींख भर सुरमो स्यारे, बंशी फेर बजाय, (आंख में सुरमा लगाना)

बंशी फेर बजाय सांवरा चालूं लारै,

मोहे बंशी को चाव,

मोहे बंशी को चाव, नंद का फेर बजा रे।

भर घङियो धौरां धर्यो, कान्हा ने हेलो देय,

कान्ह उठाओ घङकलो मेरी साथिन बिछङी जायं,

भरोसे रह गयी तेरे, बंशी फेर बजाय....

कान्ह उठायो घङकलो वा खुशी हुई मन मांय,

इबके आइये गढ गोकलै, तनै न्योत जिमाऊं भात,

बैठकर थाल किनारे, बंशी फेर बजाय...

ले दोघङ पोल्यां गयी, सासु नै हेलो देय,

सास उतारो घङकलो, मेरी पतली कमर बल खाय,

नाङ में टळको जाय रे, .(गर्दन में झटका लगना) बंशी फेर बजाय...

सास उतार्यो घङकलो और धर्यो परींडा मांय

आवण दे मेरा लाल नै तेरी चमङी लूं उतराय,

अनोखी पाणी ने जाय रे, बंशी फेर बजाय......

ना इकली पाणी गयी और नाय कमायो पाप,

सास जी नाय कमायो पाप,

सात सहेली रै झूमकै, म्हारी छोटी नणदी साथ,

सास मत बोली मारै, बंशी फेर बजाय.......

इसका मतलब है कि एक गुजरी कृष्ण को बहुत चाहती है। वह आंखों में काजल लगा कर रेशम की रस्सी व दो घङे लेकर पानी भरने जाती है। घङे भरने के बाद कृष्ण का इंतजार करती है कि वह आकर घङों को उसके सिर पर ऱखवा दे। कृष्ण वहां आकर घङे उठवा देता है तो गुजरी बहुत खुश होती है और कृष्ण को गोकुल आ कर भात खाने का निमंत्रण देती है। घर जाकर सास से घङा उतारने के लिए कहती है। सास घङा तो उतार देती है पर कुछ शंका करती हुई कहती है कि तू बङी अनोखी होकर पानी भरने जाती है, मेरे बेटे को आने दे, उससे तेरी चमङी उतराउंगी। बहु अपना पक्ष रखते हुए कहती है कि ना तो मैं अकेली पानी भरने गयी थी और ना ही कोई पाप कर्म किया है। सात सहेलियों के झुंड के साथ छोटी ननद भी साथ थी, अत: सास जी! ऐसे ताना ना मारो।

औरतें इसी तरह की बाणि सुनने के लिए तो बैठी हुई हैं, उन्हें कबीर की बाणी कहां पल्लै पङने वाली हैं। इसी तरह हेली(सखी) भी एक मनोरंजनयुक्त गायन है पर उसमें भी कुछ रहस्य व कुछ कुछ सूफियाना अंदाज छुपा होता है, एक निराकार सत्ता से भक्त का जुङाव परिलक्षित होता है, देखिये इस वाणि में -

दो नैणा के बीच,

मुसाफिर प्यारो रम रह्यो री हेली, दो नैणा के बीच।

कोठा ऊपर कोठरी री म्हारी हेली, ज्यां पर बैठ्यो मोर।

मोर बेचारो के करै म्हारी हेली, घर में घुस गयो चोर।

माल सब हर लियो री हेली , दो नैणा के बीच....

धोबिन धोवै कापङा री म्हारी हेली, त्रिवेणी के घाट।

साबुन मछली ले गयी म्हारी हेली, कुणबो बारह बाट।

लगन वाकी जल सुं लगी, हेली दो नैणा के बीच........

अगम कुआ मुख सांकङा री म्हारी हेली, जाकि लम्बी डोर,

पांच सखी पाणी भरैं म्हारी हेली, ले गई समंद झकोर,

कमर उनकी लपट रही, हेली दो नैणा के बीच...

बटेऊ प्यारो रम्य रहो री हेली, दो नैणा के बीच।

अब कबीर की एक वाणि लादु ताऊ ने सुनाई-.

म्हारे सत्गुरू नै दीन्ही सै बताय,

दलाली म्हारे लालन की।

लाल लाल सब कोई कहैं, पर लाल जगत में दोय।

एक तो समंदर ऊपजे, एक भली कोख में होय। दलाली म्हारे...।

लाल लाल सब कोई कहै और सबकै पल्लै लाल।

पर गांठ खोल परख्यो नहीं, इस बिध रह्यो कंगाल। दलाली म्हारे...।

लाल पङ्यो मैदान में और कीच रह्यो लिपटाय।

निगुरा ठोकर मार चल्या पर सुगुरे ने लिया वो उठाय। दलाली म्हारे...।

मक्खी बैठी शहद पर और पंख रही लिपटाय,

ऊङने का सासा(साहस) करै पर लालच बुरी बलाय । दलाली म्हारे…।

लाली लाली सब कोई कहैं पर लाली लखी न जाय,

लाली लख गया दास कबीरा, आवागमन मिट जाय्। दलाली म्हारे…।

हां यही तो है कबीर का असीम खजाना, काम, क्रोध, लोभ और तृष्णा रहित जीवन जीने की शिक्षा का खजाना जो आज तक कभी खत्म नहीं हुआ। उस निरक्षर संत को पढ कर पीएचडी तक की डिग्रियां प्राप्त करने के लिए पढे-लिखे लोग कतार लगाए खङे रहते है। कबीर ने अपने खजाने की चाबी भी सबके सामने रख दी है, खोलो और बरतो। संत लोग उनके खजाने को लूटने में लगे रहते हैं पर वह खत्म ही नहीं होता है। उनकी देखा देखी कुछ अज्ञानी लोग भी भीङ लगाए रहते हैं, कबीरपंथी होने का दावा करते हैं, उनके नाम से सत्संग करते हैं और उनकी तिजौरी में से कुछ पा लेना चाहते हैं पर कुछ भी हांसिल कर नहीं पाते हैं क्योंकि उन्हें उनकी तिजोरी खोलनी ही नहीं आती है, तिजोरी में रखे माल का केवल नाम सुना है और उसका बखान करते रहते हैं। दुखिया ताऊ भी इस सत्संग का हिस्सा हुआ करते थे और यह जो वाणि लादु ताऊ ने सुनाई है, इसे दुखिया ताऊ ही सुनाया करते थे। बहुत ही दलाली कर गये लालों की, कुछ भी पल्लै नहीं पङा, पर हां, पर उसके इस गरीबा नामक लाल में कुछ अच्छे गुण दिखते हैं, शायद परिवार इसके कर्मों से उऋण हो जाय।

तिजोरी खोलनी क्यों नहीं आती ? क्योंकि वे अनपढ हैं इसलिए ? नहीं, क्योंकि वे नासमझ हैं, इसलिए। अनपढ तो कबीर भी थे पर बहुत ही समझदार, हर किसी की सुनी सुनाई बातों पर आंख मूंद कर विस्वास नहीं करते थे, उस पर गहराई से मनन करने पर ही अपना निर्णय लेते थे, आजकल के पढे-लिखे नासमझ की तरह नहीं कि किसी कर्मकाण्डी के बहकावे में आ गये कि फ़लां देवता की पूजा करलो, किसी तिथि को एक तरह का उपवास रखलो, अमुक मंत्र का जाप करलो, दान दक्षिणा दे दो, धन दौलत की प्राप्ति हो जाएगी, समस्त कामनाएं पूर्ण हो जायेंगी। “पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार, ताते या चाकी भली, पीस खाय संसार” में कितनी सार गर्भित व तार्किक बात कह दी है कबीर ने जिसका खंडन किसी के पास नही है। झोली फैलाए हुए दर दर पर मन्नतें मांगते रहो, झोली भर जाएगी। एक मंदिर में कुछ राशि दान कर पाप मुक्ति का प्रमाण-पत्र प्राप्त कर सकते हैं। एक गुरुजी भाग्य की फाइल बना देते हैं और सभी प्रकार की परेशानियों से मुक्त होने का दावा करते हैं। एक बाबा के बैंक खाते में कुछ रकम जमा करदो और उनके समागम में जाकर कृपा खरीद लो, सभी कार्य सिद्ध हो जायेंगे। ऐसे ढेरों बाबा, तांत्रिक, गुरू अपना आसन जमाए हर जगह बैठे हैं जहां भोली भाली जनता मूर्ख बनती है। परंतु यदि कबीर साहेब को कोई यही बात कहता तो उससे यही सवाल करते कि अपने ताने बाने का काम छोङ कर देवता की पूजा करते रहें और मंत्र का जाप करते रहें तो क्या उनके घर में खाने का अनाज अपने आप आ जाएगा। खून पसीने की कमाई से परिवार की जरूरतें पूरी न करके कर्मकाण्डों में खर्च करना कोई समझदारी की बात नहीं है। जो जाग गया समय पर वह सब कुछ पा लेता है, पर जो सोया ही रहे,जैसे एक कविता की ये पंक्तियां-

लूट रहा है सारे आनंद, जो है जाग गया,

लुट गया उसका जग में, जो सोया रह गया,

माथा पकङे, भाग्य को कोसे,

फिर ढूंढे कोई खिवैया।

कबीर साहेब एक बुद्धिवादी संत थे और तथागत बुद्ध के इस सिद्धांत को मानते थे कि किसी बात में इसीलिये विश्वास नहीं करो कि वह तुम्हारे धर्म ग्रंथों में लिखी हुई है, किसी बात में इसीलिये विश्वास नहीं करो कि तुम्हारे पूर्वज पीढी-दर-पीढी उसे मानते आ रहे हैं, किसी बात में इसीलिये विश्वास नहीं करो कि सारा समाज उसे मानता है, बल्कि तभी उसमें विश्वास करो कि वह बात वर्तमान परिपेक्ष में कहां तक सही है और मानव मात्र के लिये कितनी कल्याणकारी है। “तू कहता है पोथिन लेखी, मैं कहता हूं आंखिन देखी, तेरा मेरा मनवा मितवा एकहुं कैसे होई रे”, इस तरह कबीर साहब किसी बात को तभी मानते थे जब वह तर्क की कसौटी पर खरी उतरती थी और जन सामान्य के लिए कल्याणकारी होती थी। क्या ऐसा नहीं लगता कि इन लोगों के पास भी एक बङा खजाना है, ज्ञान का खजाना, पर ताले में जंग लग गया है, चाबी बेकार हो गयी है, क्योंकि सदियों से खोलकर उस खजाने को काम में नहीं लिया गया है। कबीर जैसे महान संत की साखियों का गुणगान कर रहे हैं और नशीले पदार्थों का सेवन कर रहे हैं। तिजोरी भरी पङी है हीरा मोतियों सें, जोहरी बनकर पहिचान नहीं कर पाये। हीरा पल्लै में बंधा है पर ‘गांठ खोल परख्यो नही’ और इसीलिए कंगाल रह गये। पहिचान करें भी तो कैसे, मन तो कुब्यसनों का शिकार है। तिजोरी बंद पङी है।

वैसे कुछ वर्षों से ऐसे आयोजनों पर एक तरह से विराम सा लग गया है। डीजे का चलन बढ गया है जिस पर नये नये गानों की धुन पर नाचने में नई पीढी को जो मजा आता है वह इन सत्संगों में कहां आयेगा और इस पीढी को समझ में भी कहां आने वाली हैं कबीर की वाणियां। दारू की बोतल डकार कर रात भर डांस करना व दूसरे दिन बेहोशी में खटिया में पङे रहना और शाम को आंख मलते हुए यही वाक्य निकलता है -बहुत ही मजा आया। मानव की बर्बादी का नया व बहुत ही खतरनाक चलन आरम्भ हो गया है।



तृतीय भाग

बुधराम एक भूमिहीन दिहाङी मजदूर है और दलित समाज से है। आज भी दिनभर मजदूरी करके आया है और आराम की नींद ले रहा है, क्योंकि उसे कल भी काम पर जाना है। बिना किसी कारण के घर पर बैठ कर क्यों तीन सौ रुपये का घाटा करे। उसका बेटा प्रवीण कुमार एक होनहार युवक है। प्रवीण के अरिरिक्त उसके एक और बेटा तथा एक बेटी भी है। स्वयं तो घर की परिस्थितियों के कारण मिडिल कक्षा भी पास नहीं कर पाया था पर अपने बेटे बेटियों को खूब पढाना चाहता है और इसलिए जी तोङ मेहनत करता है। चूंकि वह किसी भी बुरी लत का आदी नहीं है और सबसे अच्छा ब्यवहार रखता है, अत. लोग उसकी इज्जत भी करते हैं और कभी ठाली रहने ही नहीं देते हैं। प्रवीण कालेज में ग्रेज्युवेसन कर रहा है तथा छोटा भाई भौतिक विज्ञान के साथ हाई स्कूल परीक्षा की तैयारी कर रहा है। उसका इरादा इंजिनियर बनने का है। सवसे छोटी बहिन है जो आठवीं में पढती है और अध्यापिका बनने का सपना देख रही है। निद्रावस्था में तो हर किसी को सपने आ जाते हैं पर ये लोग जागृत अवस्था में सपने देख रहे हैं, पूरे तो होंगे ही।

प्रवीण भी बचपन से ही एक ढर्रे से हटकर कुछ नई सोच रखने वाला युवक है। तन और मन से काफी सुंदर भी है। बीए में उसका पसंदीदा विषय अर्थशास्त्र ही है। अपने गांव व कस्बे में सेठ-साहुकारों, जमींदारों की जिंदगी से अपने समाज के लोगों की स्थिति की तुलना करता है तो बङी कोफ्त होती है। दिन रात मेहनत करके भी ये दलित लोग फटेहाल जिंदगी जीने को मजबूर हैं। एक कोने में बैठा वह भी इस सत्संग का कुछ नजारा देखने आ गया है वरना वह इन बातों में अपना समय बरबाद करना उचित नहीं मानता है। सोचता है कि ये लोग कितनी ऊंची ऊंची बातें करते हैं लेकिन इस नारकीय जीवन से कैसे छुटकारा पाया जाय, ऐसी सोच इनमें नही है। कबीर की साखियां बङी ही लगन से गाते हैं पर उन साखियों का पालन बित्कुल भी नहीं करते हैं। सुनने वाले केवल सुनेंगे, याद कुछ नहीं रहेगा पर जब कल ये ही लोग बस्ती में निकलेंगे तो लोग यही ब्यंगबाण छोङंगे, “क्यों रे लादुङा! कल तो बहुत दावत उङाई, लखमी के यहां” और लादु ताऊ खिंसिया कर यही बोलेगा “क्या करें सेठ! लखमी माना ही नही, जोर देकर बैठा ही लिया सत्संग में। चूंकि उसके यहां खुशी की बात थी तो फिर मना भी नहीं कर सके”। और सेठ एक ब्यंगात्मक हंसी में बोलेगा, “तभी लखमी हजार रुपया ले गया था मुझसे, वाह! दारू पीकर सत्संग किया, कितना अच्छा काम किया, सरकारी दफ्तर में बाबू जो ठहरा। ठीक है, मेरे को क्या, हजार का बारह सौ चुकायेगा अगले महिने और तभी उसे पता चलेगा।

साहुकार का कहना गलत नही है। अच्छी खासी नौकरी कर रहा है लक्ष्मी तहसील आफिस में, कुछ कमाई उपर से भी कर लेता होगा पर फिर भी जब तब साहुकार के सामने हाथ फैलाता रहता है। दोस्तों से भी यदा कदा मांगता ही रहता है। आये दिन घर में दोस्तों का जमघट लगा ही रहता है और वही पीना व खाना। बीबी वैसे तो बबुवाइन है पर बेचारी रोज खटती रहती है और बीमार सी रहती है पर बाबू साहब कोई ध्यान नहीं देते हैं, ऊपर से अब यह जचकी का कष्ट सहा है, बेटे की चाह जो ठहरी। बच्चियों की तरफ भी कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है, बङी लङकी आठ साल की है, स्कूल जाती है पर अभी दूसरी कक्षा में ही पढती है। दूसरी बेटी को भी इसी साल स्कूल में दाखिला कराया है पर इन बच्चियों का स्कूल जाना ना जाना बराबर है, बहुत सी बार नागा कर लेती हैं, कारण कि कभी उनकी यूनिफोर्म धुली नहीं होती है, कभी नाश्ता नहीं बन पाता है तो कभी मम्मी की तबियत खराब हो जाती है। तीसरी बच्ची दो साल की ही है, कमजोर इतनी है कि ठीक तरह से चलना भी नहीं सीखा है। लक्ष्मी बाबू इन बच्चियों की तरफ कोई ध्यान नहीं देते हैं। दो पैसे घर में बचे रहें और एक इज्जत की जिंदगी जीएं, ऐसी सोच नही आई है उसमें। वैसे अच्छा पढालिखा भी है, ग्रेज्युवेट है पर सोच वही अनपढ लोगों जैसी।

लक्ष्मी भैया के मां-बाप भी अभी जिंदा हैं पर वे छोटे बेटे के पास रहते हैं। उन्होंने पहले तो सारा ध्यान लक्ष्मी की पढाई पर ही दिया, कालेज की पढाई के दौरान काफी पैसा खर्च होता था, इसलिए छोटे बेटे की पढाई ज्यादा नहीं हो पाई। छोटा बेटा वैसे तो मेहनत मजदूरी ही करता है पर बाल बच्चों व मां-बाप का पेट ठीक तरह से पाल रहा है। उसकी घरवाली भी मेहनती है, फसल के समय कुछ कमा भी लेती है। एकाध पशु भी पालती रहती है जिसे बेचकर एकमुश्त रकम प्राप्त हो जाती है। दूध देने वाला एक पशु, गाय या भैंस अक्सर रहता ही है जिससे थोङा बहुत दूध, दही, घी आदि बच्चों को मिल जाता है, और कुछ नहीं तो गाढा गाढा मट्ठा तो मिलता ही है। ना नुकुर करने के बाद भी मट्ठा अपनी जिठानी के पास भिजवाती रहती है और बार त्यौंहार पर उसके बच्चों को खीर आदि भी खिला देती है। बङी ही नेक औरत है। घर में सास-ससुर को बङा सहारा मानती है क्योंकि उनके भरोसे घर व बच्चों को छोङकर निश्चिंत रूप से बाहर काम पर चली जाती है, पशुओं के लिए घास, चारा, जंगल से जलाऊ लकङी आदि ले आती है। बूढा-बुढिया भी उनके पास रहकर संतुष्ट हैं।

लादु ताऊ भी एक दिहाङी मजदूर ही है। चार दिन काम पर जाता है, पांचवें दिन तबियत ठीक नहीं होने का बहाना बनाता है और पहुंच जाता है ऐसी ही किसी पियक्कङ पार्टी में। सांझ पङे जब घर लौटेगा तो घर भर को गाली गलोज करता हुआ। दो बेटों का बाप है और अब उनकी बहुएं भी आ गयी हैं। बङा बेटा फौज में है पर मां-बाप से अलग गृहस्थी है उसकी। उसकी घरवाली से नहीं होता है पूरे घर का काम। एक छोटा बच्चा है जिसे बङे लाङ दुलार से रखती है तथा अपनी देवरानी व मोहल्ले के अन्य बच्चों के साथ ज्यादा खेलने भी नहीं देती है। अपना थोङा सा काम निपटाकर या तो दिन भर टीवी देखती है या फिर सोती है। सास-ससुर उसे फूटी आंख भी नही सुहाते हैं। सास-ससुर भी गांव गली में अपनी इस बहु के गुणगान करते रहते हैं। फौजी 4-6 महिने में छुट्टी आता है तो पूरे घर भर को अधर उठाए रहता है। मां-बाप से झगङता है कि पीछे से उसकी फेमिली को तंग करते हैं। हां, यही भाषा बोलते हैं फौजी लोग, पत्नि अकेली है, कोई बाल-बच्चा नहीं है, फिर भी फेमिली ही बतायेंगे। सुबह शाम दोनों समय छोंक का साग बनेगा, मीट-मुर्गा भी बनेगा पर यह नहीं कि मां-बाप को एक चम्मच तरी ही चखादें या कभी-कभार चाय का एक कप ही पकङा दे।

लादू का छोटा बेटा इंटर पास है, नौकरी के लिए खूब हाथ पैर पीटे पर नहीं मिल पाई। आशा लगाई थी कि भाई कुछ रकम की ब्यवस्था कर दे तो ले देकर कोई नौकरी मिल जाय या उसी की तरह फौज पलटन में भर्ती हो जाय पर भाभी ने ऐसा नहीं करने दिया, सो भाभी से बहुत ही खुन्नक खाता है। शादी भी कर दी गयी है और तभी से फौजी भाई अलग रहने लग गया है। दो बीघा जमीन सरकार से लादू को मिली थी जिसे बंटाई पर एक किसान को दे रखी है। किसान अपनी मर्जी से जो कुछ दे दे, उसी में खुश हैं, कभी खेत पर जाकर देखना तक नहीं कि फसल कैसी हुई है। बणिए का कर्ज तो लगा ही रहता है। ना कर्ज देने वाले को फिक्र है और ना ही लेने वाले को, दो बीघा जमीन जो बीच मे आ रही है। कर्ज ज्यादा चढ जायेगा तो जमीन गिरवी रखवा लेगा और साहुकार है भी इसी फिराक में। यदि स्वयं उसमें खेती करें तो अच्छी खासी आमद हो सकती है। फौजी लङके की यही शिकायत है कि जमीन की सारी कमाई वही खाता है तो फिर उससे आशा क्यों रखते हैं। अब दोनो बाप-बेटे का एक ही ढर्रा है। जब इच्छा होती है मजदूरी पर चले जाते हैं पर दारू पीना रोज का काम है। पेट भरने की इसलिए चिंता नही है कि खाने भर का अनाज खेत की बंटाई से मिल जाता है और जो कुछ भी मजदूरी करके कमाते हैं उसे बीङी माचिस व दारू में उङा देते हैं। देर रात तक बाप बेटे के बीच कटु बोल ही सुनाई पडेंगे, रोज की आदत सी पङ गयी है। बुढिया और उसकी छोटी बहु किसी तरह से स्थिति को सम्भालती हैं।



चतुर्थ भाग

काशी ताऊ एक अच्छा जूता कारीगर है। गांव में वही एक मिस्त्री है और इसलिए उसके पास लगातार काम होता है पर सत्संगों का भूत इस कदर सवार है कि आये दिन यहां वहां से न्योता आया ही रहता है। खा-पी आता है और सौ-पचास रुपये दान-दक्षिणा के ले आता है। जूती बना कर किसी को देता है तो वह यह कहकर उधार कर जाता है कि फसल पर ही पैसे मिलेंगे। अब गांव का मामला है, बात तो माननी ही पङेगी। परंतु कच्चा माल लाने के लिए उसके पास एक मुश्त तो रकम होती नहीं है, सो वह गांव के साहुकार से दो चार हजार रुपये उधार लाता है जो तुरंत अपनी बही में दर्ज कर लेता है, दो रुपये सैकङा के हिसाब से वसूल भी तो करना है। काशीराम के देनदार भी तो बहुत होते हैं पर वह उनसे ब्याज मांगने की हिम्मत कैसे कर सकता है, गांव का मामला है। साहुकार के घर में जो जूतियां जायेंगी वह अवश्य उसकी कीमत उसके कर्जे में से घटा देगा। जूतियां अब पहिनता ही कौन है, प्लास्टिक ने सारी जरूरतें पूरी कर दी हैं। कोई पुराना पढा लिखा ब्यक्ति, कुर्ता पायजामा पहिनने वाला ब्यक्ति शोकिया तौर पर जूती पहिनता है और वह भी फैंसी जूती। चमङा महंगा हो गया है, गाय का चमङा बाजार में मिलता नहीं है क्योंकि गाय का चमङा निकालने में धार्मिक कट्टरवाद बाधा डाल रहा है। जब तक काशी ताऊ जिंदा है तभी तक जूतियों का शौक पूरा किया जा सकता है, नयी पीढी इस काम के नजदीक भी नहीं आने वाली है।

दो बीघा जमीन काशी ताऊ को भी मिली थी जिससे अन्न चारे की ब्यवस्था हो जाती है। फसल के समय उधार में पहनाई गई जूतियों के एवज में कुछ अनाज इकट्ठा हो जाता है, कोई चारा-भूसा दे देता है ताकि उसके पास जो एक-दो पशु होते हैं, के काम आ जाता है। पर ले दे कर गुजारा बङी मुश्किल से चलता है। साल दो साल में एकाध भैंस तैयार हो पाती है जिसे बेचकर कर्जे का कुछ भार हल्का करता है। साहुकार की बही में उसके कर्ज का खाता परमानेंट है।

काशीराम बङा ही देवी भक्त भी है। उसने गूगा पीर की मान्यता मानी हुई है सो हर साल एक बार उसका जागरण करता है। एक भगत मंडली गूगा छङी लेकर आती है, भगत लोग खाते पीते हैं, गुलगुले-मालपुए का भोजन बनाया जाता है, परसाद के तौर पर अपनी बिरादरी के लोगों व उपस्थित लोगों को खिलाया जाता है, भगतों को दान दक्षिणा दी जाती है और इस तरह से हजारों रुपया खर्च किया जाता है। इस प्रथा को तोङने की हिम्मत नहीं कर सकता क्योंकि यह उसके बाप-दादाओं के द्वारा बनाई हुई है और भारी अनर्थ का भय भी है। चलो पीर बाबा उसका भला करे। पर इतनी रकम से कोई बङी जिम्मेदारी निभाई जा सकती है, बच्चों की पढाई, कपङे आदि पर खर्चा करना समझदारी की बात होती। चार-पांच बच्चे हैं पर उनका कोई भविष्य नहीं है। दो लङकियां है जो अब बङी होती जा रही हैं, पढाई लिखाई की बजाय उनकी शादी की चिंता है। केवल चिंता है, ब्यवस्था कुछ नहीं कर रखी है। एक तो ठीक चाल चलन वाले लङके मिलते ही नहीं है और यदि कोई किसी फैक्ट्री में भी लगा हुआ होगा तो आशा रखता है कि एक मोटरसाइकिल तो मिल ही जाय। लङकियां तो पैदा कर ली पर इनकी जिंदगी कैसी होगी, कोई नहीं जान सकता।



पंचम भाग

मेहरु के पास कहीं कुछ नही है पर उसका एक मात्र लङका नवीन अब गांव छोङकर शहर चला गया है जहां एक संस्थान में साफ सफाई का काम करता है और अपने स्तर के हिसाब से अच्छी पगार पा लेता है। लङका चूंकि मिडिल पास है, अत यह सोच उसमें आई, पूरी शिक्षा मिलती तो कुछ ज्यादा भी कर सकता था। प्रवीण के साथ ही पढता था पर अत्यंत गरीबी के कारण आगे पढाई नहीं कर सका था, फटे पुराने कपङे पहन कर स्कूल जाने में शर्म लगती थी और इसी से निजात पाने के लिए उसने शहर की राह पकङी। प्रवीण से काफी प्रभावित है और जब भी गांव आता है, उसी के पास बैठकर कुछ नये सपने बुनता है। अबकी बार गांव लौटा है तो एक नई सोच के साथ।

“क्या बात है नवीन! बङे खुश दिखाई दे रहे हो”? प्रवीण ने कुतुहल से पूछा।

“हां भैया! मैने अपनी नौकरी के साथ एक नया काम शुरू कर दिया है। मेरे संस्थान से एक कबाङी रद्दी पेपर, अखबार व अन्य कबाङ ले जाता था, पर इस बार मैने स्वयम् उस कबाङ को लेजाकर दुकान में बेच आया तो मुझे कुछ फायदा हुआ। अब मैं आस पास के इलाकों से कबाङ इकट्ठा करता हूं और ठेले में भरकर दुकान में बेच आता हूं, काफी बचत हो जाती है। अब मैने एक टिन शेड वाली छोटी सी जगह किराए पर ले ली है, वहीं पर ज्यादा कबाङ इकट्ठा कर के एक साथ कबाङ के बङे बाजार में बेच आया करूंगा। अब मैं बापू को भी साथ लेकर जाऊंगा सो वहां पर स्टोर में मौजूद रहेंगे और हम दोनों मिलकर कबाङ की छंटाई कर लिया करेंगे, काम आसान हो जायेगा। कुछ समय बाद माँ को भी ले जायेंगे, जाएगी तो”, सब एक ही सांस में कह गया नवीन।

“वाह रे नवीन! तेरी सोच तो बहुत ऊंची हो गयी है, तू ने तो कमाल कर ही दिया” प्रवीण ने विस्मित हो कर कहा।

“और भैया! मैने यह बात अभी तक किसी को नहीं बताई है। बापू को भी बताया कुछ नही पर जब रुपयों की गड्डी उनके हाथ पर रखी तो उनकी भी आंखें फटी की फटी रह गयी, बोले रे बेटा इतनी रकम कहां से ले आया, कहीं कुछ गलत तो नहीं कर बैठा। मैने बस इतना कहा कि बापू विश्वास रखो, मैने कुछ भी गलत नहीं किया, अपनी मेहनत से कमाया है यह सब, और शीध्र ही चला आया आपके पास, ले पहले मुहं सीठा कर”, जेब से निकाल कर चार लड्डओं का पैकेट प्रवीण के हाथ पर रखते हुए बोला।

“अवश्य ही मिठाई खाना तो बनता है” कहते हुए प्रविण ने थोङा थोङा अपने माँ बापू के हाथ पर भी रखा। “बहुत बहुत मुबारक हो भाई, पर बङे शहर में रहते हो, किसी कुसंगति में नहीं पङ जाना”।

“कैसी बातें करते हो, प्रवीण भैया, मैं वचन देता हूं कि किसी भी तरह के गलत रास्ते को नहीं अपनाऊंगा” नवीन ने पूरे आत्मविश्वास के साथ यह बात कही।

“यह हुई ना बात सौ टके की। अच्छा कुछ नाश्ता पानी कर, फिर तुम्हारे घर चलकर चाचाजी व चाचीजी को भी मुबारकवाद देनी है”।

“नही प्रवीण! खाना तो माँ ने घर आते ही खिला दिया था, सो अभी कुछ खाने की इच्छा नही है। चल अब मेरे घर चलते हैं” नवीन बोला, और फिर दोनो नवीन के मोहल्ले की ओर चल दिए।

गांव के बाहर नवीन के बाल्मीकि समाज के आठ-दश घरों की बस्ती है। उसके समाज की औरतें रोज सवेरे गांव में आती हैं, झाङू-बुहारी करती हैं और एक कुल्हङ छाछ और कुछ ठंडी बासी रोटियां मांग ले जाती है जिससे ये अपना पेट भर लेते हैं। पर जब से नवीन शहर जाकर नौकरी करने लगा है, अपनी मां को गांव में जाकर झाङु बुहारी करने व रोटी मांगने से मना कर दिया है। इनके समाज में मजदूरी या और कोई दूसरा धंधा करने की आदत भी नहीं पङी है। मेघवाल, जाटव, कोरी, वळाई, रेगर, कुम्हार आदि समाज में तो कुछ जागरूकता आई है, पुश्तैनी धंधे छोङकर नये काम जैसे कपङा सिलाई, भवन निर्माण कारीगरी, परचूनी की दुकान, बिजली का काम, नल-टोंटी की मरम्मत आदि करने लग गये हैं पर देहाती क्षेत्र के बाल्मीकि समाज में सामाजिक चेतना ना के बराबर है। पहले तो खेती के कारोबार में इनका भी काफी योगदान होता था। बङी बङी टोकरियां, छाबङी, भूसा भरने के काम आती थी तो सरकंडों की तुलियों से बनाये गये सूप फसल के समय अनाज को बरसाने, फटकारने के अलावा रोजमर्रा अनाज को साफ करने में काफी काम आते थे। वह सूपा सूअर की चमङी की तांत से तुलियों को बांध कर बनाया जाता था पर न तो अब तुलियां ही मिलती हैं और ना ही अब सूअर पालन का काम। सूप तो अब गाङिया लुहारों द्वारा लोहे की चादर के बनाये जाने लगे है। अब देहाती बाल्मीकि समाज को सोचना होगा कि अन्य प्रकार के काम धंधों में अपना ध्यान लगाएं और सामान्य धारा में जुङें जैसे कि नवीन ने किया है।

नवीन के घर पहुंच कर प्रवीण ने मेहरु चाचा को प्रणाम किया और नवीन की कामयाबी की मुबारकवाद दी। कुछ पङोसी लोग भी वहां आ गये।

प्रवीण बेटा, इसने तो हमें कुछ बताया नही, पर इस बार कुछ अच्छे पैसे कमाकर लाया है, हमें डर लग रहा है कि कहीं कोई उल्टा सीधा काम तो नहीं कर बैठा है, मेहरु कुछ आशंकित भाव चेहरे पर लाते हुए कहने लगे।

अरे नहीं चाचाजी, नवीन कोई गलत काम कर ही नही सकता। अरे बताओ ना साफ साफ चाचाजी को, नवीन की ओर मुखातिब हो प्रवीण बोला।

इस पर नवीन ने सारी बात विस्तार से बताई तो खुशी के मारे मेहरू की आँखें छलछला गई, माँ ने बेटे को गले लगा लिया। सभी लोग बङे आश्चर्य से यह सुन रहे थे।

चाचाजी... अब छोङिए यहां की सतसंग मंडली को और चले जाइये अपने बेटे के साथ, वहीं जाकर इसके काम की देखभाल कीजिए और फिर कुछ दिन बाद चाची को भी ले जाइये, छोङिए इस नारकीय माहोल को।

ठीक ही है बेटा प्रवीण,,, गांव का वातावरण तो खुला है पर हमारे लिए तो नरक ही है। और कोई धंधा मजदूरी कर सकते नहीं। कोई हमें दिहाङी मजदूरी पर भी नही ले जाता है, कहते हैं कि हमसे होगा नही। अब तो नवीन ही उबारेगा इस नरक से, कहते हुए मेहरू का गला भर आया।

हां चाचा, अब आपके अच्छे दिन लौट आए हैं, शहर जाकर नई जिंदगी शुरु कीजिए।

पङोसी भी कहने लगे ,,नवीन भैया, अब हमारे लिए भी शहर में ही कोई काम तलाश कीजिये ना, हम भी चलेंगे तुम्हारे साथ शहर।

जरूर कौशिश करूंगा, पर वहां चलकर यह पुराना ढर्रा छोङना पङेगा। शहर भरा पङा है हमारे लोगों से, गये थे अच्छे काम की तलाश में, वहां जाकर फंस गये कुब्यसनों में। देशी दारू, गुटका, स्मैक, चरस, गांजा आदि के लती होकर रह गये हैं।

ठीक है भैया,,, जैसा तुम कहोगे वैसा ही करेंगे पर निकाल इस नरक से किसी तरह,, कुछ लोगों ने सम्मिलित स्वर में कहा।

ठीक है, अगली बार आऊंगा तो बताउंगा,, दिलाशा दिया नवीन ने।

अच्छा भैया,,

अच्छा नवीन, मैं भी चलता हूं, पर हां वापिस शहर जाते समय मिल कर जाना।

अवश्य भैया।



षष्ठ भाग

तेजराम एक किसान का बेटा है और अहीर परिवार से है। दश बारह बीघा की किसानी है पर खेती में इनका मन नहीं लगता है। लक्ष्मी के साथ पढता था और मैट्रिक पास करली थी। पुलिस फौज की भर्ती में लगा रहा पर उसमें भी जुगाङ नहीं हो पाया और आगे पढाई भी नहीं कर पाया। उसका बङा भाई ही सारी खेती बाङी का काम सम्भाले हुए है। चूल्हे दो अवश्य हो गये हैं पर खेती का बंटवारा नहीं हुआ है। इसका कारण यह भी है कि अभी इनके माँ-बाप जिंदा हैं और तेजराम की तरफ रहते हैं। बाप घर में है अत वह पूरी तरह से निश्चिंत है।

तेजराम की बस एक ही जिम्मेदारी है, वह यह कि किसी का ट्रैक्टर किराये पर बुलाकर बङे भाई के साथ फसल की बुवाई करवा देता है, उसके बाद खेतों की तरफ झांक कर देखता भी नहीं है। उसका साठ बरस का बूढा बाप रात दिन खेतों पर खङा रहता है। साथ मे खटती है तेजराम की घरवाली। पशुओं की देखभाल करना, खेत से उनके लिए चारा लाना, उन्हें पानी पिलाना, नहलाना, खाना बनाना आदि सभी काम उसे करने होते हैं। तेजराम की बूढी मां भी पीछे से घर की देखभाल करती है, पोते पोतियों को खिलाती है और घर का छोटा मोटा काम भी करती रहती है पर तेजराम की मौजमस्ती कम नही होती है। दिन भर गांव की चौपाल में बैठकर ताश पीटता है और शाम को पीकर गाली गलौज करता हुआ घर में घुसता है। कौन उसे समझा सकता है, घर का कर्ता धर्ता वही तो है। आये दिन कहीं न कहीं छठी की रात या ऐसा ही कोई न कोई आयोजन होता ही रहता है और सत्संग पार्टी वहां पहुंचती है। तेजराम भी इस सत्संग पार्टी का हिस्सा बन चुका है। रात को जब नशे की हालत में घर पहुंचता है तो बाप को ऐसी ऊंची ऊंची बातें सुनाता है कि बेचारा बुड्ढा सुनकर चुप हो जाता है। मन ही मन कहता कि “वाह बेटा! एक तू ही तो है जो हमें अपनी भक्ति से भवसागर से पार लगायेगा”।

हजारी प्रजापत(भगत जी) की बात करें तो उसकी भी आर्थिक हालत अच्छी नही है। घरों में काम आने वाले बहुत से बर्तन तो अब स्टील के बन गये हैं, केवल पानी पीने के लिए घङा ही होता है जिसकी कुछ पुरानी आदत के लोग मांग करते हैं। इसकी भी जरूरत धीरे धीरे घटती जा रही है, क्योंकि रेफ्रीजरेटर अब देहात तक पहुंच गये हैं। इसके साथ ही न तो उपयुक्त प्रकार की मिट्टी ही मिलती है और न घङों को पकाने के लिए बालन(इंधन)। इसलिए इस कारोबार में बरकत नहीं रही है।

पर भगत जी ने अब राजगिरी का काम सीख लिया है जिसमें अच्छी मजदूरी मिल जाती है। परिवार बङा है, जिम्मेदारियां भी बहुत हैं पर यह सत्संग व दारू पीने की लत उसे उबरने नहीं देती है। सत्संग करना कोई बुरी बात नहीं है पर जिस तरह का सत्संग ये लोग करते हैं वह उद्धार करने वाला नहीं है।

मांगे भैया की बात करें तो मानना पङेगा कि वह कुछ समझदारी रखता है। वह है तो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पर अपनी गृहस्थी को ठीक करह से सम्भाले हुए है। माँ-बाप का अकेला ही लङका है, दो बङी बहिनों की शादी हो चुकी है और वे अपनी गृहस्थी में खुश हैं। उसे पीने आदि का ज्यादा शोक नहीं है, साथ में बैठने पर नाम मात्र की ले लेता है पर यदि कोई उससे पिलाने की कहे तो साफ मना कर देता है “भैया मैं चपरासी आदमीं, कहां से पिलाऊं आपको दारू“। वह केवल संगत में बैठ जाता है, सेवा पानी करता है और गाने में पीछे से टेर लगा देता है, ढोलकी पर हाथ थपथपाता है।

सत्संग सुबह चार बजे तक चला, अंत में एक आरती का गान हुआ और सभी लोग चले गये अपने अपने घर। अब सुबह देर तक सोते रहेंगे, काम धंधे की कोई चिंता नही है।



**सप्तम भाग**

अरे गरीबा ,,,,

हां सेठ दादा....

बेटा, गेहुं तो कट गया है, दाना कब निकलवा रहे हो,,,

दादा, निकलवाऊंगा, अभी ट्रेक्टर वाला ज्यादा पैसे मांग रहा है, पर जैसे ही कोई ठीक दामों में निकालने वाला मिल जाएगा, निकलवा लूंगा, आपको साथ ले चलूंगा।

जल्दी कर बेटा, हिसाब किताब कर नक्की करें, और भी काम करने हैं हमें।

हां दादा, जल्दी ही करूंगा।

सेठ चला गया अपना तगादा करके। सेठ को चिंता है कि गरीबा कहीं बेईमानी कर कुछ गेहुं अपने घर ना ले आये।

गरीबा ने गेहुं निकलवाया जहां सेठ छाती पर ही खङा रहा। सेठ ने अपने हिस्से का गेहुं अलग निकाल कर रख लिया, बाकी बचे गेहुं का वहीं हिसाब कर उसे भी अपने पाले में डाल लिया।

अच्छा गरीबा, दुकान पर आ जाना, तेरे सामने ही बही में हिसाब कर लेंगे. इसमें से एक दो बोरी ले जाना दुकान से, यहां से कैसे ले जा पायेगा।

ठीक है दादा, वहीं दुकान पर आता हूं, गरीबा बोला।

बाप दुखिया के मरने पर गरीबा ने उसके अंतिम संस्कार के लिए साहुकार से जो कर्ज लिया था वह इसी के खाते में चढ गया था क्योंकि बही में नाम बाप की जगह अब बेटे का चढ गया। अब जब फ़सल का समय आया तो साहुकार ने दो रुपया सैकङा के हिसाब के ब्याज लगाकर अपने कर्ज का हिसाब कराया। फ़सल की आमद से ब्याज भी पूरा नहीं हो पाया, तथा ब्याज को जोङ कर सारी रकम मूल बन गयी, अगले छ: माह में हिसाब करने के लिए। बेचारे के पास अगली फसल के आने तक खाने के लिए अनाज भी नहीं बचा। दो बोरी गेहुं लाया जिसकी रकम उसके खाते में और जुङ गयी। आगे की जरूरत के लिए भी साहुकार जो बैठा है उधार में अनाज देने को, उसी का पैदा किया हुआ अनाज अब उसे उधार में मिलेगा।



अष्टम भाग

अरे गरीबा,,, क्या कर रहे हो बेटा- सेठ किरोङीमल ने आवाज दी।

कुछ नहीं दादा, अभी अपने खेत पर जाने की तैयारी कर रहा था, सोच रह हूं कि कुछ झाङ झूंडी साफ कर दूं।

अच्छा ठीक है. खेत पर तो चले जाना पर यह ग्राहक आये हैं, अपनी भैंस दिखाओ इन्हें, सेठ मुस्कराते हुए बोले।

गरीबा के परिवार ने तीन-चार वर्षों से एक भैंस पाली थी। साहुकार की निगाह पहले से ही उस पर लगी हुई थी और इसी करण से वह गरीबा को कर्ज देने में कभी ना-नुकुर नहीं करता था। भैंस ब्याने को आई और बणिया चक्कर काटने लग गया अपनी रकम वसूल करने के लिए। गरीबा हाथ जोङ-जोङ कर समय मांग रहा है कि माई बाप! भैंस बिक जाने दो, सारा कर्ज चुकता कर दूंगा। इधर दोनों बच्चे रोज झुक झुक कर भैंस के थनों को देखते हैं कि अब यह ब्यायेगी और दूध पीने को मिलेगा। इन बच्चों को यह थोङे ही पता है कि बणिए की गिद्ध दृष्टि पहले से ही भैंस पर टिकी है। भैंस का कोई भी खरीद दार आता है तो बणिया पहले से ही टपक पङता है और ग्राहक से सीधे तौर पर कह देता है कि भैंस उसकी है और इसका लेन देन उसकी दुकान पर ही होगा।

हां दादा दिखा दीजिए भैंस, वही बंधी है सामने।

ग्राहक भैंस का चारों तरफ से, ऊपर नीचे से अच्छी तरह मुआयना करता है और ...

हां तो सेठ जी बताइए अपनी भैंस के दाम, ग्राहक बोला।

भई आपने भैंस तो देखी ही है, कितनी अच्छी है, पूरे दस महिने दूध देती है, मैं तो स्वयं बरत चुका हूं, बारहवें महिने ब्याई रहती है। सो भई भैंस के पूरे साठ हजार लूंगा, सेठ ने बनते हुए कहा।

नहीं सेठ, इतने की तो भैंस कतई नही है, तीसरी बार ब्या रही है, और कितना दूध देगी, इसका भी कुछ अनुमान नही है। ब्याई रही होती तो कुछ तसल्ली भी होती। सो मैं तो इस समय इसके चालीस हजार से ज्यादा नहीं दे सकता। देना है तो बोलो वर्ना मैं चलता हूं।

भैंस की कीमत सुनकर गरीबा का तो दिल ही बैठ गया, कितनी आस लगाए बैठे थे दोनों पति पत्नि, रोज ही सपने बुनते थे कि साठ-सत्तर हजार की चली जाएगी तो सेठ का कर्ज तो लगभग पूरा हो ही जाएगा।

अरे भैया, यह हष्टपुष्ट भैंस आपको चालीस हजार की लगती है, ये चालीस हजार तो बहुत कम हैं, देखो, भैंस लेना है तो पचास हजार तो देना ही होगा, आखिरकार ताजा ब्याने वाली भैंस है, सेठ ने कुछ नाटकीय अंदाज में कहा।

भाव ताव होता हुआ देख गरीबा का दिल धक धक कर रहा है पर बोल कुछ नहीं पा रहा है, सेठ दादा जो प्रयास कर रहे हैं।

देखो सेठ, आखिरी बात बोलूंगा, पैंतालीस हजार में देना है तो बोलो, इससे ज्यादा नहीं दे सकता, ग्राहक उठने का नाटक करने लगा।

देख भई गरीबा, तुम्हारे सामने मैने काफी कौशिश कर ली, पहली बार जो मोल लगा है, पता नहीं आगे कोई ग्राहक आये या नहीं आये, महिने बाद कोई आया तो इतनी भी रकम ना मिले, और दो-चार हजार तो इसके ब्याने पर ही खर्च हो जाएंगे, सो बोल... क्या करें, सेठ ने गरीबा को एक तरफ ले जाकर पट्टी पढाई।

मैं क्या कहूं दादा, जैसा आप ठीक समझो, गरीबा ने मजबूरी में सिर हिला दिया।

अच्छा भैया, तुम्हारी बात मान लेते हैं, चलिए दुकान पर और रकम गिनाइये और भैंस खोल कर ले जाइए। पर भैया, भैंस की रस्सी पकङते समय पांच सौ रूपये गरीबा के हाथ पर जरूर रखना, सेठ ने गरीबा की ओर आत्ममीय भाव दर्शाते हुए कहा।

सेठ ग्राहक को लेकर दुकान पर जाता है। गरीबा कुछ बोल नहीं पाता है, हर बात में सिर हिलाता रहता है। गरीब का धन कौङियों के भाव, सौदेबाजी करने की ताकत उसमें कहां? बणिया जो भी मोल तय करता है, उसी पर सौदा हो जाता है और ग्राहक से सारी रकम बणिया स्वयं गिनवा कर अपने पास रख लेता है।

ग्राहक वापिस आता है और गरीबा भारी मन से भैंस की रस्सी ग्राहक को थमा देता है। ग्राहक एक पांच सौ का नोट गरीबा के हाथ पर एक पांच सौ का नोट रखता है जैसे कोई बख्सीस दे रहा हो पर ऐसा करते समय एक दया भाव अवश्य उसके चेहरे पर उभर रहा है कि भैस का मालिक कोई और पर सौदा कर रहा है कोई और। फसल बो रहा है कोई और तो काट रहा है कोई दूसरा ही।

एक पांच सौ रु. का नोट पाकर कृतज्ञता से ग्राहक को देख रहा है, उसकी औरत व बच्चे जाती हुई भैंस को टुकुर-टुकुर देखते रह जाते हैं। इसके बाद गरीबा बणिये की दुकान पर जाता है, हिसाब करता है और बाकी बचे कर्ज पर अपना अंगूठा लगा देता है।

ले गरीबा मुंह मीठा कर बेटा, आज तेरी भैंस बिकी है, (सेठ एक गुङ की डली गरीबा के हाथ पर धर देता है), और हां! सकुचाना मत, जब भी पैसे, धेले, अनाज-दाने की जरूरत पङे, मेरे पास बेहिचक चले आना, मैं तो सदा ही तुम्हारे परिवार की मदद करता आया हूं. बङी ही आत्मीयता दिखाते हुए बोला सेठ।

हां सेठ दादा, आप ही का सहारा है हम गरीबों को. गरीबा कृतज्ञता के बोझ तले दबा हुआ कर्ज का थोङा सा भार हल्का कर और गुङ की डली पल्लै में बांध घर लौटता है और बच्चों का मुंह मीठा करता है। उसका परिवार उस दिन लुटा पिटा सा महसूस करता है। किसी ने सच ही कहा है:-

जाणनहारा जाणिए, बणिया तेरी बाण ।

बिनु छाण्या लोहु पीवै, पाणी पीवै छाण।

इस बणिया समाज के विषय एक और कहावत मशहूर है कि कुत्ता तो अन्जान ब्यक्ति को काटता है पर बणिया जानकार ब्यक्ति को काटता है और यह भी वास्तविकता है: “ढाई अक्षर ब्याज के, पढे सो पूजित होय”।

बापू... आप दिन रात इतनी मेहनत करते हो फिर भी हम कंगाली में गुजारा करते हैं और यह सेठ कुछ भी मेहनत नही करता पर फिर भी ऐश कर रहा है... बेटे सूरज ने एक यक्ष प्रश्न कर दिया।

हां बेटे.... हम कंगाल हैं क्योंकि हम अनपढ हैं। पहले तो हमारी सामाजिक ब्यवस्ठा ने हमें पढने नहीं दिया और अब हमारी गरीबी बाधा बनी हुई है।तुम्हारे दादाजी को तो बीमारी ने जकङ लिया था, तो मैं आगे कैसे पढ पाता, लग गया मजदूरी करने, परिवार का पेट जो पालना था, पर अब तू मन लगा कर पढ और अपने प्रवीण चाचा की तरह सरकारी नौकरी कर के अपनी गरीबी दूर कर.... गरीबा ने समझाते हुए कहा।

हां बापू... मैं भी खूब पढाई करूंगा और बङा आदमी बनूंगा।

गरीबा ने भावुकता से बेटे को गले लगाया... हां बेटे... तुझे यह करना ही होगा।

दूसरे दिन ही साहूकार फिर गरीबा के यहां पहुंच जाता है और बङी ही मीठी भाषा में बोलता है “अरे गरीबा बेटा, तेरी भैंस तो बिक गय़ी है और तेरी घरवाली के पास अब कोई काम भी नहीं बचा है, अब तू एक काम कर, मेरे पास जो भैंस है उसको तू ले आ, तीन माह की हरी हो गयी है और अब तीन-चार महिने तो कम से कम दूध देगी ही, तेरे बाल बच्चों का काम चल जायेगा। ब्याने पर कुछ रकम दे ही जायेगी। और अभी तू कौन सी रकम चुका रहा है, समझो भैंस घर की ही है”।

“अरे नहीं सेठ जी, अभी लगभग 6-7 महिने देखभाल करनी पङेगी, कुछ चना बिनौला खली खिलाएंगे तो ही वह दो सेर धार देगी, इस मंहंगाई में कुछ पङता नहीं पङेगा। ऊपर से ब्याज चढेगा सो अलग” गरीबा अपनी मजबूरी बताने लगा।

“अरे गरीबा ! भई तू तो ब्यर्थ में घबरा रहा है। घर की ही भैंस है, तुझे घाटा नहीं होने दूंगा। चल मेरे साथ, अभी खोल कर ले आ, बच्चे दूध धार पी लेंगे”, सेठ ने अपना फैसला थोप ही दिया।

गरीबा बच्चों की ओर देखता है, वे मानों कह रहे हों कि बापू, ठीक ही तो कह रहा है सेठ दादा।

गरीबा सेठ के साथ जाकर भैंस ले आता है। रास्ते में लोग ब्यंग भी करते हैं, यार यह सेठ तुझे झांसे में ले ही लेता है। देख लेना, इस भैंस की कितनी ऊंची रकम तुम्हारे खाते में लिखेगा। गरीबा भी सब जानता है पर मजबूर है। सेठ उसे नकद रकम तो देगा नहीं कि ले गरीबा, अपनी मरजी से भैंस पसंद कर के खरीद ला। सेठ ने भैंस का 6-7 महिने खूब दूध पी लिया और अब जब बिना दूध के खाली 6-7 महिने खिलाना पिलाना पङ रहा है तो गरीबा के मत्थे मढ दी। गरीबा तो बना ही है मेहनत करने के लिए।



नवम भाग

अरे प्रवीण,, तू तो अर्थशास्त्र का विद्यार्थी है, और इस विषय में तेरी विशेष रुचि भी है। कल के सत्संग के बारे में तेरा क्या विचार है,,,

हां बापू,,, अर्थशास्त्र हर मानव के लिए बहुत ही सहायक है, इसकी शिक्षाएं हरएक के लिए उपयोगी हैं और इसका सम्बंध हर इंसान से है, गरीब व अमीर सभी पर इसके सिद्धांत लागू होते हैं। कल के सत्संग का नजारा कुछ देर देखने के बाद मैं अपने बिस्तर में लेट गया था, किताब खोलकर कुछ पढने का मन ही नहीं किया क्योंकि कल जो ब्यावहारिक अर्थशास्त्र मैने देखा, सारा ध्यान, विचार उसी की ओर जा रहा था। कौन कह सकता है कि ये लोग निर्धन हैं। धन तो इनके पास है पर उसका दुरुपयोग कर रहे हैं। नौकरी करते है, मजदूरी करते है और अच्छा खासा कमा लेते हैं पर उसे ठीक तरह से काम में नहीं लेते है और यही इनकी समस्याओं की जङ है। लखमी का छोटा भाई भी तो मजदूरी ही करता है पर उसकी आर्थिक हालत उस से कहीं अच्छी है। और आप भी तो दिहाङी मजदूरी ही करते हैं और हमारा भलीभांति पोषण कर रहे हैं, हम तीनों भाई बहिनों बहिनों की पढाई का खर्च उठा रहे हैं, हमे किसी चीज की कमी नहीं होने दे रहे है।

हां बेटा, मेरी तो यही कौशिश रहती है कि तुम लोगों की पढाई में कोई बाधा न पहुंचे और पढ लिख कर तुम लोग भी एक अच्छी जिंदगी जी सको।

हां बापू,, अर्थशास्त्र के सिद्धांत वह जो हमें पढाए जा रहे हैं वे गलत नहीं हैं, अर्थशास्त्रियों ने मानव के ब्यावहारिक दृष्टिकोण के आधार पर ही इन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है, जो समझ ले तो पार लग जाए वरना डूबना निश्चित है। ये जो सत्संग का आयोजन कर रहे हैं वास्तव में सत्संगी नहीं हैं बल्कि कुसंगी हैं।

प्रवीण, ये जो नियम, सिद्धांत तुम पढ रहे हो, वे इन लोगों के किस काम के,,

बापू ,, वैसे तो यह एक आश्चर्य की बात लगती है कि इन निर्धनों के लिए भी कोई अर्थ शास्त्र हो सकता है क्योंकि जिसका धन से कोई सम्बंध नही उसका अर्थशास्त्र से क्या सम्बंध हो सकता है। एडमस्मिथ जैसे प्राचीन अर्थशास्त्रियों ने तो अर्थशास्त्र को धन का शास्त्र माना है, अत: जिसके पास धन ही नहीं, अर्थात एक निर्धन व्यक्ति का अर्थशास्त्र से क्या सम्बध ? इन सत्संगियों का अर्थशास्त्र से क्या लेना देना ?

परंतु बापू,,,परिभाषाएं देश, काल व वातावरण के अनुसार बदलती भी रहती हैं। वर्तमान समय के अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को विस्तृत रूप में देखा और पाया कि मनुष्य की अधिक से अधिक क्रियाएं प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में अर्थ अर्थात धन से सम्बंध रखती हैं। एक निर्धन से निर्धन प्राणी की भी कुछ मूलभूत आवश्यकताएं होती हैं जिनको पूरा किए बिना वह जिन्दा नहीं रह सकता और यही क्रियाएं उसे अर्थशास्त्र रूपी ज्ञान से जोडती हैं। और चूंकि एक निर्धन व्यक्ति चाहे वह मजदूर हो (सरकारी अथवा निजि क्षेत्र में काम करने वाला) निजि तौर पर कार्य करने वाला कारीगर, गली मोहल्लों में फेरी लगाकर सामान बेचने वाला, सङक पर चाय, पान का खोखा रखने वाला, गरीब घर का बेरोजगार युवक और यहां तक कि एक भिखारी की भी कुछ आर्थिक क्रियाएं होती हैं जिनसे उसकी मूलभूत आवश्यक्ताओं की पूर्ति होती हैं और जिससे वह इस संसार में जिन्दा रहता है। अत: उसे कुछ मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान होना ही चाहिए अन्यथा फिर ऐसी ही घटनाएं होती रहेंगी जैसे कि एक ब्यापारी दम्पत्ति ने आर्थिक हालातों से तंग आकर बच्चों सहित आत्म ह्त्या करली, पैसा ना कमाकर लाने के कारण पत्नि ने झगडा किया और पति ने उसका गला दबा दिया। आर्थिक तंगी से ऊब कर रेलगाडी के सामने कूद कर अथवा जहर खाकर आत्म-हत्या करने वालों के अनेक किस्से अखबारों में छपते रहते हैं। इनका कारण यही है कि ऐसे व्यक्ति, परिवार, पति, पत्नियां व बेरोजगार युवक अपना भला-बुरा सोच नहीं पाते हैं या सोचने की स्थिति में नहीं हैं क्योंकि उन्हें इनका ज्ञान ही नही है। समाज में ऐसे किस्से लोगों की जुबान पर रहते ही हैं कि फलां व्यक्ति सम्भल गया और अपने परिवार की गाडी को पटरी पर ला दिया या अमुक व्यक्ति ने अपनी गंदी आदतों से अपने परिवार को बर्बाद कर दिया। ऐसी बातों में बडी गहराई होती है कि एक कैसे सम्भल गया और दूसरा कैसे बर्बाद हो गया। पर जो बर्बाद हो गया वह अपनी किस्मत को ही कोसता फिरेगा, वह ना तो अपनी गल्तियों को ही देखेगा और ना ही उन्हें मानेगा।

बङी ही उपयोगी हैं तुम्हारे अर्थशास्त्र की शिक्षाएं, आश्चर्य से कहा बुधराम ने।

जैसे मैं बताया करता हूं, पहले लोग बहुत ही निर्धन थे क्योंकि रोजगार के साधन नहीं थे और रोजगार भी पुश्तैनी ही थे और कृषि से जुङे थे। उन पुश्तैनी कार्यों से किसी को नकद कमाई नहीं होती थी। बढई हल, गाङी आदि की मरम्मत करता था, उसे भी फसल के समय अनाज के रूप में ही मेहनताना मिलता था। चमार साल भर कूए से पानी निकालने वाले चङस की मरम्मत करता था, उसे भी फसल पर ही अनाज भूसा आदि मिलता था। यही हाल कुम्हार व अन्य लोगों का था। दलित समाज के लोगों के पास तो कृषि-भूमि थी ही नहीं, किसी गांव में एकाध परिवार के पास थोङी बहुत जमीन हुई तो उससे ज्यादा फर्क नहीं पङता था। बाकी लोग एक तरह से बंधुआ मजदूरों की हैसियत से ही काम करते थे। फसल के समय ही कुछ अनाज इकट्ठा हो पाता था जो अगली फसल तक नहीं चल पाता था। अनाज के दाने पङे हैं घर में, उसी से नमक लाना है, मिर्च लानी हैं और चटनी पीस कर गांव बस्ती से मांग कर लाए हुए मट्ठे के साथ रोटियां खा लेनी हैं। बहुत हो गया तो प्राकृतिक तौर पर जो साग भाजी मिल जाती थी उसे पका लिया जाता था। सर्दियों के मौसम मे चने का साग, गुवार फली, गाजर, कचरी आदि सुखाकर रख ली जाती थी जिनकी गर्मियों व बरसात के मौसम में सब्जियां बन जाती थी। बरसात के समय घर आंगन में लौकी, तरोई आदि की बेल उगा लेते थे जिससे छौंक का साग खाने को मिल पाता था। गांव में माली लोग सब्जियां बेचने आया करते थे जो अक्सर आलू, बैंगन व कद्दू आदि लाते थे और वह भी अनाज के बदले में ही खरीदी जाती थी।

अर्थात बापू तब बार्टर सिस्टम था,

यह बार्टर सिस्टम क्या होता है, मुझे नहीं मालुम, बता तो जरा..

बापू.. किसी वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना, जैसे कि आपने बताया कि अनाज के बदले किराने का सामान या सब्जियां खरीदना, और अपनी वस्तु के बदले अनाज लेना। इसी को अर्थशास्त्र में बार्टर सिस्टम कहते हैं, स्पष्ट किया प्रवीण ने।

पहले लोगों की आवश्यकताएं बहुत ही सीमित होती थी, मुख्य आवश्यकता अनाज की ही होती थी। गर्मियों के समय प्याज बहुत सस्ती मिल जाती थी, उसी को फोङकर उसके साथ रोटी खा लेते थे अथवा चटनी पीस लेते थे और उसी की तरकारी भी बन जाती थी। अनाजों में चना ही सस्ता होता था, अत: उसकी दाल या कढी अक्सर हर परिवार में बना ही करती थी। हर समय मजदूरी तो मिलती नहीं थी, फसल के समय ही थोङी बहुत मजदूरी करने से जो पैसे मिलते थे उससे ऊपर के खर्च जैसे बहिन बेटी को देना, रिश्तेदारियां निभाना आदि निपटाते थे। अधिकतर लोगों का सेठजी के यहां उधारी खाता ही चलता था कुछ अनाज बेचकर, मजदूरी करके या कोई पशु बेचकर चुकाया ही दिया जाता था। हां, एक अच्छी बात यह थी कि वर्तमान समय की तरह 60-70 के दशक से पूर्व दारू-शराब का चलन नहीं था, पीते कहां से, जेब तो खाली होती थी। इसके साथ ही शराब पीने को बङी ही घृणा की दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि दारू पीने वाले गांव-बस्ती में कुछ ही लोग होते थे। बहुत से खेतिहर जाति के लोगों की हालत भी विशेष अच्छी नहीं थी। बस केवल खाने भर के दाने पैदा कर लिया करते थे।

बापू, पहले ये किसान लोग भी आत्महत्या तो नहीं करते होंगे जैसे कि आज कर रहे हैं,, प्रश्न किया प्रवीण ने।

हां प्रवीण,,,, पर अब समय बहुत कुछ बदल गया है। पहले किसान इसी में खुश था कि उसने खाने का अनाज पैदा कर लिया, पर आज अनाज तो बहुतायत में पैदा कर रहा है पर उसकी लागत ज्यादा आ रही है, ऊपर से परिवार के खर्चे भी बढ गये हैं, अच्छा मकान चाहिए, बच्चों को मोटर साइकिल, मोबाइल फोन व अच्छे कपङे भी चाहिए जिसके कारण खेती के नाम पर लिया हुआ कर्जा चुका नहीं पाता है।

देश का नागरिक स्वतंत्र है। हर किसी को शिक्षा पाने का अधिकार है तथा अपनी रुचि के अनुसार काम-धंधा भी कर सकता है। पर मानव भौतिक साधन युक्त जीवन जीने का आदी हो गया है, उसकी आर्थिक क्रियाओं का दायरा बढ गया है जिनमें सामंजस्य बैठा कर रखना कठिन काम हो गया है।

प्रवीण के मन में यही प्रश्न बार बार उठ रहा है कि क्या मजबूरियां हैं लखमी भैया के साथ जो वह इस तरह से अपने आप को बरबाद कर रहा है। उसका बापू भी तो एक दिहाङी मजदूर ही है पर एक सुकून भरी जिंदगी दे रहा है पूरे परिवार को। अपना काम इतनी मेहनत व लगन से करता है कि लोग कभी उन्हें ठाली रहने ही नहीं देते हैं। उसका छोटा भाई व बहिन भी स्कूल जातें हैं और उसके बापू ने ठान रखी है कि कुछ भी हो, अपने बच्चों को पूरी शिक्षा दिलानी है। उसकी मां कभी मजदूरी करने नहीं जाती है पर दिन भर घर के काम व भैंस की देखभाल में लगी रहती है। उसके कारण परिवार को सदैव दूध, दही खाने को मिलता रहता है। यहां तक कि आस-पङोस व लखमी भैया व मांगे चाचा के घर भी नियमित रूप से छाछ जाती रहती है। पर इस गरीबा में तो कोई दुर्ब्यसन भी नहीं हैं फिर भी वह कंगाली में जी रहा है। स्पष्ट कारण तो यही है कि यह सेठ इस परिवार को दीमक की तरह खाता रहता है, इससे पिंड छूटे तो ही इसका उद्धार हो सकता है।



दशम भाग

कुछ समय बीता।

लादू ताऊ का खटिया में पङे हैं, लगता है अंत समय आ गया है अब उसका। काम पर जाने की हिम्मत नहीं रही है। दारू तो अब कभी कभार ही नसीब होती है और बीङी के एक बंडल के लिए भी मुश्किल होगयी है। बुढिया कभी कभी दस-बीस रुपया लङके से झपटती है और दो चार दिन के लिए बुढ्ढे की बीङियों का इंतजाम करती है, पति को तरसते तो देख नहीं सकती है।

इन दो बेटों के अलावा दो बेटियां भी हैं जिनकी शादी कर रखी है पर बङा दामाद भी है इन्ही की तरह पूरा पहुंचा हुआ। जब भी आता है एक अच्छी पार्टी जमती है। मीट-मुर्गा बनता है और बोतल खुल जाती है। लादू का छोटा बेटा जीजाजी की काफी आवभगत करता है, एक दो पङोसी पियक्कङ भी आ बैठते हैं। लादू उनके बीच में नहीं बैठता है पर एक ओर बैठे बैठे ही उसकी सेवा होती रहती है। जब फौजी बेटा छुट्टी आता है तो ऐसी पार्टियां उसके यहां होती हैं। छोटा दामाद काफी शरीफ है, पीने पिलाने से एकदम दूर है। एक प्राईवेट फैक्ट्री में काम करता है और जो कुछ कमाता है, सब परिवार की देखभाल में ही खर्च करता है। इनके यहां कभी कभार या बार-त्यौंहार के समय ही आता है और ज्यादा समय ठहरता भी नहीं है, यहां का माहौल उसके बिल्कुल विपरीत है।

साल भर खटिया में पङे रहने के बाद वह आखरी दिन भी आ गया जब लादू ताऊ ने आखरी सांस ली। उम्र तो साठ के पार ही हुई थी पर साल भर खटिया में पङे रहने के कारण सूखकर अस्सी साल से कम के नहीं लग रहे थे। बीमारी क्या थी, कौन बताए, ना कभी किसी डाक्टर को दिखाया और ना ही कोई दवा दिलवाई। यही कहा जा रहा था कि दमा ने जोर पकङ लिया था और दमा का कोई इलाज नहीं है। बुढिया छाती पीट-पीट कर रोने लगी और बहु ने भी जोर जोर से रोकर लोक-लाज जताई।

बङी बहु भी आकर कुछ आंसु गिराने लगी- “हाय मुझे तो इनकी सेवा करने का मौका ही नहीं दिया इन लोगों ने”।

फौजी बेटे को फोन पर सूचना दी गयी पर उसे आने में तीन दिन लगे। शव का दाह संस्कार तो कर ही दिया गया था पर आते ही घर भर को लगा फटकारने- “क्या हो गया था, मुझे पहले खबर नहीं कर सकते थे, किसी डाक्टर को दिखा दिया होता, पैसे मैं भेज देता”।

दूर खङे लोग फुसफुसा रहे थे “जब रोज अपनी महारानी से मोबाइल पर बतियाता रहता था तब पता नहीं चला कि बुढ्ढा मरने वाला है। और जब खटिया में पङा पङा खांसता रहता था तब क्या महारानी नहीं सुनती थी, कभी एक कप चाय की तो पूछी नहीं कि दम उखङी हुई है, कुछ आराम मिल जायेगा, अब चले हैं इलाज कराने”।

तभी प्रवीण का पिता बुधराम बीच बचाव करते हुए बोला “अब हो गया सो हो गया, इस पर झगङा करने से क्या फायदा। अब अपना आगे का काम निपटाओ। जो भी क्रियाक्रम करना है, करो और अपनी आगे की गृहस्थी को सम्भालो ।“

लोग चले गये कुछ समझा बुझाकर। अब दोनो भाईयों के बीच बात होने लगी।

छोटे ने कहा.... कि मेरे पास तो कुछ भी नही है, इतने दिनों से घर का काम अकेला चला रहा हूं। मां-बाप की देखभाल मैं अकेला ही करता आया हूं। दाह संस्कार में भी काफी खर्च हो गया है, अब अंतिम क्रियाक्रम का खर्च तो तुम उठालो।

... खाने का अनाज तो खेत से ही मिल जाता है फिर ऊपर से कितना खर्च कर लेते हो, सीधा क्यों नही कहते कि सब पीने में उङा देते हो.. तर्क दिया फौजी ने।

दोनो भाइयों में काफी तू तू मै मै हुई। समाज बिरादरी का मामला है, इज्जत तो बनाकर ऱखनी है। बाप की अस्थियों को गंगाजी पहुंचाने का इंतजाम हुआ। पूरा घर, बेटी दामाद सभी तैयार हो गये गंगाजी जाने को, इसलिए दो टाटा सूमो किराए पर ली गयी, काफी खर्च किया गया। ऐसा लग रहा था मानो अब उन्हें स्वर्ग की सीढी चढा कर ही आएंगे। कुछ समझदार लोगों ने खासकर बुधराम व प्रवीण दोनों बाप बेटों ने समझाया कि भोज का झंझट क्यों पालते हो, पर फोजी को अपनी नाक ऊंची करनी थी, सो बारह दिन बाद अच्छा खासा बिरादरी भोज भी किया। फौजी बेटे ने तो अपने पास से खर्चा कर दिया पर छोटे बेटे ने कर्ज लेकर अपना हिस्सा अदा किया।

बाप के मरने के बाद दोनो भाइयों में पूरी तरह से अलगाव हो गया। खेत का आधा हिस्सा फौजी भाई ने अपने नाम करवाना चाहा। लोगों ने काफी समझाया कि इसके पास कोई और साधन नहीं है, तुम्हारे पास तो नौकरी है, अत. खेत इसी के पास रहने दे, पर फौजी की घरवाली एक दम अङ गयी कि घर व जमीन में बराबर का हिस्सा लेगी। चूंकि अभी उनकी मां जिंदा थी, सो अभी जमीन का बंटवारा नहीं हो सका पर दोनो भाईयों के बीच अच्छी खासी तनातनी हो गयी।



एकादश भाग

साइकिल की घंटी बजती है, पोस्टमैन दरवाजे पर खङा है।

बुधराम बाहर निकलता है और पोस्टमैन उसे एक पंजीकृत लिफाफा देते हैं। खोलकर देखते हैं तो खुशी से उछल पङते हैं।

अरे प्रवीण की मा. देखो तो क्या आया है, तुम्हारे प्रवीण की नोकरी का पत्र है। यह तो काँलेज में ब्याख्याता बन गया है।

यह ब्याख्याता क्या होता है जी, सकूल में मास्टर नहीं बना,, शंकित सी हो सुखदेयी ने पूछा

अरे ब्याख्याता तो स्कूल मास्टर से भी बङा होता है, यह काँलेज में बीए करने वाले बच्चों को पढाएगा।

सच में इतना बङा मास्टर हो गया कि बङे बच्चों को पढाएगा मेरा बेटा..

अरी भाग्यवान.. मास्टर नहीं. ब्याख्याता, यह नही बोल पाती तो सीधे लेक्चरार बोल दो, बुधराम ने हंसते हुए कहा।

इतनी ही देर में प्रवीण आ गया, देखते ही सुखदेयी बोल पङी अरे प्रवीण,, तू तो लेक्चर बन गया, यह देख तेरे बापू के हाथ में तेरी नौकरी की चिट्ठी और कहते हुए प्रवीण को अपनी छाती से लगा लिया।

प्रवीण ने नियुक्ति पत्र देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, तुरंत मां बापू के चरणों में झुक गया। बुधराम ने उसे

अपने सीने से लगा लिया।

बधाई हो सूरज भैया, यह तोबहुत ही खुशी का समाचार है... गरीबा ने जैसे ही सुना, दौङता हुआ आया और साथ ही चाचा, चाची के पैर छू कर बधाई दी

धन्यवाद भाई, और बता, सूरज की पढाई कैसी चल रही है..प्रवीण ने पूछा।

ठीक ही तरह से कर रहा है अभी तो, उसके मास्टरजी मिले थे, काफी प्रशंसा कर रहे थे सूरज की।

हां, बहुत ध्यान देना है, इस साल उसकी दशवीं की बोर्ड की परीक्षा है, यह पहली मंजिल अच्छी तरह से पार कर ली तो आगे के रास्ते खुल जाते हैं...

हां प्रवीण भैया, हम तो उसे कुछ भी काम करने को नहीं कहते हैं, अपनी इच्छा से ही पढाई में लगा रहता है, बीच बीच में घर की कुछ सफाई आदि करने लग जाता है, बाकी बाहर खेलने कम ही जाता है।

ठीक है, बीच बीच में दिमाग को भी कुछ आराम देना ही चाहिए, और तेरी छुटकी...

हां भैया, वह भी अपने भाई को देख कर लगी रहती है अपनी पढाई में, दोनों में जैसे होङ सी लगी हई है। दादी से थोङी बहुत बतिया लेती है पर सूरज को परेशान नहीं करती है,,, गरीबा बङे उत्साह में होकर बताने लगा।

यही तो बङी अच्छी बात है, देखना आपके दोनों बच्चे आपका नाम रोशन करेंगे,

आपका आशीर्वाद है भैया जी, आप से ही तो वे प्रेरणा लेते हैं, अपनी स्कूल के अध्यापक भी बच्चों को आपका उदाहरण दे कर लग्न से पढाई करने की बात कहते रहते हैं, जैसा कि सूरज बताया करता है।

वह तो ठीक है भाई, पर मेहनत तो स्वयं को ही करनी पङती है, हम लोग मेहनत करते हैं तो ही अपना पेट पालते हैं पर समाज में जो हमारी मेहनत को लूटने वाले बैठे हैं, उन्हीं के कारण हमारी दुर्दशा होती है, अत ... इन लुटेरों से बच कर रहने की आवश्यकता है।

हां भैया, आपकी बात सौलह आने सही है, ये जो सेठ, साहुकार जैसे लोग ही हम को उबरने नहीं देते हैं।अच्छा भैया,, मैं चलता हूं, अभी खेत पर से आया था तो आपका यह खुशी का समाचार सुना।

ठीक है गरीबा भाई, बहुत बहुत धन्यवाद.

आज प्रवीण के परिवार में खुशी की लहर छाई है। उसने अपना पोस्ट ग्रेज्युवेशन पूरा किया ही है और उसे एक सरकारी काँलेज में ब्याखाता की नौकरी का नियुक्ति पत्र मिला है। लोग आश्चर्य करने लगे कि और बहुत से लोग हैं गांव में जिन्होंने बी.ए., एम.ए. कर रखा है पर ऐसे ही भटक रहे हैं। कुछ लोग यह ब्यंग भी करते हैं कि अनुसूचित जाति का होने से आरक्षण का फायदा मिला है पर इस बात पर ध्यान नहीं जाता कि वह कितना होनहार व लग्नशील है और यह नौकरी उसे उसकी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर मिली है, उसने इस पद की परीक्षा पास की है, लोक सेवा आयोग से चयन हुआ है। उसका ध्यान तो सिर्फ अपनी पढाई और नौकरी हांसिल करने की तरफ ही रहा है ताकि वह अपने कृषकाय बाप, जो कङी मेहनत करते करते समय से पहले ही वृद्ध हो चुके हैं, को कठोर मेहनत से बचा सके और परिवार को एक नयी दिशा मिल जाय। आज उसकी यह इच्छा पूरी हो गयी है। कोई सिफारिश नहीं, किसी का कोई एहसान नहीं, अपने बूते पाई है यह मंजिल। उसके बाप के पास इतना पैसा नहीं कि वह साल दो साल महंगी कोचिंग करे और केवल आर्इएएस, पीसीएस बनने के ख्वाबों में ही खोया रहे। अब उसे एक आधार तो मिल ही गया है, आगे की मंजिलें चढना बहुत कुछ आसान हो गया है।

बुधराम का दम फूलने लग गया था कठोर मेनत करते करते। आराम से बैठाकर तो कोई मजदूरी देता नहीं है और उसकी आदत भी नहीं थी काम चोरी करने की। अब उसकी जान में जान आयी है। कह रहा है “बेटा प्रवीण!, अब कल से मैं काम पर कतई नहीं जाऊंगा।“

“हां बापू! अब आपको कोई जरूरत नहीं है काम करने की। आराम से घर बैठो।“ प्रवीण ने भी बङे गर्व से यह बात कही।

तेईस-चोबीस साल की उम्र में ही इतनी अच्छी नौकरी लग गयी है, आस पास में चर्चा का विषय बन गयी। ...अरे बेटा तुझे मास्टर की नौकरी मिल गयी है, यह तो बहुत अच्छी बात है, एक गांव वाले ने कहा।

अरे नहीं काका, यह मास्टर नही, काँलेज में लेक्चरर बना है जो मास्टर से बङा होता है, एक ब्यक्ति ने, जो कुछ पढा लिखा है, स्पष्ट किया।

अरे वाह प्रवीण, तूने तो गांव का नाम रोशन कर दिया, कहते हुए प्रवीण के सिर पर हाथ रख दिया। प्रवीण ने भी उस बुजुर्ग के पांव छू लिए.

अब वह बच्चों को अर्थशास्त्र पढाएगा, हां ब्यावहारिक अर्थशास्त्र, क्योंकि इसने तो लोगों की आर्थिक दशा का नजदीकी से अध्ययन किया है। शहर के जिन धनाढ्य बच्चों ने अर्थशास्त्र पढा भी होगा तो भी क्या समझ पायेंगे भारत के लोगों की आर्थिक समस्याओं को, वे तो केवल सांख्यीकिय आंकङे देखेंगे और किताबी ज्ञान ही बांटेंगे। पढाने से ज्यादा दो चार किताबें लिखेंगे, सरकार से सम्मान पायेंगे, अपने सामाजिक व आर्थिक रुतबे का लाभ उठाते हुए पहुंच जाएंगे किसी ऊंचे सरकारी ओहदे पर और सरकार को सलाह देंगे।



द्वादश भाग

बुधराम... कैसे हो,,,, पूछा काशीराम ने।

समय बीत रहा है आपकी दुआ से भाई साहब,

तो भई, अब बेटे की अच्छी सी सरकारी नौकरी लग गयी है, सो अब शादी वादी कर डाल, इंतजार किस बात का..

भाई जी... अभी अभी तो नौकरी लगी है कुछ दिन तो खाने कमाने दो प्रवीण को, अभी इसकी उम्र ही क्या है,,, और फिर शादी विवाह के लिए कुछ पैसा टका भी तो चाहिए.. बोले बुधराम।

देख भाई,, शादी की उम्र तो हो ही गयी है, अच्छा ही है वक्त पर शादी हो जाय, और फिर लङके वाले हो, पैसे टके की चिंता क्यों करते हो, लङकी वाला सब पूरी कर देगा. मेरी जानकारी में एक परिवार है जो बहुत मालदार है, जो मांगोगे वह देगा, कहो तो बात चलाऊं उनसे।

दहेज लेकर शादी करें, यह तो ठीक नहीं है भाई, और फिर रहीस घर की लङकी हम गरीब लोगों से ऩिभा पाएगी... ऒर फिर प्रवीण भी नहीं चाहता अभी शादी करना, अभी तो उसे अपने छोटे भाई की इंजिनियरिंग पूरी करवानी है, बहिन को पढाना है,,, मुझे तो उसने सभी जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया है, वह जो करे, जैसे भी करे, उसकी मर्जी, दो टूक जबाब दे दिया बुधराम ने।

ठीक है बुधराम भैया, अब आप बङे आदमी बन गये हो, हमारी कहां सुनोगे, चलता हूं, नाराज से होते हुए बोले काशीराम।

अरे बैठो भैया, चाय तो पी लो, और तभी प्रवीण की मां ने दो कप चाय रख दी। दोनो चाय रहे थे कि गांव के पंडित जी आ गये।

प्रणाम पंडित जी, आओ बैठो, बुधराम ने अपनी कुर्सी पंडितजी की ओर कर दी और स्वयं चारपाई पर बैठ गये।

भई पता चला है कि तुम्हारा बेटा काँलेज में लेक्चरार बन गया है,,, बैठते ही बोले पंडित जी।

हां पंडित जी, सब आप लोगों का आशीर्वाद है.. नम्रता से बोले बुधराम।

तो फिर भगवान की भी कुछ सेवा हो जाय, ... चहकते हुए बोले पंडित।

भगवान की सेवा ...उसे तो सदा याद करते हैं, उसकी और सेवा क्या करें,,,

अरे भई, मेरा मतलब हैं भगवान के नाम से लोगों को प्रसाद मिल जाय और कुछ दान दक्षिणा हम जैसे लोगों को भी मिल जाय, चहकते हुए बोले पंडित जी।

तो यह कहो ना कि आपको दान दक्षिणा चाहिए, पर पंडित जी,,,, आपको हम दान दक्षिणा क्यों दें, भगवान को तो कुछ चाहिए नहीं क्योंकि वह तो सबको देता है, लेता किसी से नहीं, और रही बात आपकी, तो फिर आप भी हमारी तरह मेहनत करें, खेती करें, पशु पालन करे, हमारी मेहनत की कमाई में से हिस्सा क्यों मांगते हो, तर्क दिया बुधराम ने।

ना समझ हो बुधराम, हम को तो भगवान ने बनाया ही इस लिए हैं कि आप लोगों को धर्म का मार्ग बताते रहें, आखिर आपको भी तो भगवान के पास जाना है अध्यात्म समझाने लगे पंडित जी।

जब हम भगवान के पास जाएंगे तो स्पष्ट बोल देंगे कि हे भगवान... हमने जी तोङ मेहनत करके अपना जीवन चलाया है, किसी का कुछ छीना नहीं, किसी का कोई बुरा किया नहीं, तो फिर भगवान भी हमसे नाराज होंगे ही नहीं, यह मेरा विश्वास है, भगवान् इतने अन्यायी तो हो नहीं सकते।

अरे मूर्ख,, लङके को सरकारी नौकरी लग गयी तो घमंड में आ गये, यह क्यों भूल रहे हो कि यह सब भगवान की ही कृपा है,, कुछ तैश में होते हुए बोला पंडित।

सोमदत्त भैया, पहले पढने पढाने का अधिकार आपके पास था पर जब आज हमारा बेटा पढाने का काम कर रहा है तो क्या यह भगवान ने दिया है, कहां थे आपके ये भगवान जब आप ही ने मुझे स्कूल में पानी का घङा छूने से मना किया था और हम लोग दिन भर प्यासे ही रह जाते थे और आज हमसे दक्षिणा मांगते हो, हमारी कमाई में से हिस्सा,,, दो टूक उत्तर दिया बुधराम ने।

बुधराम, तुम बौरा गये हो, हमारा नाम लेकर भी बात करने लगे हो, सचमुच इस आरक्षण ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है देखना बहुत पछताओगे जो एक ब्राह्मण का व भगवान का अपमान कर रहे हो।

अरे सोमदत्त...यह क्यों भूल रहे हो कि हम दोनो साथ ही पढते थे, एक ही कक्षा में, फिर बङे छोटे का फर्क कहां से हो गया। हम तो गरीबी के कारण पढ नहीं पाये, पर आप तो सारी सारी सुविधाओं के होते हुए भी न पढ पाए, क्यों.....और पढाई में कितने होशियार थे यह तो सभी जानते हैं।

कुछ और लोग भी वहां आकर बैठ गये, इस वार्तालाप को उत्सुकता से सुनने लगे।

भैया यह आरक्षण न तो आपने दिया और ना ही आपके भगवान नें, बल्कि यह तो हमारे पूज्य बाबा साहेब अम्बेडकर के अथक संघर्षों का परिणाम है और वे ही हमारे सबसे बङे भगवान हैं जिन्होंने हम को आपके नर्क से बाहर निकलने का मार्ग बता दिया, आप रखिए अपने भगवान को अपने पास और हमें करिए माफ... स्पष्ट रूप से कह दिया बुधराम ने।

पंडित जी चले गये, पैर पटकते हुए व बङबङाते हुए।

वाह बुधराम, आपने तो कमाल कर दिया, कहां से आई आप के अंदर इतनी बङी सोच, हम लोग तो खोये रहे भक्ति के भ्रम में, पर असली ज्ञानी तो आप निकले... काशीराम आश्चर्यचकित हो बोले।

नहीं भाई साहब, यह तो जीवन के थपेङों ने मुझे सिखाया है कि कैसे हम लोग खून पसीना एक कर जिंदा रह रहे हैं और कैसे ये सोमदत्त जैसे हमारी ही तरह अनपढ लोग मौज मना रहे हैं।फर्क इतना कि आप लोगों ने इस पर सोच विचार नहीं किया पर मैने इस जाल से निकलने का मन बना लिया था। कबीर का भक्ति का मार्ग कहां गलत है, आवश्यकता है उस पर मनन करने की। आप ही तो कहते हैं न कि . लाल लाल सब कोई कहें और सबके पल्लै लाल, गांठ खोल परख्यो नहीं, इस बिधि रह्यो कंगाल,, सबकी गांठ में लाल बंधा है, सबके पास तिजोरी है, जरूरत है खोलकर देखने की।

वाह चाचा वाह, वाह भैया वाह, कमाल कर दिया आपने तो, उपस्थित लोग एक साथ बोल पङे।



त्रयोदश भाग

बेटे की सरकारी नौकरी लग गयी है, घर में नियमित रूप से वेतन आने लग गया है पर अब उसके सामने एक नई समस्या खङी हो गयी है। नाते रिश्तेदार अब उसके रिश्ते के लिए दबाव डालने लग गये हैं, उसके लिए रिश्तों की लाइन लग गयी। दहेज का लालच दिखा कर समाज के लोगों ने काफी दबाव डालना आरम्भ कर दिया है पर प्रवीण व उसके बापू ने साफ मना कर दिया कि कम से कम दो साल तक विवाह के बारे में सोचेंगे भी नही। कारण स्पष्ट है, छोटे भाई व बहिन की भी पढाई जारी रखनी है। छोटा भाई इंजिनियरिंग की पढाई कर रहा है जिसमें काफी खर्च हो रहा है। और अभी कौन सी उम्र बढ गयी है इसकी, मात्र चौबीस साल, कुछ तो खाने कमाने और मौज करने दो, गृहस्थी में तो आना ही है।

पर लोगों ने ताने मारने जो शुरू कर दिये हैं। बहुत ज्यादा दहेज की इच्छा रखते हैं इसीलिए रिश्ता नहीं कर रहे हैं, एक कहता।

राम राम जी, एक नजदीकी रिश्तेदार अचानक आ गये।

राम राम सा. आइये साहब, बङे दिनों बाद दर्शन दिए।

फुर्सत ही कहां मिलती है काम धंधे में।, बोले मेहमान। पता चला कि आपके कुंवर सा की अच्छी सी नौकरी लग गयी है सो बधाई देने चला आया।

आशीर्वाद है आपका, कांम्पलीमेंट दिया बुधराम ने।

चाय नाश्ता करते हुए बोले मेहमान .. अच्छा तो अब इनकी शादी का क्या विचार है...

जी अभी तो नौकरी लगी ही है, इतनी जल्दी भी क्या है, कुछ खा कमा ले, शादी लायक खर्चे का तो इंतजाम कर ले, फिर सोचेंगे, मेरे पास तो कोङी भी नहीं अभी खर्च करने को।

सोचने वाली क्या बात है, लङकी वाला खुद देखेगा। मेरी नजर में एक परिवार है जो बहुत पैसे वाला है, लङकी के दो दो भाई सरकारी नोकरी में हैं और बाप के पास स्वयं की खेती भी है, जो मांगोगे, देने को तैयार है।

साहब, कहां वह राजा भोज और कहां मैं गंगू तेली, हंसते हुए बोले बुधराम।

अरे भाई,, इसमें हंसने की क्या बात है, लङकी की शादि तो उसे करनी ही है और उसके पास है तो देगा भी, आप नहीं लोगे, कोई दूसरा लेगा,,,,,,,,,

लङकी कुछ पढी लिखी तो होगी ही,,, बुधराम ने सहज ही पूछ लिया।

ना जी ना, लङकी पढी लिखी नहीं है, कोई एक दो क्लास पढी हो तो पता नहीं, पर लङकी सुंदर व सुशीस है, घर के सभी कामों में लगी रहती है। वैसे भी हमारे समाज में कौन पढाता है लङकियों को,,,,मेहमान ने स्वाभाविक तौर पर कहा।

क्यों नहीं साहब,,,हमारी ही लङकी ले हाई स्कूल पास कर ली है और अब प्लस टू की परीक्षा देगी। पास ही में एक गरीब आदमी, जिसका नाम भी गरीबा ही है, अपनी लङकी को पढा रहा है, उसकी लङकी ने आठवीं पास कर ली है। आज के जमाने में पढी लिखी औरत घर गृहस्थी को अच्छी तरह से सम्भाल सकती है, बङे ही गर्वित स्वर में कहा बुधराम ने।

फिर तो साहेब, आपके यहां बात नहीं बन पाएगी, पर कोई बात नहीं, इसी बहाने आपसे मिलना हो गया। आपके विचार जानकर भी बहुत प्रसन्नता हुई. हमारे समाज को अब आपकी तरह से सोचना भी पङेगा। अच्छा अब मै चलता हूं।.....

नहीं साहेब,,, बङी मुश्किल से तो आपके दर्शन हुए हैं और अभी जाना भी चाहते हैं। आज आप यहीं रुकिए, कल आराम से जाइगा,,,, आग्रह सहित बोले बुधराम।

आप मुझे इतना सम्मान दे रहे हैं, बहुत ही धन्यवाद, पर अब तो इजाजत दे दीजिए, फिर कभी समय निकाल कर अवश्य आऊंगा...

लङके की नौकरी का घमंड आ गया है, दूसरा कहता।

आदि आदि, पर बुधराम ने इन पर कोई ध्यान नहीं दिया । परिवार में एक खुशी की नयी किरण फूटी है, उसी का आनंद लेना है।



चतुर्दश भाग

प्रवीण के परिवार से कुछ प्रेरणा ले गरीबा के मन में भी कुछ आत्मविश्वास जागने लगा है। एक दिन एक गांव के पुरोहित ने सलाह दे डाली कि,रे गरीबा ! देखता हूं कि तू कुछ ज्यादा ही परेशान चल रहा है, क्या बात है?

“हां पंडित जी, क्या करूं, जी तोङ मेहनत करता हूँ पर कर्ज का बोझ कम ही नहीं होता है” गरीबा ने भी सहमति जताते हुए कहा।

पंडित जी कुछ अपनी ठुड्डी को सहलाते हुए बोला, “भई गरीबा !, तू एक काम कर, किसी मंगलवार के दिन हनुमान् जी का रोट करदे, देखता हूं तेरी किस्मत कैसे नहीं पलटती है”।

“रहने दीजिये पंडित जी, आपके कहने से ही पिछले साल माता की सवामणी की थी, आप ही ने कहा था कि हमारे किसी पूर्वज की बोली हुई थी जो पूरी नहीं हुई है। मेरे बापू तक को पता नहीं था कि हमारे यहां किसी ने माता की सवामणी बोली थी, मेरी माँ भी नहीं जानती है, पर आपको पता लग गयी और आपकी सलाह मान कर सवामणी कर दी थी। उसका कर्ज अभी तक पूरा नहीं हुआ है। अब आप रखिये अपनी सलाह को अपने ही पास। अब मैं ही कुछ ना कुछ उपाय करूंगा”, गरीबा ने दो टूक उत्तर दे दिया और पंडित अपना सा मुंह लेकर यह कहता हुआ निकल गया, “ठीक है गरीबा, तेरी मर्जी”।

हां गरीबा ने कौशिश की, अपनी मर्जी व बुद्धि से काम लिया, पुश्तैनी सेठ के चंगुल से थोङा निकल कर किसी और जमीदार की कुछ अधिक जमीन अधबंटाई पर ले ली। वह जमींदार कुछ भला आदमी था। मानसून भी अच्छा हुआ और भरपूर फसल भी। उसने इसी फसल की आमद से सेठ का सारा कर्ज उतार दिया, उसकी भैंस की भी रकम चुका दी। अब भैंस उसकी हो गयी है, अच्छा दाम मिलेगा तो बेचेगा वरना परिवार दूध पीयेगा। साथ में एक कसम भी खाई कि जहां तक पार पङेगी, सेठ से कर्ज नहीं नही लेगा, सरकार जो मदद करती है, उसी से काम चलाएगा।अब उसे सेठ के यहां मजबूरी में मजदूरी करने की जरूरत भी नहीं है बल्कि वहीं काम करेगा जहां खरी मजदूरी मिलेगी। अपने बेटे सूरज को अच्छी तरह से पढाएगा ताकि वह इस गरीबी के दलदल में फंसा न रहे, प्रवीण व नवीन की तरह परिवार की दशा व दिशा ही बदल दे। अब वह पांचवीं कक्षा में पहुंच गया है और उसके अध्यापक कहतें हैं कि वह काफी होंशियार बच्चा है तथा पढाई मन लगाकर करता है, पर ध्यान रखना है कि वह किसी कुसंगति में ना पङे क्योंकि बुरी संगति ही बच्चों को अपने रास्ते से भटकाती है।



पञ्चदश भाग

बुद्धराम गांव की चौपाल में बैठे हैं, साथ में कुछ और लोग भी हैं। प्रवीण भी वहीं बैठा है, गरीबा है तथा कुछ स्कूल में पढने वाले बच्चे भी खङे हैं। बुद्धराम सबको सुनाकर बोले कि देखो, हमारी दादी जो लोक कथा सुनाया करती थी वह एकदम सही है और मैने सदा उसी का पालन किया है।

क्या है बाबा वह कहानी, हमें भी सुनाओ ना, एक बच्चा बोल उठा।

हां हां, हम भी सुनना चाहते हैं वह कहानी, सभी एक सुर में बोल उठे और वहीं बैठ गये।

अरे यह कहानी तो बहुत से लोगों ने सुनी होगी और मैने भी कइयों को सुना चुका हूं, पर लोग कहानी का मजा भर लेते हैं और भूल जाते हैं, उसमें क्या संदेश छुपा होता है, उस पर ध्यान नहीं देते हैं, जबकि हर एक लोक कथा में कोई न कोई संदेश व शिक्षा जरूर होती है। वही कहानी मैं फिर से सुनाता हूँ.

एक था राजा, हां राजा, ज्यादातर लोक कथाओं में राजा रानी की कहानियां ही होती हैं।

हां तो, एक राजा था। उसकी पांच राजकुमारियां थी। एक दिन राजा ने अपनी पाचों राजकुमारियों को एक साथ अपने पास बुलाया और पूछा कि “हे बेटियो! बताओ तो जरा कि तुम किसके भाग्य का खाती हो”?

चार बडी पुत्रियों ने तो एक स्वर में कह दिया “पिताजी! हम तो आपके भाग्य का ही खाती हैं”।

परंतु छोटी राजकुमारी कुछ स्वाभिमानी थी और अलग ही सोच रखती थी। बोली “पिताजी! मैं तो अपने भाग्य का ही खाती हूं और भविष्य में भी वही खाऊंगी जो मेरे भाग्य में होगा”।

छोटी राजकुमारी की यह बात राजा को बहुत बुरी लगी पर छोटी बच्ची जानकर चुप हो गया।

समय बीतता गया। राजकुमारियां विवाह योग्य हो गयी। राजा ने एक एक करके चारों राजकुमारियों का विवाह अपनी हैसियत के मुताबिक अच्छे अच्छे राजघरानों में कर दिया पर जब छोटी राजकुमारी के विवाह की बात आई तो राजा को उसकी बचपन की कही हुई बात याद आ गयी। इमलिए उसने नाई ब्राह्मणों (उस जमाने में नाई-ब्राह्मण ही बडे बडे घरानों के रिश्ते तय करते थे) को यह कहकर भेजा कि इस लडकी के लिए ऐसा वर ढूंढा जाय जिसका किसी जंगल में कोई गांव ना हो और किसी गांव में कोई घर ना हो।

इन राजा रजवाङे के लोगों में दिल नाम की चीज तो होती नहीं, केवल एक तरह की ऐंठ भरी होती है।

परन्तु छोटी राजकुमारी के लिए वैसा वर मिल नहीं रहा था जैसा कि राजा चाह रहा था। एक दिन नाई-ब्राह्मण एक घने जंगल से गुजर रहे थे तो देखा कि एक बदहाल युवक भरी दुपहरी में जंगल में लकडियां काट रहा है। पूछने पर पता चला कि उसका इस दुनिया में कोई नहीं है। वह जंगल से लकडियां काट कर शहर में बेचने जाता है और जो कुछ पैसे मिल जायें, उन्ही से अपना खाना खरीदकर अपना पेट भर लेता है और जंगल में ही बनी अपनी झोपडी में गुजारा करता है। नाई-ब्राह्मण की निगाह में वह लडका जंच गया और उसे बहला फुसला कर राजा के पास ले आए। राजा को भी वह लडका जंच गया और अपनी छोटी राजकुमारी की शादी उससे करदी। राजा ने एक-एक सादा सा कपडा बेटी व दामाद को तथा एक रुपये का दामाद का टीका देकर यह कहकर बिदा कर दिया कि “हे बेटी! अब जो भी तेरे भाग्य में हो, वही खाना”। रानी अपनी छाती पीटती रह गयी, राजाज्ञा के सामने कर ही क्या सकती थी।

राजकुमारी इसे पिता का आशीर्वाद समझकर अपने पति के साथ जंगल की और चल दी और जाते समय सभी राजसी वस्त्र व गहने वहीं छोड दिये। जंगल में उन राजसी वस्त्रों व गहनों का क्या काम, चोर डाकू ही लूट ले जायेंगे।

लडका एक दम अज्ञानी, दुनियादारी से कोसों दूर। रोज लकडियां काट कर शहर ले जाता और जो कुछ भी पैसा मिलता उसका खाना खरीद कर ले आता और उसे खाकर अपनी झोंपडी में रात गुजार लेता। इसके विपरीत राज कुमारी काफी समझदार थी। उसके सामने जीवन का एक चैलेन्ज था। उसने अपने पति की स्थिति पर गहराई से मनन किया और अपनी गृहस्थी की एक मजबूत गाडी बनाने की ठान ली। उसने अपने पति को समझाया कि अब तक आप अकेले थे, अब हम दो हो गये हैं, अत: जितना खाना आप लकङी बेच कर लाते थे, उससे हम दोनों का पेट नहीं भरेगा। अत: आज आप थोडी ज्यादा लकङी ले जाना तथा सेठ से दो पैसे की बजाय चार पैसे मांगना। चार पैसे ना देने पर कहना कि मैं अपनी लकङियों को और कहीं बेच दूंगा पर चार पैसे से कम नहीं लूंगा। इसके बाद आप तीन पैसे का खाना ले कर आना पर जो खाना आप दो पैसे का लाते थे, उसका दुगुना खाना मांगना तथा ना देने पर दूसरी दुकान पर चले जाना।

इस तरह समझा बुझा कर राज कुमारी ने अपने पति को शहर भेज दिया और स्वयं लग गयी झोंपडी की साफ सफाई करने।

पति महोदय ने वैसा ही किया जैसा पत्नि ने समझाया था। इसी बीच राजकुमारी ने झोंपडी की साफ सफाई की, जंगल में जो फल आदि थे, उन्हें खाकर दिन बिताया, कुछ फल पति के लिए भी रख लिये। कुछ लकङियां भी इकटठी कर ली। शाम को जब पति लौटे तो दुगुने खाने के साथ तथा एक पैसा गाँठ में बांध कर। दोनों ने बडे प्यार से खाना खाया तथा आराम से साफ सुथरी झोंपडी में सो गये। लडके की जिन्दगी में एक ही दिन में काफी बदलाव आ गया था। उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने पर भी एक पैसे की पूंजी उनके पास थी। दूसरे दिन भी उन्होंने ऐसा ही किया और एक पैसा और बचा लिया।

इस तरह कुछ दिन और बीत गये। अब लङके ने एक बार की बजाय दो बार शहर जाना शुरू कर दिया। राज कुमारी स्वयं जंगल में लकङियां इकटठी करती और दूसरे दिन सुबह जल्दी ही अपने पति को शहर भेज देती। पति के वापिस लौटने तक फिर जंगल में लकङियां इकटठी करती और शाम को पुन: उन्हें शहर भेज देती। इस तरह अब वे ज्यादा पैसे बचाने लगे।

चूंकि सिर से बोझा ढोना काफी मेहनत का काम था और लकङियां भी कम ही ले जा पाता था, इसमें समय भी ज्यादा लगता था। इसलिये अब उन्होंने एक खच्चर खरीद लिया जिससे उनका काम आसान हो गया। बाजार आना जाना भी आसान हो गया और समय की भी बचत होने लगी। इसी बीच उन्होंने अपनी झोंपडी को ठीक से कुछ बडा सा बना लिया तथा जरुरत के अनुसार कुछ चीजें भी खरीद ली परंतु रोज की कमाई से कुछ पूंजी जरूर बचाकर रखते और उसमें बढोतरी ही करते रहते। बाजार से खाना लाना भी बंद कर दिया और अपना खाना वहीं पकाने लगे जो सस्ता और पोष्टिक भी होता था।

कुछ समय और बीता। अब उन्होंने लकङियों को इकटठा करना शुरू कर दिया। झोंपङी के बगल में ही एक बाङा सा बना लिया और जो फालतू लकङियां इकटठी होती, उन्हें उस बाङे में रख लेते। आस-पास के लक्कङहारों, जो बाजार में लकङियां बेचने जाते थे, से वहीं उनकी लकङियां खरीद कर रख लेते थे। इस तरह अब बाजार में लकङियां पहुंचनी बन्द हो गयी। अत: अब शहर से लोग लकङियां खरीदने इनके पास आने लगे जहां उन्हें उनके वाजिब दाम मिलने लगे। कालान्तर में वे लकडी के बडे व्यापारी बन गये। अब उन्होंने एक बडा सा मकान भी बना लिया जो देखने में महल जैसा दिखाई देता था। उनके बच्चे भी हो गये जो उन्ही की तरह कर्मठ थे और लकङी के कारोबार में उनका हाथ बंटाते थे। शहर के व्यापारी उनकी इस उन्नत्ति पर दांतों तले उंगली दबाते थे।

एक दिन राजकुमारी अपने मकान की छत पर टहल रही थी। उसने नीचे से किसी के पुकारने की आवाज सुनी तो नीचे झांका और देखा कि एक बूढा सा व्यक्ति जो काफी थका हारा सा लग रहा है, कुछ आराम व शरण की इच्छा रखता है। गौर से देखने पर राजकुमारी ने पहिचान लिया कि वह कोई और नहीं बल्कि उसका बाप ही है। उसने नीचे आकर नौकर के द्वारा उन्हें एक कमरे में भिजवाया और उनके आराम की व्यवस्था की। जल पान कराने के बाद उन्हे स्नान करवाया और पहिनने के लिये नये कपङे दिये।

राजकुमारी ने भांति भांति के पकवान बनवाये और मेहमान को खाने पर बिठाया। खाने पर साथ में राजकुमारी के पति भी बैठे। सात तरह के व्यन्जन राजकुमारी ने स्वयं परोसे पर सातों बार नयी वेष-भूषा पहिन कर मगर मुंह ढक कर। मेहमान ने जी भर कर खाना खाया पर हैरान कि यजमान के सात रानियां हैं। खाने के बाद मेहमान ने बङी कृतज्ञता के साथ शुक्रिया अदा करते हुए कह ही दिया “आप तो बहुत बङे आदमी हैं, आपके सात रानियां हैं और इतने ठाठ-बाट हैं। इतनी कम ऊम्र में इतना सब कुछ कर लिया”।

“अरे नहीं महानुभाव, यह तो हमारी इन रानी साहिबा का ही चमत्कार है जो हम इस मुकाम तक पहुंच पाये हैं” मेजबान ने बङी विनम्रता से कहा।

राजकुमारी जो पास में ही खङी सब बातें सुन रही थी, एक दम पर्दा हटा कर सामने आ गयी और बोली “पिताजी! मैं वही लङकी हूं जो आपके घर में भी अपने भाग्य का खाती थी और यहां भी अपने भाग्य का ही खा रही हूं। इनके सात नही, मैं अकेली ही इनकी पत्नि हूं”।

इतना सुनते ही बाप की आखें फटी की फटी रह गयी और तब बाप और बेटी दोनो गले लग कर फूट फूट रोये। लङका भी, जो इस तथ्य से अन्जान था, एकदम हैरान रह गया कि ये वही राजा साहब हैं जिन्होंने बङी ही धिकारत के साथ राजकुमारी को उसके साथ बिदा किया था। खैर आखिरकार हैं तो ससुर ही, सो उसने तुरंत उनके पांव छू लिए। राजा भी उसे गले लगा कर माफी मांगने लगे।

लङका तुरंत उठा और एक छोटी सी कपङे में बंधी हुई पोटली उठा कर लाया। लीजिए राजा साहेब, आपकी यह अमानत जिसे मैने सम्भाल कर रखी हुई है।

यह तो वही रुपया है जो मैने आपको टीके में दिया था, कुंवर सा,, मैं बहुत शर्मिंदा हूं।

राजा साहेब,,, मैने राजकुमारी जी की खुद्दारी देखी तो मेरा भी स्वाभिमान जाग गया, मैने इसे खर्च न करने की ठान ली थी।

इतना सब होने पर राजा अपनी दास्तान बताने लगे “पहले तो चारों लङकियों की शादियों में काफी धन लुटा दिया, राज्य का खाजाना खाली हो गया फिजूलखर्जी में और फिर एक दिन दीवान ने खुद राज्य पर कब्जा कर के उन्हें महल से बाहर निकाल दिया। रानी साहिबा तो इस सदमें को बर्दास्त नहीं कर पाई और वहीं दम तोङ दिया। रह गया मैं अकेला, किस मुंह से उस राज्य की सीमा में रहता। उन लङकियों के पास भी गया जिनकी शादियां ठाट-बाट से की थी पर कोई न कोई बहाना कर उन्होंने भी अपने पास रखने से मना कर दिया”।

और इसके बाद की जिन्दगी बाप ने भी अपनी इसी बेटी के भाग्य से ही बिताई।

बच्चो... यह कहानी वैसे तो बच्चों के मनोरन्जन के लिये है पर शायद यही वह कहानी है जिसमें छिपी है गरीबों की तिजोरी की चाबी। यही एक फार्मूला है जिसे मैने अपनाया है और मेरा परिवार भी इसी सिद्धांत का अनुसरण कर रहा है जिसका परिणाम तुम देख ही रहे हो। फिजूल-खर्ची बङे-बङे खजाने खाली करा देती है और मित्तव्ययता से समृद्धि प्राप्त की जा सकती है। समय समय पर करोङपति से खाकपति व खाकपति से करोङपति बनने के अनेक उदाहरण मानव समाज में देखने व सुनने को मिलते हैं। ऐसे लोगों का जीवन वृतान्त भी अपने आप में एक अर्थशास्त्र होता है। टाटा, बिरला, अम्बानी, मुन्जाल आदि घराने ऐसे ही उदाहरण हैं। ये घराने एक दिन में अमीर थोङे ही बने हैं बल्कि यह उनके पूर्वजों की कङी मेहनत व सही सोच का परिणाम है। हमारे अछूत व पिछङे समाज, जिसका सदियों से सब कुछ छीना जाता रहा है, में आजादी के बाद से बहुत परिवर्तन आया है, कितने ही पढ लिख कर बङे ओहदों पर पहुंचे हैं तो काफी लोग उद्योगों में आगे बढ रहे हैं। पुस्तकें लिखने में भी हमारा समाज पीछे नहीं है और यह सब हुआ है एक महामानव डा. भीमराव अम्बेडकर के प्रयासों से जिन्होंने पांच हजार साल पुरानी ब्यवस्था को शिक्षा के बल पर ही बदल दिया है।

सही कहा है चाचाजी आपने। हम लोग अपनी अज्ञानता के कारण ही दुख पाते हैं । आज से हम भी आपकी इस कहानी को गांठ बांध लेते हैं और आगे से ऐसा ही करेंगे जैसा इसमें बताया है।

बहुत अच्छा बच्चो,, तुम्हारा कल्याण अवश्य होगा।



षोडश भाग

और दो साल का समय बीता।

बुधराम के छोटे बेटे की इंजिनियरिंग की डिग्री पूर्ण हुई और विशेष बात की उसे एक बङी कम्पनी में नौकरी भी मिल गयी जिसमें आशा से अधिक का सालाना पैकेज भी मिल गया। बुद्धराम को उसकी तपस्या का फल मिल गया, इतनी खुशी मिल रही है कि सम्हाले नहीं सम्भल रही, पर परिवार बौरा नही रहा है, सभी से बङे प्यार व आदर से पेश आ रहा है, घमंड लेश मात्र भी नही, और इसी कारण से गांव के लोग इतना आदर करते हैं।

दो साल में बुद्धराम की आर्थिक स्थिति काफी सम्भल गयी है, कुछ रकम भी जोङ ली है। एक गरीब परिवार की पढी लिखी लङकी से प्रवीण का रिश्ता कर लिया। दहेज नाम के शब्द को सामने नहीं आने दिया तो लोग भोंचक्के से रह गये। सभी नाते रिश्तेदारों, गांव समाज के लोगों की काफी आवभगत की इस शादी में,समाज में वाह वाही होगयी। यही प्रवीण के मां-बाप की भी इच्छा थी और उनकी इच्छाओं का पालन करना वह अपना परम् कर्तव्य समझता था। मौज-मस्ती जैसे शब्दों का अर्थ नहीं सीखा था, अपना कर्तव्य पूरा करते रहो, यही उसका आदर्श था। मंजिल दर मंजिल चढने में ही उसे आनंद आता था और यही उसकी मस्ती थी।

शादी में दहेज के नाम पर खरीदने वाले भी बहुत से लोग आये थे पर प्रवीण ने दहेज के नाम से कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया था और इसी शर्त पर शादि के लिए हां की थी कि कोई दहेज नहीं लेंगे। उसका मानना था कि जो सुख मेहनत से प्राप्त की गय़ी वस्तु में मिलता है उतना उसे अचानक मिल जाने में नहीं। जब बापू की मजदूरी की कमाई में आराम से समय काट लिया तो जो वेतन नौकरी करने से मिल रहा है वह तो बहुत ही काफी है, फिर क्यों किसी लङकी के गरीब बाप को परेशान किया जाय। यह दहेज का दानव अमीरों की तो शान बढाता है पर गरीब को बर्बाद कर देता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है...

बाप तो कंगाल हुआ बेटी की बिदाई में,

सास-ससुर की ना झोली भर पाई है।

दूल्हे ने तो चुनी है हिरोइन जैसी दुल्हन,

ससुर जी ने गड्डियों की इच्छा फरमाई है।

ट्रक भर दहेज का सामन मिला शादी में,

पर सास को तो शादी ही पसंद नही आई है।

पर एक बात से है सास को तसल्ली भारी,

दहेज के सामान में स्टोव साथ लाई है।

प्रवीण की नौकरी लगने के बाद से ही बापू ने मजदूरी करना छोङ दिया था पर घर की ब्यवस्था तो वे ही देख रहे थे। अब तो छोटा बेटा भी अच्छा खाशा कमाने लग गया है, सो किसी बात की कमी नही है। प्रवीण की पत्नि भी चूंकि समझदार है, सो सास बहु दोनो मिलकर घर को सम्भाल रही हैं, बाहर किसी भी लेनदेन आदि का काम पूर्व की तरह बुधराम ही करते हैं। हां उनका नाम गांव व आस पास के इलाके व रिश्तेदारियों में सदा के लिए स्मरणीय बन गया। कमी है तो बस एक ढंग के से मकान की, सो वह भी पूरी हो ही जानी है।

परिवार की जिम्मेदारी अब प्रवीण ने सम्भाल ली है और छोटा भाई भी पूरा सहयोग कर रहा है। बुद्धराम ने अब सर्वप्रथम अपने घर को ठीक ठाक किया, जरूरत के हिसाब से एक पक्का मकान बनवाया जो बहुत जरूरी है, क्योंकि अब छोटे बेटे की भी शादी होनी है, एक और बहु का आगमन होगा, बेटी का रिश्ता होगा तो मेहमान भी आयेंगे।

बुधराम का गांव में मकान बन रहा है। आने जाने वाले लोग पूछते हैं और बधाई देते हैं। दोनों भाई चूंकि अच्छी नौकरी पर हैं सो एक ठीक ठाक सा मकान भी तो होना चाहिए। अत.. दोनो भाई अपनी बचत अपने बापू को ही सौंप देते हैं जिसे बुधराम मकान बनवाने में ही लगाते रहते हैं। अब उनके चेहरे पर आई खुशी देखने लायक होती है। इसके बाद एक लङकी की भी जिम्मेदारी बाकी है। माना कि उन्होंने प्रवीण की शादि में कोई दहेज नहीं लिया पर लङकी के लिए तो ब्यवस्था करनी ही है। छोटे लङके की भी शादि करनी है पर चिंता बिल्कुल भी नही है क्यों कि उसे विश्वास है कि कोई भी शरीफ खानदान उसके यहां रिश्ता करने में अपना गौरव समझेगा। वैसे लङकी भी अपने भाईयों से कम नही है, उसकी भी इच्छा अध्यापिका बनने की है।

परिवार की गाङी अब अलग ही पटरी पर चलने लगी थी। घर का वातावरण तो पहले से ही सात्विक था पर अब भी आपे से बाहर नहीं हुआ था। गांव में अब हर कोई उसे बुधिया ना कह कर बुधराम तथा साथ में चाचा, ताउ, भाई आदि सम्बोधनों से पुकारता है। इनकी मां भी अब ताई-चाची के नाम से ही सम्बोधित की जाने लगी है। सचमुच में मा-बाप के नाम को रोशन कर दिया है इन बच्चों ने, गांव में उनकी इज्जत बढा दी है ।

बुधराम का रहन सहन सब कुछ बदल गया है। लिखना पढना तो वह जानता ही था पर समय नहीं मिलता था। अब उसके पास समय ही समय है। घर में नियमित रूप से समाचार पत्र आता है जिसे बङे ध्यान से पढता है और लोगों को रोजमर्रा की घटनाओं की जानकारी देता रहता है। मुंशी प्रेमचंद की कहानियां व कबीर की बाणी पढने में बङा आनंद आता है और फिर लोगों में उनकी चर्चा भी करता है। जहां भी बैठ जाता है, वहीं ज्ञान की बात शुरु हो जाती हैं। यही है असली सत्संग। ढोल इकतारा लेकर गाना भजन करना उसे नहीं आता है। बुधराम के जीवन के आखिरी दिन काफी आराम से बीत रहे हैं जिसका कारण है उसकी कङी मेहनत, परिवार का सात्विक वातावरण और बच्चों की लग्नशीलता।

प्रवीण,,, तू खुद ही देख कि भारत में गरीबी किस कदर छाई हुई है। निर्धन वर्ग अपना नारकीए जीवन जीने के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था पर भी भार है और तू ने तो अर्थशास्त्र में पढा ही है किस तरह आजादी के इतने वर्ष बीत जाने पर भी यह देश विकसित देशों की श्रेणी में नहीं आ पाया है और और इसका मुख्य कारण है बङे पैमाने पर फैली शिक्षा की कमी। यदि इस दलित निर्धन वर्ग के बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की तरफ़ अब भी ध्यान नहीं दिया गया तो अगले 50-60 वर्ष में स्थिति और भयानक हो जाएगी, कारण, उनकी जनसंख्या तिगुनी चौगुनी तो हो ही जानी है। बुधराम अक्सर प्रवीण के साथ चर्चा किया करता है।

तू तो जानता ही है कि भारत की अर्थब्यवस्था में एक शब्द पूरी तरह से स्थापित हो चुका है और वह शब्द है बीपीएल अर्थात बिलो पोवर्टी लाइन।

हां बापू, और देश की करीब चालीस फीसदी जनता इस बीपीएल के नीचे गुजारा करती है। इसी शब्द के ऊपर बङी राजनीति भी होती है, कई प्रकार की लुभावनी योजनाएं भी बनायी जाती हैं, राजनैतिक दलों द्वारा बङे बङे वादे भी किये जाते हैं पर यह लाइन खत्म तो क्या नीचे आने का नाम ही नहीं ले रही है। अमीरों की दौलत दिन दूनी रात चौगुनी बढती रहती है और गरीबी अमीरी की खाई और चौङी होती जा रही है। अब यह मुद्दा आर्थिक न होकर राजनैतिक बन गया है। दलित समाज का लगभग नब्बे फीसदी हिस्सा तो इसमें आता ही है, अन्य समाजों के गरीब लोग भी इस श्रेणी में आ गये हैं और इसलिए जातिगत राजनीति का आधार भी बन गयी है यह बीपीएल। इसके साथ ही करीब दो करोङ भिखारी भी इस अर्थब्यवस्था का अंग हैं जिनकी दशा पशुओं से भी बदत्तर है।

एक अच्छा जीवन जीने का अवसर स्वयं ही ढूंढना होता है। आजादी से पूर्व अवसर उपलब्ध नहीं थे, विकृत सामाजिक व धार्मिक ब्यवस्था ने ऐसी पाबंदियां लगा रखी थी जिसके कारण देश का बहुसंख्य समाज सभी मौलिक अधिकारों से वंचित था और उन बंधनों से बाहर जाने की इजाजत बिल्कुल भी नहीं थी। यही हाल देश की नारियों का था। शिक्षा व अपनी इच्छानुसार ब्यवसाय चुनने, जो मानव जीवन के विकास के मुख्य आधार हैं, पर प्रतिबंधों के कारण विकास के सभी रास्ते बंद थे, मनु का संविधान लागू था जिनका उलंघन करने की हिम्मत किसी में नहीं थी। हिंदुओं की सबसे पवित्र कही जाने वाली पुस्तक गीता भी जन्मजात वर्णों व ब्यवसायों का समर्थन करती है और कहती है कि सभी समझदार लोगों को अपने अपने वर्ण के अनुसार काम करना चाहिए और बाकी लोगों को भी उनके वर्णानुसार करने के लिए ही कहें। जब समाज में ऐसे मानवता विरोधी आदर्श स्थापित कर रखे हों तो समाज कैसे उन्नति कर सकता है और यही एक विचारणीय प्रश्न है।

हां बापू....बाबा साहेब अम्बेडकर की कुछ पुस्तकों के कुछ अंश मैने भी पढे हैं जिनमें समाज की विकृत दशा के बारे में बताया गया है और उन्हें स्वयं ने जाति के नाम पर कितना अत्याचार सहा है।

हां प्रवीण,, ये जो अपने ही गांव के तथाकथित बङे लोग हैं, जो आज मानवता दिखा रहे हैं, की बङी दुत्कार झेली है हमारे बुजुर्गों ने। परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाबा साहेब अम्बेडकर ने मनु का संविधान बदल दिया गया है और नयें संविधान के द्वारा उन्नति के रास्ते सभी के लिए खोल दिए गये हैं, अब उन पर चलना तो उस ब्यक्ति को ही पङेगा जो अपना विकास करना चाहता है। एक प्यासे घोङे को पानी के पास ले जाया जा सकता है पर उसे पानी पीने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है। इसी लिए जो लोक कथा मैने तुझे सुनाई थी, वह केवल कहानी नही है बल्कि एक सच्ची शिक्षा है जिसको मैने सदा याद रखा है और तू भी तो उसको मानता आया है,

तभी एक मजदूर अचानक बोल पङा, तो फिर चाचा हमें भी सुनाओ ना वही कहानी। बुधराम ने फिर वही कहानी दोहराई और वहां काम पर लगे मजदूरों ने भी बङे ध्यान से सुनी।

यह कहानी नही है, सच्ची सीख है, गांठ बाध लो इसे, बुधराम ने जोर देकर कहा।

बिल्कुल ताऊजी, सभी एक साथ बोल उठे।

सप्तदश भाग

अचानक एक गाङी आकर रुकती है और सबसे पहले ड्राइवर की सीट से एक ब्यक्ति उतरकर पीछे की सीट का दरवाजा खोलकर वहां पर बैठे बुजुर्ग दम्पति को आराम से नीचे उतारता है। गाङी के हार्न की आवाज सुनकर प्रवीण बाहर निकल कर देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

अरे नवीन तुम.. प्रवीण ने विषमय से पूछा।

भैया आप ही के पास सीधा चला आ रहा हूं।

आओ, आओ, चाचा मेहरू व चाची पारो के चरण स्पर्श करते हुए प्रवीण ने कहा।

सभी लोग अंदर बैठ गये, प्रवीण के माता पिता भी वहां आ गये।

कल तक ये लोग दरवाजे के बाहर नीचे बैठते थे, आज इनमें कितना आत्मविश्वास आ गया है।

अरे मेहरू भैया, बङी खुशी हो रही है आप लोगों को इस तरह आया देखकर, बुधराम ने मेहरू से कहा।

पारो ने एकदम पर्दा कर लिया जो स्वभाविक था, जेठजी के सामने वह कैसे बेपर्दा होकर बैठ सकती है। सो प्रवीण की माँ उसे अंदर कमरे में ले गयी।

आप लोगों ने तो मकान का नक्शा ही बदल दिया है, क्या ही सुंदर घर बना है, हम तो चकरा ही गये थे कि जगह तो वही है पर इतना सुंदर मकान किसका हो सकता है, मेहरू ने अपने मन की बात कह ही दी।

भैया.. यह तो इन बच्चों की माया है और छोटे वाला इंजिनियर जो ठहरा, इन्होंने ही अपने हिसाब से बनवाया है मैं तो केवल देखता रहा हूं। हम तो सारी जिंदगी खटते रहे झोंपङों में ही, अब कुछ सुकून के दिन आए हैं आप की दुआ से, बुधराम कुछ भावुक से होते हुए बोले।

हां भैया जी, अब तो इन बच्चों के ऊपर ही सब कुछ है, मेहरू ने भी कहा।

अरे नहीं चाचाजी, आप लोगों के कारण ही तो हम लोग कुछ कर पा रहे हैं, यह सब आप ही का आशीर्वाद है, प्रवीण बङी ही आत्मियता से बोले।

मेहरू ने एक निमंत्रण पत्र निकाल कर बुधराम की ओर बढाया, लीजिए भैया, यह आपके बेटे नवीन की शादी का कार्ड है, आप सभी लोगों को जरूर ही आना है।

कार्ड पर ना गणेष का चित्र और ना ही कोई श्लोक और ना ही किसी देवी देवता की स्तुति, केवल तथागत गौत्तम बुद्ध का चित्र, दोनो कोनों पर नमो बुद्धाय तथा चित्र के नीचे .नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स. अंकित है और लिखा है.. भगवान गौत्तम बुद्ध की अनुकम्पा से....

श्रीमती पार्वती व श्री मेहरसिहँ अपने सुपुत्र......

महान आश्चर्य, कहां से कहां पहुंच गया है यह परिवार, जिस समाज की रोज ठोकरें खाता था, उसी समाज को तिलांजली दे दी है और बना लिया है अपना नया समाज, स्वाभिमान का समाज, मान सम्मान् का समाज।

यह सब कैसे हुआ नवीन भाई ? प्रवीण ने कुतुहल से पूछा।

भैया, दिल्ली की जिस कालोनी में मैने मकान लिया है, वहीं पास में ही एक बुद्ध विहार है। वहां जाने वाले कुछ लोगों से सम्पर्क हुआ तो मैं भी वहां जाने लग गया। प्रत्येक रविवार को वहां बुद्ध बंदना होती है, बौद्ध भंते भी वहां आते हैं और बुद्ध की शिक्षाओं का गायन करते हैं, त्रिशरण व पंचशील का पाठ होता है।वहां न कोई मनौती मानी जाती है, ना ही कुछ मांगा जाता है और ना ही कोई चढावा चढाया जाता है। बुद्ध विहार की रखरखाव के लिए उपासक लोग कुछ दान करते रहते हैं, भिक्षुओं को भी कभी कभी घर बुलाकर भोजन दान व विशेष अवसरों पर चीवर दान करते हैं।

आप तो बहुत कुछ जान गये हो बुद्ध के विषय में, प्रवीण ने कहा, और क्या बौद्ध भिक्षु आपके घर भी खाना खा लेते हैं आपकी जाति को जानते हुए..

यही तो विशेष बात है, हमारी अलग से कोई जाति नहीं है बौद्ध को छोङकर, वहां सब एक हैं। भगवान बुद्ध ने बिना किसी भेदभाव के समाज के हर ब्यक्ति को धम्म दीक्षा दी थी जैसे कि उपालि नाई व सुणीत भंगी और वे सभी के लिए पूज्य थे। उपासना करते हैं और जब सामुहिक रूप से बुद्धंग् शरणंग् गच्छामि, धम्मंग शरणं गच्छामी, संघं शरणं गच्छामी बोलते हैं तो मन को बङी शांति मिलती है। राजा भगीरथ तो सगर के साठ हजार पुत्रों के तर्पण के लिए गंगाजी को उतार कर लाए थे परंतु बाबा साहेब अम्बेडकर ने तो बौद्ध धम्म रूपी गंगा को भारत भूमि पर पुन. लाकर साठ करोङ लोगों के उद्धार का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। बौद्ध धम्म ही मानव मात्र के कल्याण का उत्तम मार्ग है।

भैया जी, नरक से निकाल कर हमको एक नया जीवन दे दिया है नवीन ने, सभी देवी देवताओं के दूर होते ही हम तो पार हो रहे हैं इस भवसागर से। जिस परिवार से नवीन का रिश्ता हो रहा है, वह भी बौद्ध परिवार है और लङकी भी पढी लिखी है, नौकरी भी कर रही है, मेहरसिंह ने बताया।

हां ताऊजी, एक कम्पनी में एक्जीक्यूटिव है, और हां ताऊजी, मैने भी तो ग्रेज्युवेशन कर लिया है, नवीन ने बङे ही गर्व से कहा।

नवीन,, यार तूने तो कमाल कर दिया, हम सब को पीछे छोङकर तू तो बहुत आगे निकल गया है। तेरी शादी में हम सभी लोग अवश्य आएंगे और तुम्हारे बौद्ध समाज की संगति का लाभ उठाएंगे, ऐसा अवसर बार बार थोङे ही मिलता है, प्रवीण ने कुतुहल भरे शब्दों में कहा।

अच्छा तो अब हम चलते हैं, अपनी बस्ती में तथा रिश्तेदारों को भी तो निमंत्रण देना है, उनको छोङा तो जा सकता नहीं है, साथ आएंगे तो ही तो बदलेंगे। मेरे चाचा का लङका जिसे मैं दो साल पहले साथ ले गया था, पूरा सुधर गया है, मेरे काम में भी ईमानदारी से हाथ बंटा रहा है, नवीन ने कहा।

अरे भई, खाना खाकर जाओ, इतनी दूर से आये हो और वह भी काफी दिनों के बाद, बुधराम ने आग्रहपूर्वक कहा।

नहीं ताऊजी, गाङी में क्या देर लगती है, घंटा भर पहले ही तो चले हैं खा पीकर और आपने भी तो अच्छा खासा नाश्ता करा दिया है, बस यही प्रार्थना है कि शादी में पधार कर हमें आशीर्वाद दें, नवीन ने आत्मीयता से कहा।

हम सब लोग अवश्य ही आएंगे, पुन. आश्वस्त किया नवीन ने।

अच्छा, नमो बुद्धाय, जय भीम, कहते हुए ताऊजी व ताईजी के पैर छूए, पारो व सुखदेयी गले मिली और वहां से बिदा हुए। पूरे गांव में नवीन की चर्चा चल पङी, लङके ने क्या से क्या कर दिया, हां कुछ धर्मांधों व जाति अहंकारियों की नजर में ईर्ष्या का केंद्र भी बन गया।



अष्टादश भाग

सूरज दौङता हुआ और बोला ,बापू, आज हमारा परीक्षफल घोषित हुआ है पर गुरूजी ने मुझे नहीं बताया, बोले अपने पिताजी को बुलाकर लाओ तुरंत, पता नहीं क्या बात है।,

बात क्या होगी, या तो नम्बर कम आये होंगे या फिर फेल हो गया होगा, ऐसा होने पर ही माँ बाप को बुलाते हैं कि वे अपने बच्चे को सम्भालकर ले जाएं, कहीं कुछ उल्टा सीधा ना कर बैठे, गरीबा चिंतित होते हुए बेटे के साथ चल दिए।

अरे आओ गरीबा, हम तो आप ही का इंतजार कर रहे थे।, एक अध्यापक ने देखते ही कहा।

क्या बात है गुरू जी, सूरज का रिजल्ट खराब तो नहीं है, घबराया सा गरीबा बोला।

अरे नही रे गरीबा, आपके बेटे ने तो कमाल कर दिया है, पूरे जिले में प्रथम आया है। क्लेक्टर साहब का संदेश भी आगया कि वे स्वयं आकर आपको व आपके इस होनहार बेटे को सम्मानित करेंगे। अब आप गरीबा कहां रहे, आपके पास तो यह एक बङी तिजोरी है जो खुल रही है। इसकी आगे की पढाई की ब्यवस्था अब सरकार ही करेगी, आपकी जिम्मेदारी है कि इसकी पढाई में कोई बाधा न पङे, घर की कोई भी परेशानी इसके रास्ते में रुकावट ना बने, प्राचार्य ने बङे प्यार से यह कहते हुए एक मिठाई का डिब्बा सुरेश के हाथ पर रखा।

हां गुरूजी, आपका आशीर्वाद इस पर बना रहे, कहते हुए प्राचार्य व अन्य गुरूजनों के पैर छूए और गर्व से सिर ऊंचा कर घर लौटे। रास्ते में जो भी मिला, अचम्भित रह गया। रास्ते में ही सेठ किरोङीमल से भी मुलाकात हुई, समाचार सुनकर उसकी अंदर छुपी ईर्ष्या का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि उसका पोता सूरज तो मात्र पास ही हुआ है, तृतीय श्रेणी में।पर क्या करना है उसे प्रथम श्रेणी में पास हो कर, उसका तो कारोबार निर्धारित है, कमाने वाले ये गरीब गांव वाले और मौज करने वाले हम, खैर मुबारकबाद तो दे ही दी गरीबा को।

मेरा भाई प्रथम आया है क्लास में, अपनी सहेलियों में जा कर बोली रत्ना।

नहीं री रत्ना, कहते हैं पूरे जिले में प्रथम आया है, सहेलियां बोली।

हां हां, पूरे जिले में , रत्ना ने सिर हिलाया

तू भी तो अपनी कक्षा में प्रथम ही रहती है, कहां से इतना ज्ञान आ गया तुम भाई बहनों में,हम तो पढने बैठती हैं पर कुछ याद ही नहीं होता... सहेलियां कहने लगी।

तुम्हारा पता नहीं भई, पर मैं तो अपने काम से काम रखती हूं, पढाई के समय पढाई, और कुछ नहीं। मेरा भाई भी तो पढते समय किसी को पास नहीं आने देता था,,, बोली रत्ना।



नवदश भाग

अभावों से ग्रस्त जिंदगी में गरीबा को एक और खुशी मिली, प्लस टू की पढाई के दौरान ही सूरज ने इंजिनियरिंग प्रवेश की परीक्षा दी थी और अब उसका चयन आई आई टी में हो गया, अब वह इंजिनियर बनेगा, उच्च स्तर का।

..मुबारक हो भाई गरीबा, अपना सूरज तो कमाल कर रहा है, बस अब तीन-चार साल की और कठिनाई है, उसके बाद तो मौज ही मौज है, देखना हाथों हाथ ले जाएगी कोई भी अच्छी कम्पनी इसे. जैसे ही पता चला.. प्रवीण दौङ कर आया।

समाचार सारे गांव में आग की तरह फैल गया, गरीबा के छोरे ने तो कमाल कर दिया, सबकी जुबान पर यही बात आ रही है। सभी दोङे चले आ रहे हैं गरीबा को बधाई देने।

अरे चमार का छोरा है, इसीलिए उसे दाखिला मिल गया, सरकार इन लोगों पर ही तो मेहरवान है, हमारे बच्चे तो यूं ही मारे मारे फिरेंगे, दूर खङे एक ब्यक्ति ने, जिसका लङका भी सूरज के साथ पढता है, ने ऐसी टिप्पणी कर दी और यह बात प्रवीण के कानों में पङ गयी।

अरे भाई तेरा लङका तो थर्ड डिवीजन से पास होता है और एक बार फेल भी हो चुका है और फिर ऐसी बात करते हो, प्रवीण ने फटकारते हुए कहा। आगे और कुछ सुनने को मिले इससे पहले ही जनाब खिसक लिए वहां से।

..प्रवीण भैया, अब तो सूरज को बङे शहर में जाना पङेगा, वहीं रहना भी पङेगा, खर्चा तो बहुत होगा ना. गरीबा ने आशंकित हो पूछा।

हां भई, खर्चा तो बहुत होगा शहर में रहकर पढाई करने का, पर तू तो हिम्मत वाला बंदा है। कुछ तो छात्रवृति मिल जाएगी जिससे कालेज की फीस आदि का खर्चा निकल आएगा, और फिर शिक्षा ऋण भी इसे मिल जाएगा जिससे हाँस्टल आदि का खर्च भी पूरा हो जाएगा, सो तुम्हें अब इसकी चिंता कर बिल्कुल भी नहीं करनी है तुझे, प्रवीण ने बङी गहराई से समझाया।

कर्जा... प्रवीण भैया... इतना बङा कर्जा कहां से चुकाएंगे, मुझे तो बङा डर लगता है इस कर्जे के नाम से ही... गरीबा का अंदरूनी भय झलक आया, बहुत झेला है उसके परिवार ने इस कर्ज नाम के दंश को।

अरे नहीं रे प्रवीण भैया.. यह सेठ किरोङीमल का कर्ज थोङे ही है, सरकार का कर्ज है जिसे बाद में सूरज की नौकरी लगने के बाद ही आसान किश्तों में चुकाना है, वह भी बिना ब्याज के, जरा भी आभास नहीं होगा इस कर्ज का।

ठीक है भैया, गरीबा आश्वत होते हुए बोला।

गरीबा भैया....प्रवीण ने और समझाया... आप बहुत भाग्यशाली हो जो सूरज ने अपनी मेहनत से इतने बङे संस्थान आई आई टी में प्रवेश पा लिया वर्ना सालों साल भटकने के बाद भी इनमें प्रवेश नहीं मिल पाता है। कोटा शहर इसी बात के लिए जाना जाता है। वहां हर साल हजारों बच्चे इसी उद्देश्य से वहां जाते हैं, इनमें बहुत से धनी घरों के बच्चे होते हैं जिनका उद्देश्य ही यह दिखाना होता है कि वे कुछ करना चाहते हैं और दो-तीन साल बाद वापिस आ जाते हैं और उन्हें कोई फर्क भी नहीं पङता है पर कुछ मध्यम व गरीब श्रेणी के लोग भी अपने बच्चों को काफी कष्ट उठाकर, कर्जा आदि लेकर भी वहां भेजते हैं इस आशा में कि चलो कुछ बन जाएगा पर वहां का वातावरण देख कर निराश से हो जाते हैं और जब उन्हें लगता है कि वे माँ बाप की इच्छा को पूरी नहीं कर पायेंगे, तो वे आत्म हत्या तक कर बैठते हैं। ऐसी कई घटनाएं हर साल सुनने को मिलती हैं।

ऐसा है प्रवीण भैया... गरीबा ने बङे आश्चर्य से कहा।

हां, ऐसा ही है, यही हमारी शिक्षा ब्यवस्था की वास्तविकता है...लाखों, करोङों युवा बेरोगार हमारे देश में भटक रहे है, जिनके पास बाप दादों की जमीन जायदाद है, पुश्तैनी कारोबार है, उनके बच्चे तो फिर भी मौज करते रहते हैं, नौकरी नहीं मिली तो कोई बात नही, पुश्तैनी कारोबार है, और वे छोटी मोटी नोकरी करना भी नहीं चाहते हैं।नौकरी की जरूरत तो हम जैसे लोगों के लिए है जिनके पास मजदूरी करने के अतिरिक्त और कोई आधार नही है और नौकरी का हाल आप देख ही रहें हैं, अपने ही गांव के कितने बच्चे बेरोजगार घूम रहे हैं, रोज फार्म भरते हैं, परीक्षा देने जाते हैं पर कहीं सफलता नहीं मिल रही है। ज्यादा बुरा हाल तो उन बच्चों का है जिन्होंने बीएड, एमएड, टीजीटी, पीजीटी आदि सब कर लिया पर नौकरी नहीं मिल रही है, सरकारी स्कूलों में अध्यापक नहीं पर सरकार भर्ती ही नहीं कर रही है। यूनिवर्सिटी के काँलेजों में एडहाँस अध्यापक वर्षों से पढा रहे हैं, उन्हें नियमित नहीं किया जा रहा है, पगार भी नाम मात्र की और वह भी समय पर नहीं मिलती है। ऐसे बच्चों के पास और कोई क्षेत्र है नही सिवाय अध्यापन के, उम्र भी तीस-पैंतीस पार हो गयी है पर कहीं स्थापित नहीं हो पा रहे हैं, और तो और, वे शादियां तक नहीं कर पा रहे हैं।

हां प्रवीण भैया, बात तो आप सही कह रहे हैं। अब हम भी इसी आशा में बैठे हैं कि सूरज हमें इस गरीबी के नरक से बाहर निकालेगा, आसमान की ओर हाथ जोङकर धन्यवाद देता है ऊपर वाले को।

धनिया के पैर छूते हुए,, बधाई हो ताई जी, आपका पोता तो अब इंजिनियर बनेगा, बहुत पैसे कमाएगा, आपकी सारी गरीबी दूर कर देगा।

क्या सूरज स्कूल का मास्टर नहीं बनेगा,, आश्चर्य से बोली घनिया।

अरी ताई, मास्टर से भी बङी नौकरी मिलेगी सूरज को, लाखों रुपये महिना कमाएगा, समझाया प्रवीण ने।

धनिया की तो आंखें फटी की फटी रह गयी, लाख रुपये का तो नाम भी नहीं सुना था कभी। बोली, क्या पूरा बटुआ भर कर लाएगा,,,

अरी ताई ,,, बटुआ क्या, थैला भर जाएगा।

हाथ जोङ लिए धनिया ने, काश इसके दादा भी आज जिंदा होते,,,,

हर किसी को सारे सुख नसीब नहीं होते ताई जी।

माँ.. भैया कहां जा रहा है पढने के लिए..

रे छुटकी... तेरा भैया दिल्ली जा रहा है इंजिनियर बनने, अब यह वहीं रहेगा.

तो मैं यहां अकेली ही रहूंगी चिंतित सी हो कर बोली।

बिटिया हम भी तो यहीं हैं तेरे साथ, तू अकेली कहां है. और बता तू क्या बनेगी...

मैं तो डाक्टर बनूंगी, लोगों का इलाज करूंगी, तपाक से बोली रत्ना।

सुख व दुख की गहन धाराओं के संगम में डुबकी लगा रहा है गरीबा।



विंशति: भाग

सूरज को शहर जाना है, आई आई टी में पढने, उसके पास कुछ तो रुपया होना ही चाहिए। दिल धक धक कर रहा है माँ बाप का, यहां तो छाय पानी पीकर पेट भर लेता था, क्या खा पाएगा दिल्ली जैसे शहर में। एक प्रवीण ही है जो इन्हे सही सलाह देता है और हौसला देता है, सो दोनो मींया बीबी पहुचे प्रवीण के पास।

प्रवीण भैया,,, पहली बार दिल्ली जायेगा, यह तो कुछ जानता ही नहीं।

चिंता ना कर भैया... आवश्यकता पङने पर इंसान सब कुछ सीख जाता है, और चूंकि पहली बार दिल्ली जा रहा है, मैं इसके साथ चला जाऊंगा, मेरे एक मित्र वहां प्रोफेसर हैं, उनसे परिचय करा दूंगा, सूरज को कोई परेशानी नही होगी।

तो भैया क्या कुछ रुपया भी देना पङेगा, फीस आदि के लिए,,, पूछा गरीबा ने।

नहीं भैया, अभी कोई फीस नहीं भरनी है, अभी तो प्रवेश का फार्म भरना है, सारे डाँक्युमेंट जमा करने है और एडमीशन होने के बाद ही फीस जमा करनी होगी जिसकी सूचना बाद में ही मिलेगी। तब तककुछ ब्यवस्था कर लीजिए। मैं अभी इसके शिक्षा लोन का फार्म भी भरवा दूंगा जो जल्दी ही स्वीकृत हो जाएगा, आपको कोई परेशानी नहीं होगी, प्रवीण ने समझाते हुए कहा।

इसी बीच प्रवीण की पत्नि चाय लेकर आई, चाय पीकर खुशी खुशी घर आकर बेटे को शहर भेजने की तैयारी मे जुट गये। माँ ने सूरज की एक पेंट कमीज को अच्छी तरह धो कर साफ किया, कुछ रुपयों की ब्यवस्था की, दिल्ली जा रहा है, दो सौ, चार सौ तो होने चाहिए इसकी जेब में।

दूसरे दिन,

सूरज जल्दी ही नहा धोकर तैयार हो गया, नई राह तैयार है उसे उसकी मंजिल तक पहुंचाने के लिए, अब चूक नही होनी चाहिए। प्रवीण चाचा भी आ गये हैं अपनी गाङी लेकर। सूरज ने माँ बापू के पैर छू कर आशीर्वाद लिया और चल पङा अपनी मंजिल की ओर।

शाम को चहकता हुआ आया सूरज, प्रवीण ने सारी बात बताई।

सूरज की मां,,, अब तुम बढिया सी चाय बनाओ, शहरी साहब के लिए। गांव के हिसाब से ज्यादा चीनी मत डालना,

हां भैया,,, अब तो भाभी के हाथ की शहर वाली चाय पीनी ही पङेगी, शहर से नाता जो जुङ रहा है आपका।

आपकी की ही कृपा है जो यह सब हो रहा है भैया, गरीबा ने कृतज्ञता से कहा।

नही भैया, सूरज की लगन व आप की हिम्मत ही है जो सब कुछ करा रही है, ऐसे ही हिम्मत बनाए रखना, कभी हारना नहीं, सफलता जरूर मिलेगी। क्या कहते हैं न कि..

लहरों से डरकर कभी नौका पार नहीं होती।

हिम्मत रखने वालों की कभी हार नहीं होती।

अच्छा अब मैं चलता हूं, किसी बात की चिंता मत करना, सूरज के प्रवेश की सूचना जल्दी ही आ जाएगी और यह चला जाएगाआई आई टी दिल्ली में, इंजिनियर बनने।

बहुत बहुत धन्यवाद भैया, प्रणाम।

प्रणाम्।



एकविंशति: भाग

सूरज चला गया है शहर में अपनी इंजिनियरिंग की पढाई करने और यहां रह गये हैं तनहा पति पत्नि, लिछमी व गरीबा। क्या जोङी बनाई है भगवान ने, लक्ष्मी का साथ, फिर भी गरीब, पर शायद इसी के भाग्य से गरीबा की तकदीर बदल रही है। बङी ही नेक औरत है, हर हाल में जीने की ललक, हर कठिन परिस्थिति में भी हिम्मत बढाती रही है गरीबा की। यही तो असली लक्ष्मी है, एक जगह टिकने वाली, धन दौलत वाली लक्ष्मी तो चंचला है, कभी इस द्वार तो कभी दूसरे द्वार।

सुनो जी, दिन की बनाई रोटियां रखी हैं, कुछ खा लो, आपने भी ढंग से खाना नहीं खाया था। चटनी पीस देती हूं।

मैने तो कुछ खा भी लिया था पर तू तो दिन भर से सूरज की ही रट लगाए बैठी है,...कैसे रहेगा अपना सूरज दिल्ली में, आज तक हमने कभी अकेला नहीं छोङा उसे...। अब छोङ इस चिंता को, प्रवीण भैया ने बताया नहीं कि हाँस्टल में खाना पीना, नाश्ता आदि समय से मिलता है, और हमारे यहां से तो अच्छा ही खाना मिलेगा। क्या देते थे हम उसे, सिर्फ छाछ रोटी व चटनी। हां रात को एक गिलास दूध जरूर दे दिया करते थे। पर अब तो यह भैंस भी दूध से नाटने वाली है, कुछ दिन और सेर आध सेर धार दे देगी, फिर दो तीन महिना ऐसे ही निकालना पङेगा। छाछ भी मांगनी पङेगी आस पङोस से।

सूरज के बापू ..दो तीन महिने क्या, अबतो लगता है इस भैस को भी बेचनी ही पङेगी, सूरज को खर्चा जो भेजना पङेगा हर माह,.. गरीबा की पत्नि बोली।

हां हां, इसे बेच ही देंगे, हमें कौन से दूध घी की जरूरत है। दोनो जाएंगे काम पर, साग रोटी खाएंगे, पर सूरज को कमी नहीं रहने देंगे किसी बात की, गरीबा ने ढाढस बढाते हुए कहा। अब तो चटनी ही पीस ले, खा लेते हैं दिन की बची हुई रोटियां।

खाना खा लिया पर फिर वही सूरज की बात, दिल दिमाग से उतर ही नही रहा है सूरज, पता ही नहीं कुछ सो भी पाए या नहीं। रात बहुत लम्बी थी आज, बङी मुश्किल से कटी है। सवेरा हुआ है पर कुछ अलग तरह का। सूना सूना सा लग रहा है सब कुछ। परंतु लग गये हैं दोनो मीयां बीबी अपने रोज मर्रा के काम में। भैंस को चारा डाला, लक्ष्मी ने भैंस का ठाण बुहारा, गोबर उठाया, छाछ बनाई। किलो भर दूध रख कर सारा बेचना पङता है फिर भी भैंस के चारे के लिए पूरा नहीं पङता है। चाय पानी व थोङे से मट्ठे के लिए एक किलो दूध रखना ही पङता है, यह छाछ ही तो सहारा है जिससे पेट भर कर रोटी खा लेते हैं।

लक्ष्मी ने दो कप चाय बनाई, बैठकर साथ में पी। चाय तो आजकल हर घर में सामान्य सी बात होगयी है, कहीं काम पर जाता है तो दो बार चाय तो वहां भी मिल ही जाती है। मजदूर वर्ग में बीङी व तम्बाकू गुटका सामान्य बात है पर गरीबा तो इन सबसे भी दूर ही रहा है।

अच्छा तो अब कुछ रोटी सेक दो, चटनी रख दे और एक बोतल में छाछ भरदे, काम पर तो जाना ही है, सूरज एक बार तो जल्दी आएगा ही, सो उसे कुछ तो रुपये देने ही होंगे। सोचता हूं उसे एक सस्ता सा मोबाइल फोन खरीद कर दे दूं, किसी के भी मोबाइल पर हमसे बात कर लिया करेगा।

अहो जी, ठीक ही तो है। आजकल तो बच्चा बच्चा गली में फोन लिए घूमता है, अपने सूरज को तो वास्तव में जरूरत है इसकी, लक्ष्मी ने भी आंखों में चमक लाते हुए कहा।

ज्यादातर बच्चे तो बिगङे हुए हैं इस मोबाइल के चक्कर में, रात दिन चिपके रहते हैं, पढाई लिखाई पर भी ध्यान नहीं देते हैं। अपना सूरज इन सभी से दूर रहा है और इसी लिए वह कुछ कर पा रहा है, आत्मसंतुष्टि भरे दिल से बोला गरीबा।

लिछमी ने रोटियां बनाई, गरीबा को खाने को दी और चार रोटियां चटनी के साथ एक डिब्बे में भर दी, साथ मे प्लास्टिक की बोतल में छाछ। चल दिया गरीबा अपने नियमित काम पर, पर रास्ते में हर कोई सूरज की बात पूछता है और प्रशंसा करता है जिसे सुनकर उसका मन बल्लियों उछलता है। आज एक और नई सुबह हुई है गरीबा की जिंदगी में।

भैया गरीबा

अरे आओ प्रवीण भैया, अभी सुबह सुबह कैसे याद किया. पूछा गरीबा ने।

आप भूल गये कि आज दिल्ली में नवीन की शादी हो रही है, निमंत्रण पत्र आपको भी तो देकर गया था, प्रवीण ने याद दिलाते हुए कहा।

हां भैया, उसकी शादी का कार्ड रखा है, इच्छा भी है उसकी शादी देखने की, पर इधर मेरा काम छूट जायेगा।

कोई बात नहीं, कभी कभी आराम करना भी चाहिए, अपनी गाङी से चलेंगे, मेरी माँ व बापू हैं तथा मेरी पत्नि, पांचवे होंगे आप, लौटते समय सूरज से भी मिलते आयेंगे।

सूरज का नाम आते ही गरीबा की आंखों में चमक आ गयी। अरी सूरज की मां, मेरी पेंट कमीज तो निकाल दो, आज मैं दिल्ली जाऊंगा, सूरज से मिलने।

लक्ष्मी दौङी हुई आई, प्रवीण को देखते ही, प्रणाम देवर जी, कहते हुए बोली ..सूरज के बापू का यह अचानक दिल्ली जाने का प्रोग्राम कैसे बन गया..

अरी भाभी, आज दिल्ली मे नवीन की शादी है न, सो हम उसी में जा रहे थे तो सोचा कि भैया को भी साथ ले चलें, लौटते में इन्हे सूरज से भी मिलाते लाएंगे।

हाय दैया, यह तो बङी अच्छी बात है देवर जी, जरूर ले जाइये इन्हें. सूरज कैसे रहता है वहां, ये अपनी आंखों से देख लेंगे। बैठो जरा, मैं आपके लिए चाय बनाकर लाती हूं, कम चीनी वाली।

जरूर भाभी, और इन्हें अच्छी तरह से तैयार कर दीजिए, दिल्ली जाना है।

ठीक है प्रवीण भैया, मैं आपको तैयार मिलूंगा।

और कुछ देर बाद चल दिया गरीबा दिल्ली की ओर, कार में बैठकर, एयरकंडीसन वाली कार में।

देख बेटा गरीबा, यह सब किसका समाल है... शिक्षा का। हमारे बच्चों ने अच्छी तरह से शिक्षा ग्रहण की, हमारा समय बदल गया, बुधराम ने समझाते हुए कहा। मानव समाज में शिक्षा का बहुत ही महत्व है, या यों कहिए कि शिक्षा के अभाव में मानव भी पशु तुल्य ही रहेगा। शिक्षा के अभाव में भारत के बहुसंख्य समाज की हो रही दुर्दशा को देख कर महामना फुले ने कहा था – “ विद्या के बिना मति गयी, मति के बिना नीति गयी, नीति के बिना गति गयी, गति के बिना वित्त गया और वित्त के अभाव में शूद्रों का पतन हुआ। यह सब अनर्थ विद्या के अभाव के करण हुआ”।

हां बापू, सही कहा आपने, इसी बात को ध्यान में रख कर ज्योतिबा फुले व उनकी पत्नि सावित्री बाई फुले ने पुणे व सतारा में लङकियों व दलित बच्चों के लिए स्कूल खोले थे, सवर्ण समाज ने खूब विरोध किया था, पर उन्होंने भी हिम्मत नहीं हारी। कहा जाता है कि सावित्री बाई फुले जब स्कूल जाती थी तो उच्च जाति वाले उनपर कीचङ, गोबर आदि फेंक देते थे. इसलिए वे अपने साथ अलग से एक साङी लेकर जाती थी जिससे स्कूल में जाकर गंदी हुई साङी को बदलती थी और तब बच्चों को पढाती थी। झुकी नहीं उन समाज के ठेकेदारों के सामने। भारत की प्रथम महिला शिक्षक होने का श्रेय सावित्री बाई फुले को ही जाता है।

हां प्रवीण सही सच है, ज्योतिबा फुले ने हम गरीबों में शिक्षा की ज्योति जलाई थी जिसे बाबा साहेब अम्बेडकर ने प्रज्वलित कर दिया संविधान में शिक्षा का समान अधिकार देकर अन्यथा हम लोग तो वैसे ही पशुतुल्य जीवन भुगत रहे होते।

हां पापाजी, यह बात तो मैने भी पढी है, सावित्री बाई फुले ने ही सर्वप्रथम प्रारम्भ की थी लङकियों की पढाई, प्रवीण की पत्नि ने भी इस बात को दुहराई जो आगे की सीट पर प्रवीण की बगल में ही बैठी थी।

हां बेटा।

गरीबा आश्चर्य चकित है, कितना ज्ञान है भरा है इस परिवार में। ये चाचाजी भी दिहाङी मजदूरी ही तो करते थे मेरे बापू की तरह पर इनके जैसा ज्ञानी तो आज हमारे गांव में तो क्या आस पास के गावों में नही होगा।

चाचाजी, आपके पास तो दुनिया का सारा ज्ञान है, कहां से पा लिया यह सब, गरीबा ने पूछा आश्यर्य से।

बेटा गरीबा, ये जो पुस्तकें हैं, अखबार हैं, इन्हीं में तो होता है यह सब, लेने वाला होना चाहिए।

चाचाजी, क्या मैं भी ये किताबे पढना सीख सकता हूं, थोङा सा तो जानता हूं अक्षरों को..इच्छा जताई गरीबा ने।

क्यों नही, लगातार प्रेक्टिस करो तो सब कुछ सीख सकते हो। सूरज की कोई पांचवी छठी कक्षा की किताब हो तो उन्हीं को पढना शुरू कर दे, फिर मेरे पास आकर अखबार की मोटी मोटी लाइनें पढा कर, सब कुछ पढना आ जाएगा।

ठीक चाचाजी, मैं भी अब पढना लिखना सीखूंगा।

समाज ने जनसामान्य के जिन मौलिक अधिकारों का हनन किया उनमें शिक्षा का अधिकार प्रमुख है। रामायण की लोककथा के अनुसार राम ने भी शम्बूक ऋषि का वध इसलिए किया कि वह शूद्र होते हुए वेदमंत्रों का उच्चारण कर रहा था व तपस्या कर रहा था। इस ब्यवस्था की शिकार भारतीय नारी भी हुई है क्योंकि उसे भी शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया है। बच्चे की प्रथम गुरु माँ होती है और यदि वही अशिक्षित है तो बच्चे को क्या ज्ञान दे पायेगी।

अशिक्षा तो समस्त बुराईयों व समस्याओं की जङ है । बिना शिक्षा के मनुष्य अपना भला बुरा सोच नहीं पाता है। यहां शिक्षा का मतलब डिग्रियां प्राप्त करने से नहीं है बल्कि एक तरह का ज्ञान प्राप्त करने से है ताकि उसमें भला बुरा सोचने की क्षमता आ सके और एक शिक्षित ब्यक्ति के सामने अपने को हीन ना समझे। जो इंसान अपना भला बुरा नहीं सोच पाता है वह अक्सर परेशान ही रहता है। जैसा कि कबीर ने कहा है:-

लाल लाल सब कोई कहै, सबके पल्लै लाल,

गांठ खोल परख्यौ नहीं, इस बिध रह्यौ कगाल।

लाल पङयौ मैदान में, कीच रह्यौ लिपटाय,

निगुरा ठोकर मार चल्या, पर सुगुरा ने लिया उठाय।

मतलब है कि यदि हीरा गांठ में भी बंधा हो पर उसका ज्ञान नहीं हो या फिर कीचङ में सना पङा हो और अज्ञानी उसे ठोकर मार कर निकल जाय तो ऐसा इंसान कंगाल ही रहेगा।

लो यह नवीन की शादी का स्थान भी आ गया है, यह जो सामने लोग इकट्ठा हैं, यही उसकी बारात लगती है, प्रवीण ने कहा और गाङी को एक ओर खङी करके चल दिये सभी। सामने दिखाई दिया मेहरू चाचा, एकदम फैंसी धोती कुर्ते में और पास ही खङे थे उसकी सत्संग मंडली के पुराने साथी। नवीन की शादी दिल्ली में, कुतुहल का विषय बनी हुई है।

नवीन भी आ गया है, एक सजी धजी कार में बैठकर, आते ही सबको नमो बुद्धाय, जय भीम बोला, मेरी मां व बापू के पैर छूए, गरीबा से हाथ मिलाया और मेरे भी गले लगा। बहुत ही धन्यवाद प्रवीण भैया कि आप आये और साथ में ताऊजी व ताईजी व भाभीजी को भी साथ लाए, नवीन ने बङी ही आत्मीयता से आभार ब्यक्त किया।

नवीन, यह तो हमारा सौभाग्य है कि हम आपके बौद्ध समाज का सानिध्य लाभ लेंगे, प्रवीण ने भी अपने दिल की बात कही।

गरीबा भैया, सुना है आपका बेटा सूरज यहीं आई आई टी में इंजिनियरिंग की पढाई कर रहा है, बहुत ही खुशी हुई यह जान कर। मैं उससे अवश्य मिलूंगा और आगे से आप उसकी बिल्कुल भी चिंता मत करना, मैं हूं ना यहां पर। उससे जब भी मिलो तो मेरा पता जरूर दे देना, यह मेरा कार्ड ही दे देना, एक कार्ड देते हे नवीन बोला।

बङी अच्छी बात नवीन, अब आप ही सम्भालिए यहां उसको। उसके दाखिले का काम प्रवीण भैया ने ही किया है, मैं तो एकदम अनपढ हूं, कुछ कर ही नहीं सकता था, गरीबा ने कहा।

हां रे, प्रवीण भैया तो हैं ही ऐसे, हर किसी की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते हैं,

बारात अब चल दी है, सबसे आगे बैंड बाजे के साथ एक खुली गाङी में भगवान् बुद्ध व बाबा साहेब के बङे से चित्र लगी गाङी में नवीन बैठा है। बारात में ना कोई धमाचौकङी मची है, ना ही आतिशबाजी, बङी शांति के साथ पहुंच गयी विवाह स्थल के द्वार जहां स्वागत के लिए खङे हैं वर पक्ष के लोग। नवीन को गाङी से उतारा गया,दो लोगों ने भगवान् बुद्ध व बाबा साहेब के चित्रों को भी सम्मान के साथ लिया और सभी का फूलों के साथ स्वागत उपरांत अंदर प्रवेश कराया गया। सभी लोग यथास्थान बैठ गये जहां शीतल पेय व स्नेक्स आदि से आवभगत की जाने लगी। चंद क्षणों में दुल्हन को भी लाया गया और नवीन के साथ मंच पर पहुंची जहां पांच बौद्ध भंते पहले से ही विराजमान थे।

वर वधु ने सर्वप्रथम भगवान् बुद्ध व बाबा साहेब के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर उन्हे नमन किया, फिर भंतेगण को नमन कर वहां बैठ गये। अब वधु के माता पिता, व उसके परिवार के लोग भी वहां बैठे, इधर से नवीन के माता पिता व परिवार के लोग मंच पर आसीन हुए। बौद्ध समाज के गणमान्य लोग भी वहां बैठे।

प्रवीण भैया,, आप भी यहां ऊपर आइये ना और ताऊजी, ताईजी व भाभीजी को भी लाइये, नवीन ने वहीं से आवाज दी। और ये लोग भी वहां बैठे। सभी ने भगवान् बुद्ध व बाबा साहेब को पुष्प अर्पित किये और भंतेगण को नमन कर शांति से बैठ गये। विवाह की प्रक्रिया आरम्भ हुई।

सर्वप्रथम वर वधु ने एक दूसरे को पुष्पमाला पहनाई और भंतेगण ने बुद्ध नमन के बाद त्रिशरण व पंचशील का पाठ आरम्भ किया और उपस्थित लोग भी अनुशरण करने लगे। चूंकि हम गांव वालों के अलावा अधिकतर लोग बौद्ध उपासक ही हैं, सो त्रिशरण व पंचशील की ध्वनि गूंज उठी मंडप में, एक विशेष प्रकार की शांति छा गयी।

भंतेगण ने त्रिशरण व पंचशील के बाद बुद्ध वंदना, धम्म वंदना व संघ वंदना की, परित्राण पाठ का गायन किया और शादि सम्पन्न कराई। लोगों ने फिर वर वधु को आशीर्वाद दिया और उपहार दिये। भंतेगण को चीवर दान और भोजन दान दिया और तदुपरांत बाराती घराती सबने मिलकर खाना खाया। मात्र दो घंटे में विवाह का कार्यक्रम पूरा हो गया। हिंदुओं की शादी में कितनी ही रश्में की जाती हैं, पंडित क्या मंत्र बोलते हैं, किसी को कुछ समझ में नहीं आता है और आजकल तो शादि फेरों से कोई मतलब नहीं, जैसे ही मंडप के अंदर दाखिल हुए नहीं कि टूट पङते हैं खाने पर। और वैसे भी काफी देर हो चुकी होती है, आधी रात बीत जाती है वधु के द्वार तक पहुंचने में, दो दो किलोमीटर तक बारात का नाचते, उधम मचाते हुए चलना और फिर खाने पर टूट पङना स्वाभाविक है। पंडित से शादि की तिथि निकलवाते हैं और पंडित भी बङे ही नाटकीय ढंग से कोई तिथि निकालता है अच्छी दक्षिणा लेने के बाद, पर शादी होते होते शुभ मुहुर्त तो क्या वह शुभदिन ही निकल जाता है, शादी की रश्म दूसरे ही दिन पूरी हो पाती है। लेकिन माना यही जायेगा कि शादि उसी दिन हुई जो निमंत्रण-पत्र में है।

अच्छा नवीन, शादी मुबारक हो, बङा मजा आया यह सब देख कर, अब हम चलते हैं, प्रवीण ने कहा।

बहुत ही धन्यवाद, भैया... आप लोग जो यहां पधार कर हमें अनुग्रहीत किया, कहते हुए नवीन ने बुधराम ताऊजी व ताईजी के पैर छुए, मेहर सिंह ने भी करबद्ध हो बिदा किया।

गरीबा भैया....अब हम सूरज के पास चलते हैं, उससे मिलते हुए वापिस चलेंगे, कहते हुए चल दिए वहां से।

हां प्रवीण, उससे मिलकर मेरे दिल को तसल्ली हो जाएगी, चहकते हुए बोला गरीबा।

रविवार का दिन है, सो सूरज अब हाँस्टल में ही होना चाहिए, सो पहुंच गये सीधे वहीं पर। चोकीदार से कहकर संदेश भिजवाया तो सूरज दोङता हुआ आया, आते ही सबके पैर छूए और गरीबा ने उसे गले से लगा लिया। चंद दिनों में ही सूरज में अप्रत्याशित परिवर्तनदिखाई दे रहा है।

कैसा है बेटा... मन तो लग रहा है ना यहां तेरा, पूछा गरीबा ने।

हां बापू, बहुत अच्छा है यहां सब कुछ, कहते हुए अपने कक्ष की और ले गया। सूरज के और साथी भी वहां आगये।

मेरे पिताजी हैं, और से हैं मेरे चाचा चाची और दादाजी व दादीजी, कहते हुए सूरज ने अपने दोस्तों को हमारा परिचय दिया।

कैसे आना हुआ यहां आज.. पूछा सूरज ने।

आज यहां नवीन, जो अपने ही गांव का लङका था और अब यहीं रहने लग गया है, उसकी शादी थी, उसी में यहां आये थे और इसी बहाने तुमसे भी मिलने आ गये, बताया प्रवीण ने।

यह ले नवीन का कार्ड, कोई भी बात हो, उससे मिल लेना, उसने स्वयं ही पूछा था तुम्हारे बारे में, वह तुम से मिलने अवश्य आयेगा।

ठीक है चाचाजी,

और माँ कैसी है बापू.. याद तो बहुत आती है आप लोगों की, पर पढाई व साथियों के साथ समय बीत जाता है।

ठीक है तुम्हारी माँ, पर दिन रात तुम्हारी ही रट लगाए रहती है। अब जाकर बताऊंगा तो उसे काफी तसल्ली होगी। तू कोई चिंता नहीं कर, मन लगाकर पढाई कर, धीरे धीरे सब ठीक हो जाएगा, हौसला बढाते हुए कहा गरीबा ने दो हजार रुपये रख दिए सूरज के हाथ पर।

नहीं बापू, मुझे इनकी कोई जरूरत नहीं है, यहां सब कुछ मिल ही जाता है, बाहर जाने का तो समय ही नहीं है हमारे पास।

बेटा... तू एक मोबाइल फोन लेले, कभी कभी अपने हाल चाल बता दिया कर और अपनी माँ से दो बात कर लिया कर।

बापू, बाहर फोन करने की सुविधा यहां है, और सरकार से यह जो लैपटाँप जो मिल गया है, सो मोबाइल फोन की कोई आवश्यकता नहीं है मुझे। हां आप के पास हो तो अच्छा हो। चाचाजी, आप एक मोबाइल फोन दिला दीजिए बापू को, सीधे इनसे बात कर लिया करूंगा, सूरज ने प्रवीण से कहा और रुपये वापिस गरीबा के हाथ में थमा दिए।

देख गरीबा, ऐसी होती है लायक संतान, रुपये हाथ में आने पर कौन बच्चा है जो लेने से मना कर देगा, उल्टे छीन कर ले जाते हैं, माँ बाप की क्या मजबूरियां होती हैं, कोई मतलब नहीं रखते आज कल के बच्चे,.. गम्भीरता से कहा बुधराम ने।

हां चाचाजी, सब आप ही का आशीर्वाद है, यह कुछ बन जाय, यही आस लगाये बैठे हैं हम, कुछ भावुक होते हुए कहा गरीबा ने।

विश्वास रखो, सब कुछ ठीक ही होगा, बस कुछ ही दिनों की परेशानी है, हिम्मत रख, कहते हुए प्रवीण की ओर, चलो अब चलते हैं।

हां बापू,

सूरज व उसके साथियों को शुभाशीर्वाद देते हुए चल दिए वहां से।

घर पहुंचने पर

अरी सूरज की मां, तेरा बेटा तो एकदम बदल गया है, एक साफ सुथरा बिस्तर, बगल में मेज कुर्सी, उसपर कम्यूटर, साथ में सामान रखने के लिए एक अलमारी। और कमरा भी क्या सुंदर, एकदम ठंडा, बताया कि उसमें एसी लगा लगा है। क्या था उसके पास यहां, एक ढीली सी चारपाई, उस पर बिछी गुदङी और बगल में कुछ ईंटो पर रखा एक लकङी का फट्टा कापी किताब रखने के लिए।

क्या होता है जी असी..

बताते हैं वह कमरा ठंडा करने की मशीन होती है। बिल्कुल गर्मी नहीं लग रही थी वहां।

बङे सपने देखने लगी हैं गरीबा, लिछमी की आंखें, जो भी कोई मिलता है, सूरज की ही बात करता है जिन्हें सुनकर इनके मन को बङी तसल्ली मिलती है।

अरी लिछमी, तेरा बेटा तो बङे आराम से रह रहा है दिल्ली में, प्रवीण की मां बता रही थी, एक पङोसिन बोली।

हां जीजी, सूरज के बापू भी मिलकर आयें हैं उससे, रहता तो आराम से है पर पढाई बहुत करनी पङ रही है, ऐसा बता रहे हैं।

हां बहन, इस पढाई के कारण तो पहुंच गया सूरज दिल्ली, हमारे ये कपूत देखो, दिन भर मोबाइल तो हाथ में लिए रहेंगे और हांडते फिरते हैं गलियों में। अच्छा है,जीवन संवार लेगा अपना भी और साथ में तुम्हारा भी।

हां बहिन, लिछमी ने पूत तो एक ही जना पर हीरा पैदा किया है, सारे गांव में यही बात चल रही है, और तेरी यह लाडली भी देखो, कैसे खोई हुई है अपनी किताबों में, रत्ना जो एक तरफ बैठी अपनी पढाई में लीन थी को देखकर दूसरी पङोसन भी बोली।

हां बहिन, यह रत्नी भी लगी ही रहती है अपनी पढाई में, पर बीच बीच में घर का काम भी बहुत कर लेती है, सारे घर की सफाई तो यही करती है, मेरे मना करने पर भी भैंस का ठान बुहार देती है, गोबर भी उठा देती है।

हां बहिन हम भी देखती रहती हैं इसे यह सब करते हुए, और एक तरफ हमारी लाडो है जो गोबर को देखते ही नाक बंद कर लेती है। अच्छा है पराए घर जाएंगी तो आराम पाएंगी.. बोली कुछ पङोसिन।

क्यों ताई...क्या मैं नौकरी नहीं कर सकती..भैंस का दूध घी खाते हैं तो सेवा तो करनी ही पङेगी... और फिर यह माँ कितना करेगी, खेत में जाएगी, इनके लिए चारा लाएगी, खाना बनाती है, दही मथती है, इस लिए कुछ सहायता कर देती हूं, मना कर देंगी तो नहीं करूंगी... पङोसिनों की बात कान में पङने पर हंसती हुई बोली रत्ना।

और तू जरूर मेरी बात मान लेगी.. फिर पङोसिन ओर मुखातिब हो कर ....हम तो इन पर ही आस लगाए बैठे हैं बहना, प्रवीण देवरजी की तरह सूरज भी हमारा बुढापा संवार दे।

चिंता ना कर बहन, तेरे तो दोनों बच्चे हीरा हैं, इनमें कोई खोट आ ही नहीं सकता, अच्छा बहन, चलती हूं, बहुत काम पङा है करने को, कहते हुए पङोसन लग गयी अपने काम में।

अरी सूरज की मां, लखमी भैया की तबियत बहुत ज्यादा खराब है, उसे दिल्ली ले जा रहे हैं, उसकी घरवाली व छोटा भाई साथ जा रहे हैं।

उसने तो दारू पी पीकर अपनी जिंदगी बर्बाद कर ली है, इतनी अच्छी नौकरी है, लङकियां शादी लायक हो रही हैं, बङी लङकी ने तो बारहवीं पास करते ही पढाई छोङ दी है पर घर के काम में लगी रहती है। लङका भी 13-14 साल का हो गया है, मोबाइल हाथ में लिए घूमता रहता है सदा, माँ की बात सुनता नहीं है और बाबूजी कुछ ध्यान देते नहीं हैं, एक सांस में बोल गयी लिछमी।

हां सूरज की माँ, बच्चों पर तो सदा निगाह रखनी पङती है, कच्ची पौध होती हैं, पता नही कौन सी बुरी हवा लग जाय और उनका विकास रुक जाय, गहरी सांस लेते हुए बोला गरीबा।

पांच पांच बच्चे पैदा कर लिए पर उन पर ध्यान बिल्कुल भी नहीं दिया। छोटी लङकी तो 9-10 साल की ही है। अच्छा होता एक दो लङकियों की शादी निपटा देते, बाबूजी को कुछ होगया तो क्या करेगी बबुवाइन बेचारी।

होगा क्या, सरकार से पेंशन तो मिलेगी ही, हो सकता है बङी लङकी, जो बारहवीं पास है, को कोई नौकरी मिल जाय। पर अच्छा हो लखमी भैया ठीक हो जायं, अभी जरूरत है उसकी परिवार को। पर अजीब बात है कि पढा लिखा ब्यक्ति भी, जो सरकारी नौकरी कर रहा है, इस तरह से बर्बाद हो रहा है। ठीक ही कहा करते हैं प्रवीण भैया कि पैसा कमाना जितना कठिन है उससे ज्यादा कठिन है उसे खर्च करना। पैसे को इस तरह से खर्च करना चाहिए कि उससे अधिक से अधिक लाभ हो, खाने पीने पर भी खर्च करना है तो यह देखना चाहिए कि वह खाना हमारे शरीर को कितना फायदा करता है, शराब, बीङी तम्बाकू आदि पर खर्च करना तो अपने आप को बर्बाद करना होता है जैसा कि लखमी भैया करते हैं।

दूसरे दिन

सूरज की माँ, अभी प्रवीण भैया मिले थे, दिल्ली से लौटकर आये हैं, बता रहे हैं कि लखमी की हालत काफी गम्भीर है, उसका लीवर तो पूरा गल ही चुका है, दोनों किडनियां भी खराब हैं। डाक्टर करे भी तो क्या, जीने की आस नहीं लगती है।

परिवार की हालत देखकर मेरा तो कलेजा फटा जा रहा है सूरज के बापू, लिछमी बोली।

अब जो होना है वही होगा, कोई कर भी तो क्या सकता है, गरीबा ने सान्त्वना देते हुए कहा।

थोङी ही देर बाद एक एम्बुलेंस लखमी के घर के सामने आकर रुकी तो लखमी की घरवाली दहाङें मारती हुई नीचे उतरी, देखते ही घर में क्रंदन मच गया। बच्चियां बिलखती हुई लिपट गयी एक दूसरी से, बूढी मां जो आंगन में बैठी बच्चों को सहारा दे रही थी, वहीं पसर गयी, हाय मेरा लाल, यह तू ने क्या किया।

बूढा बाप भी वहीं बुत बन गया। पास की औरतों ने सभी को सम्भालने की कौशिश की पर जो तूफान आया है वह तो अपनी नियति के अनुसार ही शांत होगा।

लोगों ने लखमी के मृत शरीर को एम्बुलेंस से उतार कर आंगन में रखा और दाह संस्कार की तैयारी शुरु होगयी, ,..जल गयो तेल सुकङ गयी बाती तो ले चल, ले चल हो रही राम,.. फिर तो जल्दी मच जाती है मृत शरीर के अंतिम संस्कार की क्योंकि जितनी ही देर तक लाश घर में रहेगी, परिवार उतना ही परेशान रहेगा।

निपट गया लक्षमी का प्रकरण। मन लगा कर पढाई की थी, बीए पास की थी और सरकारी नौकरी मिल गयी थी और उङ गये थे सपनों की दुनिया में। शादि की और खो गये मौज बहारों के झोंकों में, भूल गये सब कुछ, रिश्ते नाते बेमानी हो गये, माँ बाप, भाई बहिन सब बेगाने हो गये और इसी गफलत में जिंदगी की गाङी ऊबङ खाबङ रास्तों में ऐसी फंसी कि कभी सीधा रास्ता पकङ ही नहीं पाई।

त्रिंग त्रिंग त्रिंग....

सूरज की माँ, देखो मोबाइल बज रहा है, लाना तो।

अरे यह तो अपने सूरज का फोन है, हां हैलो बेटा, कैसे हो,,

मैं ठीक हूं बापू, पर एक खुश खबरी देनी है।

हां तो बोल बेटा, क्या खुशखबरी है,,

बापू, आज हमारे काँलेज में कुछ कम्पनियां आई थी इंजिनियरों का चयन करने। कुछ लङकों का चयन हुआ और एक कम्पनी ने मुझे भी सलेक्ट किया पर विशेष बात यह है कि सबसे ज्यादा पे पर मेरा ही सलेक्शन हुआ है। बताओ तो मुझे कितनी तनख्वा मिलेगी,, मैं क्या बताऊं बेटे, पर 25-30 हजार तो मिल जाएगा ना।

ना बापू ना, मुझे तो एक साल का पैकेज मिला है पूरे 48 लाख का अर्थात एक महिने के चार लाख रुपये।

क्या कहा .. एक महिने के चार लाख रुपये,,

हां गरीबा हां, अपने सूरज का चयन 48 लाख के सालाना पैकेज पर ही हुआ है, और दो लाख रुपया अलग से पहले ही दे दिया है ड्यूटि पर जाने की तैयारी के लिए. बुधराम तुरंत ही आ गये यह शुभ सूचना देने।

गरीबा व लिछमी ने तुरंत बुधराम के पैर छूए। सूरज बेटा, देखो, दादाजी भी आये हैं तुम्हारी यही खबर सुनाने, ले इनका भी आशीर्वाद ले ले।

प्रणाम दादाजी।

खुख रहो बेटे और बहुत बधाई तुम्हारी इस उपलब्धि के लिए।

दादाजी यह तो आपके व प्रवीण चाचाजी के मार्ग दर्शन व आशीर्वाद से ही मिला है।

बेटे हमारा आशीर्वाद तो हर किसी के साथ होता है पर हर कोई सूरज नहीं बन जाता है। ऐसे ही जीवन में आगे बढते रहो, हमारी यही कामना सदा रहेगी।

मेरे पास अभी प्रवीण का फोन आया और उसी ने सारी बात बताई। सूरज ने प्रवीण को सारी बात बताई और उसी की सलाह पर सूरज ने यह नौकरी स्वीकार कर ली। कम्पनी ने दो लाख रूपया पेशगी भी दिया है, जैसे ही सूरज की परीक्षा खत्म होगी, तुरंत ड्यूटी पर चला जाएगा।

तुरंत ही चला जाएगा, हमारे साथ कुछ दिन भी नहीं रहेगा, पूछा गरीबा ने।

अब आपके साथ नहीं रह पाएगा, हां, तुम लोग ही चाहो तो उसके साथ रह सकते हो।

नहीं चाचाजी, हम लोग यह गांव, आप लोगों को छोङ कर कैसे जा सकते हैं।

तो फिर रहो यहां आराम से, ना काम करने की चिंता और ना ही किसी बात की परेशानी। जी चाहे तब सूरज से मिलने चले जाओ, घूमो, फिरो और आ जाओ। हम भी तो यहां अकेले ही रह रहे हैं।

हां चाचाजी, मन को तो किसी न किसी तरह तसल्ली देनी ही पङेगी।

देखते ही देखते गांव के लोग इकट्ठा होने लगे, खबर पूरे गांव में आग की तरह फैल गयी। हर कोई आश्चर्य चकित है, गरीबा के छोरे को चार लाख महिना की नौकरी मिल गयी है। उधर गांव की औरतों ने लिछमी को घेर लिया है, हे जीजी, हे बहन, तेरे सूरज ने तो कमाल कर दिया री. कब आ रहा है गांव, देखने की बङी इच्छा हो रही है।

ऐसे थोङे ही आएगा सूरज गांव में, बच्चे ने गांव का नाम रोशन किया है, गाजे बाजे के साथ लाया जाएगा और बङी धूम धाम से स्वागत सत्कार किया जाएगा और उस आयोजन के मुख्य अतिथि होंगे प्रोफेसर प्रवीण कुमार, गांव के मुखिया ने वहां आते ही ऐलान कर दिया।

सभी उपस्थित लोगों ने जोर का जयकारा लगाया गरीब दास भैया की जय, प्रवीण सर की जय, सूरज बेटा जिंदाबाद.

गरीबा की तिजौरी में यह बेसकीमती हीरा बंद पङा था, तिजौरी खुल नहीं पा रही थी पर गरीबा की तिजौरी आज खुल गयी है।

